विशद

निर्वाण भक्ति विधान

माण्डला

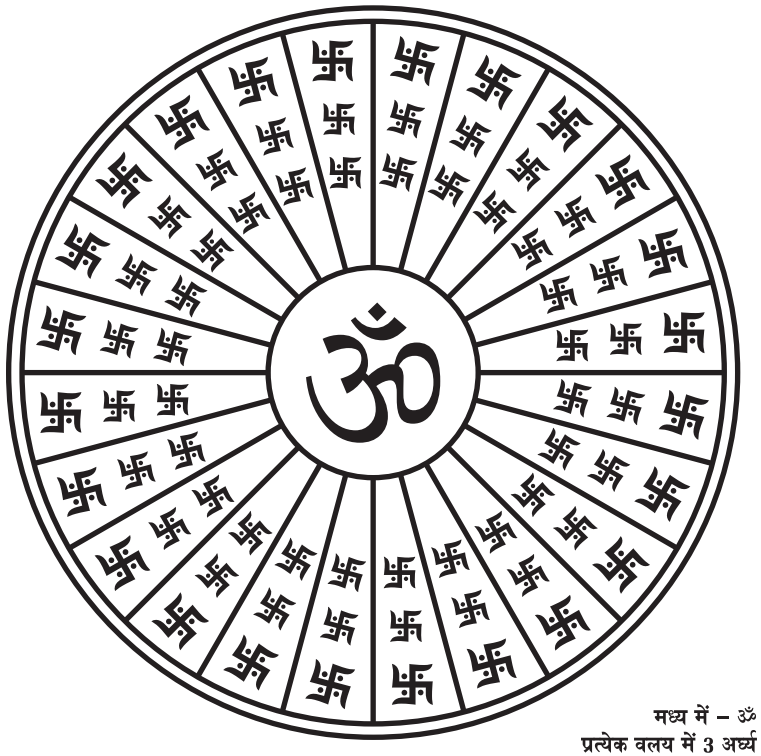

मध्य में – ॐ
प्रत्येक वलय में 3 अर्घ्य
कुल वलय में 72 अर्घ्य

रचयिता :
प. पू. साहित्य रत्नाकर आचार्य
श्री 108 विशदसागर जी महाराज

कृति	:	**विशद श्री निर्वाण भक्ति विधान**
कृतिकार	:	प. पू. साहित्य रत्नाकर, क्षमामूर्ति आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज
संस्करण	:	प्रथम-2016 ' प्रतियाँ : 1000
संकलन	:	मुनि श्री 108 विशालसागरजी महाराज
सहयोगी	:	क्षुल्लक श्री 105 विसोमसागरजी महाराज क्षु. श्री भक्तिभारती माताजी, क्षु. श्री वात्सल्यभारती माताजी
संपादन	:	ब्र. ज्योति दीदी (9829076085) ब्र. आस्था दीदी, (9953877155) ब्र. सपना दीदी (9829127533)
संयोजन	:	ब्र. सोनू दीदी, ब्र. आरती दीदी
प्राप्ति स्थल	:	1. जैन सरोवर समिति, निर्मलकुमार गोधा, 2142, निर्मल निकुंज, रेडियो मार्केट मनिहारों का रास्ता, जयपुर मो. : 9414812008 2. श्री राजेशकुमार जैन ठेकेदार ए-107, बुध विहार, अलवर, मो. : 9414016566 3. विशद साहित्य केन्द्र श्री दिगम्बर जैन मंदिर कुआँ वाला जैनपुरी रेवाड़ी (हरियाणा), 9812502062, 09416888879 4. विशद साहित्य केन्द्र, हरीश जैन जय अरिहन्त ट्रेडर्स, 6561 नेहरू गली नियर लाल बत्ती चौक, गांधी नगर, दिल्ली मो. 09818115971, 5. सुरेश सेठी, 958 शांतिनगर रोड़ नं. 3 दुर्गापुरी जयपुर (राज.) 9413336017
मूल्य	:	75/- रु. मात्र

श्री प्रेमचन्द जी ओमप्रकाश जी मनीष कुमार जी अश्वनी कुमारी जी जैन आंडरा, टोंक मो.: 9460257026	-: अर्थ सौजन्य :- श्री मोहनलाल मदनलाल छाछुनिया टोंक	श्री रतन लाल अशोक कुमार काला आलोक कुमार विनय कुमार अजित कुमार गौरव, निमित्त, दिपांशु (जैन नगर, टोंक)

मुद्रक : पारस प्रकाशन, शाहदरा, दिल्ली. फोन नं. : 09811374961, 09818394651
09811363613, E-mail : pkjainparas@gmail.com, kavijain1982@gmail.com

24 तीर्थंकर निर्वाण भक्ति पूजा विधान

''निर्वाण भक्ति करते रहने से सुलभ हो जाती है निर्वाण पद की प्राप्ति''

तीर्थंकर की भक्ति मनोयोग से करने से जीवन में अद्‌भुत शक्ति की प्राप्ति होती है भक्ति से शक्ति, शक्ति से युक्ति और युक्ति से मुक्ति प्राप्त होती है। अत: जीवन की नैय्या को भक्ति रूपी डोरी से जोड़ दो, क्योंकि भक्ति ही भगवानकी सच्ची राह है। भक्त की भक्ति ही भगवान से मिलती है।

यहाँ प्रस्तुत पुस्तक में 24 तीर्थंकरों के पंचकल्याणकों की 24 भक्तियों का संस्कृत में प्रस्तुतीकरण किया जा रहा है। अभी तक जिनवाणी में सिर्फ महावीर भगवान की ही निर्वाण भक्ति उपलब्ध हो पा रही थी शेष 23 तीर्थंकरों की निर्वाण भक्तियों का लोप था प्रथम बार आ. श्री वासुपूज्य सागर जी के संघ ने 24 तीर्थंकरों की निर्वाण भक्ति संस्कृत में लिखने का पीड़ा उठाया उसकी एक प्रति हमे प्राप्त हुई पढ़कर हमने अपने आचार्य श्री विशद सागर जी से कहा गुरुवर जिस दिन जिस भगवान का मोक्ष कल्याणक होता है उस दिन उन्हीं तीर्थंकर भगवान की निर्वाण भक्ति पढ़ी जानी चाहिए अभी तक सिर्फ महावीर निर्वाण भक्ति थी लेकिन अब 24 तीर्थंकर की निर्वाण भक्ति भी उपलब्ध हो गई है इसका प्रचार होना चाहिए। प्रस्तुत 24 तीर्थंकर निर्वाण भक्ति की भाषा थोड़ी जटिल है।

परमपूज्य आचार्य श्री पूज्य पाद जी कृत महावीर स्वामी की निर्वाण भक्ति को आधार बनाकर अन्य 23 तीर्थंकरों की निर्वाण भक्ति बनाई गई है। त्यागी वृत्तियों को तो इन 24 तीर्थंकर पंचकल्याणक भक्तियों को करने का लाभ मिल ही रहा है साथ ही श्रावक समुदाय भी इन भक्तियों से लाभान्वित हो इस हेतु यहाँ इन भक्तियों को वृहद् रूप देकर 24 तीर्थंकर निर्वाण भक्ति पूजा विधान की रचना आचार्य श्री विशद सागर जी महाराज ने की है।

श्री सम्मेद शिखर मण्डले की भव्य रचना कर यह निर्वाण भक्ति विधान भक्ति भाव से करना चाहिए यदि विधान नहीं करना तो जिस दिन जिस भगवान का कल्याणक हो उस दिन उन्हीं भगवान की निर्वाण भक्ति के पश्चात पूजा करके निर्वाण काण्ड बोल कर निर्वाण क्षेत्र का अर्घ्य चढ़ाना चाहिए। **प. पू. आचार्य श्री विशद सागर जी** महाराज अब तक 150 प्रकार के पूजन विधानों की रचना कर चुके हैं। सभी विधान एक से बढ़कर एक है आशा है। प्रभु भक्ति में अधिकाधिक संख्या में आप इन विधानों को करके पुण्यार्जन करेंगे।

–मुनि विशाल सागर

मूलनायक सहित समुच्चय पूजन

(स्थापना)

तीर्थंकर कल्याणक धारी, तथा देव नव कहे महान्।
देव-शास्त्र--गुरु हैं उपकारी, करने वाले जग कल्याण।।
मुक्ती पाए जहाँ जिनेश्वर, पावन तीर्थ क्षेत्र निर्वाण।
विद्यमान तीर्थंकर आदि, पूज्य हुए जो जगत प्रधान।।
मोक्ष मार्ग दिखलाने वाला, पावन वीतराग विज्ञान।
विशद हृदय के सिंहासन पर, करते भाव सहित आह्वान।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक .... सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञान! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(शम्भू छन्द)

जल पिया अनादी से हमने, पर प्यास बुझा न पाए हैं।
हे नाथ! आपके चरण शरण, अब नीर चढ़ाने लाए हैं।।
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक.....सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल रही कषायों की अग्नि, हम उससे सतत सताए हैं।
अब नील गिरि का चंदन ले, संताप नशाने आए हैं।।
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक.....सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

गुण शाश्वत मम अक्षय अखण्ड, वह गुण प्रगटाने आए हैं।
निज शक्ति प्रकट करने अक्षत, यह आज चढ़ाने लाए हैं।।

जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक.....सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्पों से सुरभी पाने का, असफल प्रयास करते आए।
अब निज अनुभूति हेतु प्रभु, यह सुरभित पुष्प यहाँ लाए।।
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक.....सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

निज गुण हैं व्यंजन सरस श्रेष्ठ, उनकी हम सुधि बिसराए हैं।
अब क्षुधा रोग हो शांत विशद, नैवेद्य चढ़ाने लाए हैं।।
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक.....सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञाता दृष्टा स्वभाव मेरा, हम भूल उसे पछताए हैं।
पर्याय दृष्टि में अटक रहे, न निज स्वरूप प्रगटाए हैं।।
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक.....सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

जो गुण सिद्धों ने पाए हैं, उनकी शक्ती हम पाए हैं।
अभिव्यक्ति नहीं कर पाए अतः, भवसागर में भटकाए हैं।।
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक.....सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो अष्टकर्मविध्वंसनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल उत्तम से भी उत्तम शुभ, शिवफल हे नाथ ना पाए हैं।
कर्मोंकृत फल शुभ अशुभ मिला, भव सिन्धु में गोते खाए हैं॥
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी॥8॥

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक.....सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

पद है अनर्घ मेरा अनुपम, अब तक यह जान न पाए हैं।
भटकाते भाव विभाव जहाँ, वह भाव बनाते आए हैं॥
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी॥9॥

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक.....सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– प्रासुक करके नीर यह, देने जल की धार।
लाए हैं हम भाव से, मिटे भ्रमण संसार॥

शान्तये शांतिधारा...

दोहा– पुष्पों से पुष्पाञ्जली, करते हैं हम आज।
सुख-शांती सौभाग्यमय, होवे सकल समाज॥

पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्...

पंच कल्याणक के अर्घ्य

तीर्थंकर पद के धनी, पाएँ गर्भ कल्याण।
अर्चा करें जो भाव से पावें निज स्थान॥1॥

ॐ ह्रीं गर्भकल्याणकप्राप्त मूलनायक....सहित सर्व जिनेश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महिमा जन्म कल्याण की, होती अपरम्पार।
पूजा कर सुर नर मुनी, करें आत्म उद्धार॥2॥

ॐ ह्रीं जन्मकल्याणकप्राप्त मूलनायक....सहित सर्व जिनेश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तप कल्याणक प्राप्त कर, करें साधना घोर।
कर्म काठ को नाशकर, बढ़ें मुक्ति की ओर॥3॥

ॐ ह्रीं तपकल्याणकप्राप्त मूलनायक....सहित सर्व जिनेश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रगटाते निज ध्यान कर, जिनवर केवलज्ञान।
स्व-पर उपकारी बनें, तीर्थंकर भगवान॥4॥

ॐ ह्रीं ज्ञानकल्याणकप्राप्त मूलनायक....सहित सर्व जिनेश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आठों कर्म विनाश कर, पाते पद निर्वाण।
भव्य जीव इस लोक में, करें विशद गुणगान॥5॥

ॐ ह्रीं मोक्षकल्याणकप्राप्त मूलनायक....सहित सर्व जिनेश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा– तीर्थंकर नव देवता, तीर्थ क्षेत्र निर्वाण।
देव शास्त्र गुरुदेव का, करते हम गुणगान॥

(शम्भू छन्द)

गुण अनन्त हैं तीर्थंकर के, महिमा का कोई पार नहीं।
तीन लोकवर्ती जीवों में, और ना मिलते अन्य कहीं॥
विंशति कोड़ा-कोड़ी सागर, कल्प काल का समय कहा।
उत्सर्पण अरु अवसर्पिण यह, कल्पकाल दो रूप रहा॥1॥
रहे विभाजित छह भेदों में, यहाँ कहे जो दोनों काल।
भरतैरावत द्वय क्षेत्रों में, कालचक्र यह चले त्रिकाल॥
चौथे काल में तीर्थंकर जिन, पाते हैं पाँचों कल्याण।
चौबिस तीर्थंकर होते हैं, जो पाते हैं पद निर्वाण॥2॥
वृषभनाथ से महावीर तक, वर्तमान के जिन चौबीस।
जिनकी गुण महिमा जग गाए, हम भी चरण झुकाते शीश॥
अन्य क्षेत्र सब रहे अवस्थित, हों विदेह में बीस जिनेश।
एक सौ साठ भी हो सकते हैं, चतुर्थकाल यहाँ होय विशेष॥3॥
अर्हन्तों के यश का गौरव, सारा जग यह गाता है।
सिद्ध शिला पर सिद्ध प्रभु को, अपने उर से ध्याता है॥

आचार्योपाध्याय सर्व साधु हैं, शुभ रत्नत्रय के धारी।
जैनधर्म जिन चैत्य जिनालय, जिन आगम जग उपकारी।।4।।
प्रभु जहाँ कल्याणक पाते, वह भूमि होती पावन।
वस्तु स्वभाव धर्म रत्नत्रय, कहा लोक में मनभावन।।
गुणवानों के गुण चिंतन से, गुण का होता शीघ्र विकाश।
तीन लोक में पुण्य पताका, यश का होता शीघ्र प्रकाश।।5।।
वस्तु तत्त्व जानने वाला, भेद ज्ञान प्रगटाता है।
द्वादश अनुप्रेक्षा का चिन्तन, शुभ वैरागय जगाता है।।
यह संसार असार बताया, इसमें कुछ भी नित्य नहीं।
शाश्वत सुख को जग में खोजा, किन्तु पाया नहीं कहीं।।6।।
पुण्य पाप का खेल निराला, जो सुख-दुःख का दाता है।
और किसी की बात कहें क्या, तन न साथ निभाता है।।
गुप्ति समिति धर्मादि का, पाना अतिशय कठिन रहा।
संवर और निर्जरा करना, जग में दुर्लभ काम कहा।।7।।
सम्यक् श्रद्धा पाना दुर्लभ, दुर्लभ होता सम्यक् ज्ञान।
संयम धारण करना दुर्लभ, दुर्लभ होता करना ध्यान।।
तीर्थंकर पद पाना दुर्लभ, तीन लोक में रहा महान्।
विशद भाव से नाम आपका, करते हैं हम नित गुणगान।।8।।
शरणागत के सखा आप हो, हरने वाले उनके पाप।
जो भी ध्याय भक्ति भाव से, मिट जाए भव का संताप।।
इस जग के दुःख हरने वाले, भक्तों के तुम हो भगवान।
जब तक जीवन रहे हमारा, करते रहें आपका ध्यान।।9।।

दोहा– नेता मुक्ती मार्ग के, तीन लोक के नाथ।
शिवपद पाने नाथ हम, चरण झुकाते माथ।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक.....सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो अनर्घपदप्राप्त्ये जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– हृदय विराजो आन के, मूलनायक भगवान।
मुक्ती पाने के लिए, करते हम गुणगान।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।।

तीर्थंकर निर्वाण क्षेत्र पूजा

(स्थापना)

आदिनाथ जी अष्टापद से, वासुपूज्य चम्पापुर धाम।
नेमिनाथ ऊर्जयन्त गिरी अरु, महावीर पावापुर ग्राम।।
गिरि सम्मेद शिखर से मुक्ती, पाए जिन तीर्थंकर बीस।
तीर्थंकर निर्वाण भूमियों, को हम झुका रहे हैं शीश।।
तीन लोकवर्ती जीवों से, जो त्रिकाल हैं पूज्य महान्।
विशद भाव से वंदन करके, उर में करते हैं आह्वान।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखरादि तीर्थंकर निर्वाण क्षेत्र असंख्यात सिद्ध परमेष्ठिन् अत्र अवतर-अवतर संवोषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम् सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

(शम्भू छंद)

जग की माया में फंसकर कई, जीवन व्यर्थ गवाएँ हैं।
श्री जिनेन्द्र वाणी का अमृत, ग्रहण नहीं कर पाए हैं।।
जन्म मृत्यु का रोग मिटे हम, अमृत नीर चढ़ाते हैं।
निर्वाण भूमियाँ हैं पावन, हम सादर शीश झुकाते हैं।।1।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखरादि तीर्थंकर निर्वाण क्षेत्र असंख्यात सिद्ध परमेष्ठिने जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चिंता ने चिता बना डाला, हम इससे बहुत सताए हैं।
चिंतन से चिंता क्षय होवे, संताप नशाने आए हैं।।
संसार ताप मिट जाए आज, यह चंदन चरण चढ़ाते हैं।
निर्वाण भूमियाँ हैं पावन, हम सादर शीश झुकाते हैं।।2।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखरादि तीर्थंकर निर्वाण क्षेत्र असंख्यात सिद्ध परमेष्ठिने संसार ताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षय स्वभाव है आतम का, हम भूल उसे पछताए हैं।
हमने अनादि से पाया न, अब उसको पाने आए हैं।।
अक्षय पद मिल जाए हमें, यह अक्षत श्रेष्ठ चढ़ाते हैं।
निर्वाण भूमियाँ हैं पावन, हम सादर शीश झुकाते हैं।।3।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखरादि तीर्थंकर निर्वाण क्षेत्र असंख्यात सिद्ध परमेष्ठिने अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्पों की गंध मनोहर है, इससे जगती महकाती है।
उस गंध सुगंधी को पाने, जनता सारी ललचाती है।।
हो काम वासना नाश पूर्ण, यह पुष्पित पुष्प चढ़ाते हैं।
निर्वाण भूमियाँ हैं पावन, हम सादर शीश झुकाते हैं।।4।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखरादि तीर्थंकर निर्वाण क्षेत्र असंख्यात सिद्ध परमेष्ठिने कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

सदियों से भोजन बहुत किया, पर भूख नहीं मिट पाई है।
प्राणी को बहुत सताती है, यह भूख बहुत दुखदायी है।।
मिट जाए क्षुधा का रोग पूर्ण, यह चरूवर सरस चढ़ाते हैं।
निर्वाण भूमियाँ हैं पावन, हम सादर शीश झुकाते हैं।।5।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखरादि तीर्थंकर निर्वाण क्षेत्र असंख्यात सिद्ध परमेष्ठिने क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अज्ञान अंधेरा छाया है, सद्ज्ञान दीप न जल पाए।
हो जाय नाश मिथ्यातम का, यह दीप जलाकर हम लाए।।
अज्ञान तिमिर का हो विनाश, यह मनहर दीप जलाते हैं।
निर्वाण भूमियाँ हैं पावन, हम सादर शीश झुकाते हैं।।6।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखरादि तीर्थंकर निर्वाण क्षेत्र असंख्यात सिद्ध परमेष्ठिने मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

आठों कर्मों की माया से, हम सदा सताते आए हैं।
आठों अंगों को बांध रखा, हम उनसे छूट न पाए हैं।।
हो अष्ट कर्म का नाश शीघ्र, अग्नि में धूप जलाते हैं।
निर्वाण भूमियाँ हैं पावन, हम सादर शीश झुकाते हैं।।7।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखरादि तीर्थंकर निर्वाण क्षेत्र असंख्यात सिद्ध परमेष्ठिने अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

जो किए पूर्व में कर्म कई, वह सभी उदय में आते हैं।
फल उनका शुभ या अशुभ सभी, प्राणी इस जग के पाते हैं।।
अब मोक्ष महाफल पाने को, यह श्रीफल सरस चढ़ाते हैं।
निर्वाण भूमियाँ हैं पावन, हम सादर शीश झुकाते हैं।।8।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखरादि तीर्थंकर निर्वाण क्षेत्र असंख्यात सिद्ध परमेष्ठिने मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

हम अष्ट द्रव्य का अर्घ्य श्रेष्ठ, यह शुद्ध बनाकर लाए हैं।
अष्टम वसुधा है सिद्ध भूमि, हम उसको पाने आए हैं।।
अब पद अनर्घ पाने हेतु, यह मनहर अर्घ्य चढ़ाते हैं।
निर्वाण भूमियाँ हैं पावन, हम सादर शीश झुकाते हैं।।9।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखरादि तीर्थंकर निर्वाण क्षेत्र असंख्यात सिद्ध परमेष्ठिने अनर्घ पद प्राप्ताय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा– पूज्य क्षेत्र निर्वाण हैं, तीन लोक में श्रेष्ठ।
जयमाला गाते परम, जिनकी यहाँ यथेष्ठ।।
तर्ज– श्री निर्वाण क्षेत्र में जाय, वंदन कर प्राणी फल पाय।
महासुख दाय, जय-जय तीर्थ परम पद दाय।।
श्री सम्मेद शिखर मनहार, सर्व लोक में मंगलकार।
बृहस्पति भी महिमा की गाय, फिर भी पूर्ण नहीं कर पाय।।
महासुखदाय...।।

यह तीरथ है अतिशयवान, बीस जिनेन्द्र पाए निर्वाण।
कर्म नाशकर छोड़ी काय, तीन योग से जिनको ध्याय।।
महासुखदाय...।।
आदिनाथ अष्टापद धाम, तीर्थ क्षेत्र को करूँ प्रणाम।
चरण कमल में शीष झुकाए, तीन योग से जिनको ध्याय।।
महासुखदाय...।।
प्रथम जिनेश्वर आदिनाथ, तिनके चरण झुकाऊँ माथ।
मन में यही भावना भाय, वह भी मुक्ति वधु को पाय।।
महासुखदाय...।।
वासुपूज्य चंपापुर धाम, कर्मों से पाए विश्राम।
देव सभी चरणों में आय, भक्ति करके हर्ष मनाय।।
महासुखदाय...।।
चंपापुर है तीर्थ महान्, पाए प्रभो! पञ्चकल्याण।
सभी तीर्थ चम्पापुर जाय, अनुपम यह महिमा दिखलाय।।
महासुखदाय...।।
ऊर्जयंत गिरि रही महान्, नेमिनाथ पाए निर्वाण।
पञ्चम टोंक पे ध्यान लगाय, अपने सारे कर्म नशाय।।
महासुखदाय...।।

शम्भू आदिक अन्य मुनीश, सिद्ध बने शिवपुर के ईश।
महिमा जिसकी कही न जाय, सिद्ध सुपद पाए जिनराय॥
महासुखदाय...॥
पावापुर है तीर्थ महान्, महावीर पाए निर्वाण।
पद्म सरोवर पुष्प खिलाय, सारा तीर्थ रहा महकाय॥
महासुखदाय...॥
महिमा जिसकी अपरंपार, करो वंदना बारबार।
इस जीवन को सुखी बनाय, अनुक्रम से मुक्ती को पाय॥
महासुखदाय...॥
पांचों तीर्थक्षेत्र निर्वाण, तीर्थंकर के रहे महान्।
भव्य जीवन वंदन को जाय, मन में अतिशय हर्ष मनाय॥
महासुखदाय...॥
बोल रहे हम जय-जयकार, हम भी पा जावें भव पार।
अंतिम विशद भावना भाय, कथन किया मन से हर्षाय॥
महासुखदाय...॥

दोहा– पाप क्षीणकर पुण्य से, मिले तीर्थ का योग।
अंतिम मुक्ति वास हो, वंदन करूँ त्रियोग॥

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखरादि निर्वाण क्षेत्र असंख्यात सिद्ध परमेष्ठिने जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– है अंतिम यह भावना, होय समाधीवास।
तीर्थक्षेत्र निर्वाण से, पाऊँ ज्ञान प्रकाश॥

।।इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

श्री आदिनाथ निर्वाण भक्ति–1

विबुधपति खगपति नरपति धन दोरगभूत यक्षपति महितम्।
अतुल सुख विमल निरुपम शिवमचलमनामयं हि संप्राप्तम्।।1।।
कल्याणैः संस्तोष्ये पंचभिरनघं त्रिलोक परमगुरुम।
भव्यजन तुष्टिजननैर्दुरवापैः आदि जिनं भक्त्या।।2।।
आषाढः कृष्ण द्वितीयायां हस्तोत्तर मध्यमाश्रिते शशिनि।
आयातः स्वर्गसुखं, भुक्त्वा सर्वार्थाधीशः।।3।।
नाभिराय नृपतितनयो भारतवास्ये साकेत पुरनगरे।
देव्यां मरुजनन्यां सुस्वप्नान् संप्रदर्श्य विभुः।।4।।
चैत्र पक्षाभिजिते शशांकयोगे दिने नवमी तिथ्याम्।

जज्ञेस्वोच्चस्थेषु ग्रहेषु सौम्येषु शुभलग्ने।।5।।
अभिजिताश्रिते शशांके चैत्र कृष्णे खलु नवम्यांदिवसे।
पूर्वाण्हे रत्नघटै र्विबुधेन्द्राश्चकुरभिषेकम्।।6।।
भुक्त्वा कुमारकाले अनेक लक्ष पूर्वाऽनंत गुणराशिः।
अमरोपनीत भोगान् नीलाभिनिबोधितोत्वरितः।।7।।
नानाविध रुपचितां विचित्रकूटोच्छ्तांमणि विभूषाम्।
सुदर्शनाख्या शिविकामारुह्य पुराद्विनिःक्रान्तः।।8।।
चैत्र कृष्णनवम्यां हस्तोत्तर मध्यमाश्रिते सोमे।
षष्ठेनत्त्वपराण्हे भक्तेन जिनः प्रववाज।।9।।
ग्रामपुर खेटकर्वटमटंब घोषाकरान्प्रविजहार।
उग्रैस्तपोविधानैः सहस्र वर्षाण्यमरैः पूज्यः।।10।।
पुरिमतालपुरोद्यानेन्यग्रोधे संश्रिते शिलापट्टे।
पूर्वाण्हे अष्टेनस्थितस्य खलु पुरिमतालपुरे।।11।।
फाल्गुन एकादश्यां हस्तोत्तर मध्यमाश्रिते चन्द्रे।
क्षपक श्रेण्यारूढस्योत्पन्नं केवलज्ञानम्।।12।।
छत्राशोकौ घोषं सिंहासन दुंदुभि कुसुमवृष्टिम्।
वरचामर भामण्डल दिवयान्यन्यानि चावापत्।।13।।
दशविधमनगाराणामेकादशधोत्तरं तथा धर्मम्।
देशयमानो व्यवहरं लक्षैक पूर्वाण्यथ जिनेद्रः।।14।।
अथ भगवान सम्प्रापद् दिव्यं कैलाशपर्वतं रम्यम्।
चातुर्वर्ण्यसुसंघस्तत्राभूद् श्री वृषभप्रभृति।।15।।
पद्मवनदीर्घिका कुल विविध द्रुम खण्ड मंडिते रम्ये।
कैलाशगिरौ शिखरे पद्मासनेन स्थितः स मुनिः।।16
माघ कृष्ण चतुर्दश्यां उत्तराषाढे निहत्यकर्मरजः।
अवशेषं संप्रापद्व्यजरामरमक्षयं सौख्यम्।।17।
परिनिर्वृत्तं जिनेन्द्र ज्ञात्त्वा विबुधहय्थासु चागम्य।
देवतरु रक्तचंदन कालागरु सुरभिगोशीर्षैः।।18।।
अग्नीन्द्राज्जिनदेहं मुकटानल सुरभि धूपवरमाल्यैः।
अभ्यर्च्य गणधरानपि गतादिवं खं च वन भवने।।19।।

इत्येवं भगवति श्री आदीश चंद्रे, यः स्तोत्रं पठति सुसंध्ययोर्द्वयोर्हि।
सोऽनन्तं परमसुखं नृदेवलोके, भुक्त्वान्ते शिवपदमक्षयं प्रयाति।।20।।
यत्रार्हतां गणभृतां श्रुतपारगाणां, निर्वाणभूमिरिह भारत वर्षजानाम्।

तामद्य शुद्धमनसा क्रिया वचोभिः, संस्तोतुमुद्यतमतिः परिणौमिभक्त्या॥21॥
माल्यानि वाक्स्तुतिमयैः कुसुमैः सुदृब्धा, न्यादाय मानसकरैरभितः किरन्तः।
पर्येम आदृतियुता भगवनिन्नषद्याः, संप्रार्थिता वयमिमे परमां गतिं ताः॥22॥
शत्रुञ्जये नगवरे दमितारिपक्षाः, पण्डोः सुताः परमनिर्वृतिमभ्युपेताः।
तुंग्यां तु संगरहितो बलभद्रनामा नद्यास्तटे जितरिपुश्च सुवर्णभद्रः॥23॥
द्रोणीमति प्रबल कुण्डल मेढ्रके च, वैभार पर्वततले वर सिद्धकूटे।
ऋष्याद्रिके च विपुलाद्रि बलाहके च, विन्ध्ये च पोदनपुरे वृषदीपके च॥24॥
सह्याचले च हिमवत्यपि सुप्रतिष्ठे, दण्डात्मके गजपथे पृथुसारयष्टौ।
ये साधवो हत मलाः सुगतिं प्रयाताः, स्थानानि तानि जगति प्रथितान्यभूवन्॥25॥
इक्षोर्विकार रसपृक्त गुणेनलोके, पिष्टोऽधिकं मधुरतामुपयाति यद्वत्।
तद्वच्चपुण्यपुरुषै रुषितानि नित्यं, स्थनानि तानि जगतामिह पावनानि॥126॥
इत्यर्हतां शमवतां च महामुनीनां, प्रोक्तामयात्र परिनिर्वृत्ति भूमिदेशाः।
ते मे जिना जितभया मुनयश्च शांता, दिश्यासुराशु सुगतिं निरवद्य सौख्याम्॥27॥

क्षेपक श्लोक

शान्ति कुन्थ्वर कौरव्या यादवौ नेमिसुव्रतौ।
उग्रनाथौ पार्श्ववीरौ शेषा इक्ष्वाकुवंशजाः॥

अंचलिका

इच्छामि भंते! परिणिव्वाण भत्ति काउस्सग्गो कओ तस्सालोचेउं इमम्मि अवसप्पिणीए् तदिये समयस्य पच्छिमे भाए् आउट्ठमासहीणे तदिये समयम्मि सेसकालम्मि कैलासे पव्वए् माह मासम्मि चउदसीए् उत्तराषाढ णक्खत्ते पच्चूसे भयवदो आदिजिणो सिद्धिंगदो। तिसुवि लोएसु, भवणवासिय-वाणविंतर जोयसिय कप्पवासियत्ति चउव्विहादेवा सपरिवारा दिव्वेणण्हाणेण, दिव्वेणगंधेण, दिव्वेण अक्खेण,दिव्वेण पुप्फेण, दिव्वेण चुण्णेण, दिव्वेणदीवेण, दिव्वेण धूवेण, दिव्वेणवासेण णिच्चकालं अंचंति, पुज्जंति, वंदंति णमंसंति परिणिव्वाण महाकल्लाण पुज्जं करंति। अहमवि इह संतो तत्थ संताइयं णिच्चकालं अंच्चेमि पुज्जेमि, वंदामि, णमस्सामि, दुक्खक्ओ, कम्मक्खओ, बोहिलाओ, सुगईगमणं, समाहि-मरणं जिणगुण संपत्ति होउउ मज्झं।

श्री आदिनाथ पूजा–1

स्थापना

दोहा– धर्म प्रवर्तक जिन हुए, जग में आप महान।
आदिनाथ भगवान का, करते हम आह्वान॥

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(चाल छन्द)

जो निर्मल नीर चढ़ाएँ, वे तीनों रोग नशाएँ।
फिर निज के गुण प्रगटाएँ, वह मुक्ति वधू को पाएँ॥1॥

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन भवताप नशाए, जो भाव से पूज रचाएँ।
फिर निज के गुण प्रगटाएँ, वह मुक्ति वधू को पाएँ॥2॥

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय भवाताप विनाशनाय चंदनं निर्व. स्वाहा।

अक्षत अक्षय पद दायी, इस लोक में गाया भाई।
फिर निज के गुण प्रगटाएँ, वह मुक्ति वधू को पाएँ॥3॥

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्व. स्वाहा।

सुरभित जो पुष्प चढ़ाएँ, वे काम रोग विनशाएँ।
फिर निज के गुण प्रगटाएँ, वह मुक्ति वधू को पाएँ॥4॥

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

नैवेद्य क्षुधा का नाशी, नर पद पाए अविनाशी।
फिर निज के गुण प्रगटाएँ, वह मुक्ति वधू को पाएँ॥5॥

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

पूजा को दीप जलाए, वह मोह को जीव नशाए।
फिर निज के गुण प्रगटाएँ, वह मुक्ति वधू को पाएँ॥6॥

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।

सुरभित जो धूप जलाए, वह आठों कर्म नशाए।
फिर निज के गुण प्रगटाएँ, वह मुक्ति वधू को पाएँ।।7।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल ताजे सरस चढ़ाए, वह मोक्ष महाफल पाए।
फिर निज के गुण प्रगटाएँ, वह मुक्ति वधू को पाएँ।।8।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

यह अर्घ्य चढ़ाने लाए, पाने अनर्घ पद आए।
फिर निज के गुण प्रगटाएँ, वह मुक्ति वधू को पाएँ।।9।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पञ्च कल्याणक के अर्घ्य

दोहा– द्वितिया कृष्ण आषाढ़ की, आदिनाथ भगवान।
सर्वार्थ सिद्धि से चय किए, पाए गर्भ कल्याण।।1।।

ॐ ह्रीं आषाढ़कृष्णा द्वितीयायां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चैत कृष्ण नौमी प्रभु, पाए जन्म कल्याण।
शत् इन्द्रों ने न्हवन कर, किया प्रभू गुणगान।।2।।

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्ण नवम्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नील परी की मृत्यु लख, धरे आप वैराग।
चैत कृष्ण नौमी तिथी, छोड़ चले सब राग।।3।।

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णा नवम्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चार घातिया नाशकर, पाए केवल ज्ञान।
फागुन वदि एकादशी, जग में हुई महान।।4।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णा एकादश्यां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

माघ कृष्ण की चतुर्दशी, कीन्हे कर्म विनाश।
मोक्ष कल्याणक प्राप्त कर, किए सिद्ध पद वास।।5।।

ॐ ह्रीं माघकृष्णा चतुर्दश्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री आदिनाथ जी की टोंक

श्री कैलाश सिखर की जय हो, मुक्त हुए जिनवर की जय हो।
उस धरती अंबर की जय हो, दुखहारी गिरवर की जय हो।।
सोरठा– आदिनाथ निर्वाण, अष्टापद से पाए हैं।
काल दोष यह मान, मोक्ष हुआ जो वहाँ से।।
हे ज्ञानमूर्ति करुणा निधान! हे धर्म दिवाकर करुणाकर!।
हे तेज पुंज! हे तपोमूर्ति! सन्मार्ग दिवाकर रत्नाकर!।।
हे धर्म प्रवर्तक! आदिनाथ, तव चरणों में करते वंदन।
हम अष्ट गुणों को पा जाएँ, प्रभु भाव सहित करते अर्चन।
हम भव सागर में भटक रहे, अब तो मेरा उद्धार करो।
श्री वीतराग सर्वज्ञ महाप्रभु, भव समुद्र से पार करो।।
चलो-चलो रे-2 सभी नर-नार, तीर्थ के दर्शन को।
कटते हैं कर्म अपार, चलो रे भाई वंदन को।।1।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्रादि दशसहस्र मुनीश्वरेभ्यो नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

आदिनाथ सृष्टी के कर्त्ता, हुए लोक में मंगलकार।
स्वयं बुद्ध हे नाथ! आपके, चरणों वन्दन बारम्बार।।
चरण वन्दना करने हेतू, अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं।
अर्चा करने आज यहाँ पर, बहुत दूर से आए हैं।।2।।
दोहा– आदिम तीर्थंकर हुए, भक्तों के भगवान।
अष्टापद से शिव गये, करके जग कल्याण।।

ॐ ह्रीं श्री कैलाश सिद्धक्षेत्र स्थित कूट से माघ सुदी चौदस को श्री आदिनाथ तीर्थंकरादि व असंख्यात मुनि मोक्ष पधारे तिनके चरणारविन्द में अनर्घ्यपदप्राप्त्ये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इसी कूट से प्रथम तीर्थंकर, मोक्ष जाएँगे और गये।
हुण्डकाल में अष्टापद से, आदिनाथ जिन कर्म क्षये।।
दश हजार मुनि वृषभनाथ के, साथ में मुक्ती पद पाए।
आदिनाथ आदिक मुनियों की, पूजा करने हम आए।।3।।

ॐ ह्रीं अष्टापद सिद्ध क्षेत्रेभ्यो नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

शीश झुकाते आपके, चरणों बालाबाल।
आदिनाथ भगवान की, गाते हम जयमाल॥

(पद्धरि छन्द)

जय भोग भूमि का अन्त पाय, जय ऋषभदेव अवतार आय।
जय पिता आपके नाभिराय, जय माता मरुदेवी कहाय॥1॥
जय अवधपुरी नगरी प्रधान, घर-घर में छाया सुयश गान।
सौधर्म इन्द्र तब हर्ष पाय, तव न्हवन मेरु पे जा कराय॥2॥
प्रभु के पद में करके प्रणाम, तव ऋषभनाथ शुभ दिया नाम।
शुभ धनुष पाँच सौ उच्च देह, जन-जन से जिनको रहा नेह॥3॥
लख पूर्व चौरासी उम्र जान, षट्कर्म की शिक्षा दिए मान।
नीलांजना की मृत्यू का योग, पाके छोड़े संसार भोग॥4॥
तव नग्न दिगम्बर भेष धार, निज में निज ध्याये निराकार।
प्रगटाए प्रभु कैवल्य ज्ञान, प्रभु दिव्य देशना दिए जान॥5॥
फिर 'विशद' कर्म का कर विनाश, शिवपुर में जाके किए वास।
अष्टापद गाया मोक्ष थान, जो सिद्ध क्षेत्र गाया महान॥6॥

दोहा– पुण्य पाप तज के प्रभू, किए आत्म का ध्यान।
मोक्ष महल में जा बसे, आदिनाथ भगवान॥

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– करें वन्दना इन्द्र सौ, चरणों की भगवान।
मौका हमको भी मिले, जागे भाव महान॥

॥इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्॥

श्री अजितनाथ निर्वाण भक्ति–2

(आर्या छन्द)

विबुधपति-खगपतिनरपति धनदोरग भूत यक्षपति महितम्।
अतुलसुख विमलनिरुपमशिवमचलमनामयं हि संप्राप्तम्॥1॥

कल्याणैः संस्तोष्ये पंचभिरनघं त्रिलोक परम गुरुम्।
भव्यजन तुष्टिजननैर्दुरवापैः अजितजिनं भक्त्या॥2॥
ज्येष्ठः मासामावस्या रोहिणी भा मध्यमाश्रितेशशिनि।
आयातः स्वर्गसुखं भुक्त्वावैजयंताधीशः॥3॥
जितरिपुराज्ञः तनयो भारतवस्ये खलु अयोध्यानगरे।
देव्यां विजयसेनायां सुस्वप्नान् संप्रदर्श्य विभुः॥4॥
पौष शुक्ल रोहिण्या शशांकयोगेशुभ दिने दशम्याम्।
जज्ञे स्वोच्चस्थेषु ग्रहेषु सौम्येषु शुभलग्ने॥5॥
रोहिण्याश्रिते शशिनिपौष ज्योत्सनेदशम्यां दिवसे।
पूर्वाण्हेरत्नघटै र्विबुधैन्द्राश्चक्रुरभिषेकम्॥6॥
भुक्त्वा कुमार वाले अष्टादशबहु लक्षपूर्वानंत गुणराशिः।
अमरोपनीत भोगान् उल्फात बोधितो परितः॥7॥
नाना विध रुपचितां विचित्र कूटोच्छ्रितांमणि विभूषाम्।
सुप्रभाख्या शिविकामारूह्य पुराद्विनिःक्रान्त॥8॥
पौषशुक्ला नवमी रोहिणी मध्यमाश्रिते सोमे।
षष्ठेनत्वपराण्हे भक्तेन जिनः प्रवव्राज॥9॥
ग्रामपुर खेट कर्वट मटंब घोषाकरान्प्रविजहार।
उग्रैस्तपोविधानै र्द्वादश वर्षाण्यमरपूज्यः॥10॥
सहेतुक वनस्यमध्ये सप्तपर्ण संश्रिते शिलापट्टे।
अपराण्हे षष्ठेनास्थितस्य खलु अयोध्याग्रामे॥11॥
पौषसित एकादश्यां रोहिण्यांमध्यमाश्रिते चंद्रे।
क्षपक श्रेण्यारूढस्योत्पन्नं केवलज्ञानम्॥12॥
छत्राशोकौ घोषं सिंहासन दुंदुभि कुसुमवृष्टिम्।
वरचामार भामण्डलदिव्यान्यन्यानि चावापत्॥13॥
दसविधमनगाराणमेकादशधोत्तरं तथा धर्मम्।
देशयमानो व्यवहारं खलुलक्षं पूर्वाण्यथ जिनेन्द्रः॥14॥
अथ भगवान सम्प्रापद्-दिव्यं सम्मेद पर्वतं रम्यम्।
चातुर्वर्ण्य सुसंघस्तत्राभूत सिंहगण प्रभृति॥15॥
सम्मेदवनदीर्घिका कुल विविध द्रुमखण्ड मंडितेरम्ये।
सिद्धवरकूटोद्याने व्युत्सर्गेण स्थित स मुनिः॥16॥

चैत्रशुक्ल पंचम्यां रोहिणीऋक्षे निहत्यकर्मरजः।
अवशेषं संप्रापद्व्यजरामरमक्षयं सौख्यम्॥17॥
परिनिर्वृत्तं जिनेन्द्रज्ञात्वा विबुधह्यथाशु चागम्य।
देवतरु रक्त चंदनकालागरु सुरभिगोशीर्षै॥18॥
अग्नीन्द्राज्जिनदेहं मुकुटानल सुरभि धूपवरमाल्यैः।
अभ्यर्च्य गणधरानपि गता दिवं खं च वनभवने॥19॥

इत्येवंव भगवति श्री अजितजिनं चंद्रे, यः स्तोत्रं पठति सुसंध्ययोर्द्वयोर्हि।
सोऽनन्तं परम सुखं नृदेवलोके, भुक्त्वान्ते शिव पदमक्षयं प्रयाति॥20॥
यत्रार्हतां गणभृतां श्रुतपारगाणां, निर्वाण भूमिरिह भारतवर्ष जानाम्।
तामद्य शुद्धमनसा क्रियया वचोभिः, संस्तोतुमुद्यतमतिः परिणौमिभक्त्या॥21॥
माल्यानि वाक्स्तुतिमयैः कुसुमैः सुदृब्धा, न्यादाय मानसकरैरभितः किरन्तः।
पर्येम आदृतियुता भगवन्निषद्याः। संप्रार्थिता वयमिमे परमां गतिं ताः॥22॥
शत्रुञ्जये नगवरे दमितारिपक्षाः, पण्डोः सुताः परमनिर्वृतिमभ्युपेताः।
तुंग्यां तु संग रहितो बलभद्रनामा, नद्यास्तटे जितरिपुश्च सुवर्णभद्रः॥23॥
द्रोणीमति प्रबल कुण्डल मेढ्रके च, वैभार पर्वततले वर सिद्धकूटे।
ऋष्याद्रिके च विपुलाद्रि बलाहके च, विन्ध्ये च पोदनपुरे वृषदीपके च॥24॥
सह्याचले च हिमवत्यपि सुप्रतिष्ठे, दण्डात्मके गजपथे पृथुसार यष्टौ।
ये साधवोहतमलाः सुगतिं प्रयाताः, स्थानानि तानि जगति प्रथितान्यभूवन्॥25॥
इक्षोर्विकार रसपृक्त गुणेनलोके पिष्टोऽधिकं मधुरतामुपयातियद्वत्।
तद्वच्च पुण्यपुरुषै रुषितानि नित्यं, स्थानानि तानि जगतामिह पावनानि॥26॥
इत्यर्हतां शमवतां च महामुनीनां, प्रोक्तामयात्र परिनिर्वृत्ति भूमिदेशाः।
ते मे जिना जितभया मुनयश्च शांताः, दिश्यासुराशु सुगति निरवद्य सौख्याम्॥27॥

क्षेपक श्लोक

शान्ति कुन्थवर कौरव्या यादवौ नेमिसुव्रतौ।
उग्रनाथौ पार्श्ववीरौ शेषा इक्ष्वाकुवंशजाः॥

अंचलिका

इच्छामि भंते! परिणिव्वाण भत्ति काउस्सग्गो कओ तस्सलोचेउं इमम्मिअवसप्पिणीएचउत्थ समयम्मि समयस्य पुव्वेभाये पण्णास लक्ख कोडीसागरोवम वस्स हीणे वासचउक्कम्मि सेसकालम्मि सम्मेए

पव्वउ चैत मासस्स सुक्क पंचमीए पुव्वण्हे रोहिणीये णक्खत्ते पच्चूसे भयवदो अजियणाहो सिद्धि गदो। तिसुविलोएसु, भवण वासिय-वाणविंतर, जोसिय, कप्पवासियत्ति चउव्विहादेवा सपरिवारा दिव्वेण ण्हाणेण, दिव्वेण गंधेण, दिव्वेण अक्खेण, दिव्वेण पुप्फेण, दिव्वेण चुण्णेण, दिव्वेण दीवेण, दिव्वेणधूवेण, दिव्वेणवासेण, णिच्चकालं अच्चंति पुज्जंति, वंदंति, णमंसंति, परिणिव्वाण महाकल्लाण पुज्जं करंति। अहमवि इह संतो तत्थ संताइयं णिच्चकालं, अंच्चेमि पुज्जेमि, वंदामि, णमस्सामि, दुक्खक्खओ, कम्मक्खओ बोहिलाहो सुगईगमणं, समाहि-मरणं जिणगुण संपत्ति होउ मज्झं।

श्री अजितनाथ पूजा–2

स्थापना

दोहा– **कर्म विजेता जिन हुए, अजितनाथ भगवान।**
विशद हृदय में आपका, करते हम आह्वान॥

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

नीर चढ़ाते भाव से, रोगत्रय हों नाश।
शिवपथ के राही बनें, पाएँ शिवपुर वास॥1॥

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

चन्दन लाए श्रेष्ठ हम, घिसकर यह गोशीर।
चढ़ा रहे हैं भाव से, पाने भव का तीर॥2॥

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय भवाताप विनाशनाय चंदनं निर्व. स्वाहा।

अक्षत लाए श्वेत यह, चढ़ा रहे पद नाथ।
अक्षय पद पाएँ प्रभो!, झुका चरण में माथ॥3॥

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्व. स्वाहा।

पुष्प चढ़ाते भाव से, काम रोग हो नाश।
मुक्ती हो संसार से, पायें शिवपुर वास॥4॥

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

सरस लिए नैवेद्य यह, पूजा करने आज।
क्षुधा रोग का नाश कर, पाएँ शिव पद राज।।5।।

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

दीप जलाते श्रेष्ठ हम, चहुँ दिश होय प्रकाश।
यही भावना है विशद, होय महातम नाश।।6।।

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।

धूप जलाने लाए यह, अग्नी में भगवान।
अष्ट कर्म का नाशकर, पाएँ पद निर्वाण।।7।।

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्व. स्वाहा।

फल से पूजा हम करें, आज यहाँ पर नाथ।
मोक्ष महाफल प्राप्त हो, झुका चरण में माथ।।8।।

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्व. स्वाहा।

आठों द्रव्यों का विशद, लाए बनाके अर्घ्य।
अन्तिम है यह कामना, पाएँ सुपद अनर्घ्य।।9।।

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पञ्चकल्याणक के अर्घ्य

(दोहा)

वदी अमावस जेठ की, पाए गर्भ कल्याण।
अजितनाथ का देव सब, किए विशद गुणगान।।1।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णाऽमावस्यायां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री अजितनाथदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

माघ कृष्ण दशमी प्रभू, अजित नाथ भगवान।
न्हवन कराकर मेरु पे, किए इन्द्र जय गान।।2।।

ॐ ह्रीं माघकृष्णा दशम्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री अजितनाथदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

माघ वदि दशमी तिथी, पाए तप कल्याण।
इस जग का वैभव तजा, किए आत्म का ध्यान।।3।।

ॐ ह्रीं माघकृष्णा दशम्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री अजितनाथदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पौष शुक्ल एकादशी, पाए केवल ज्ञान।
दिव्य देशना दे प्रभू, किए जगत कल्याण।।4।।

ॐ ह्रीं पौषशुक्ला एकादश्यां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री अजितनाथदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चैत शुक्ल की पञ्चमी, पाए पद निर्वाण।
सिद्ध लोक में जा बसे, अजितनाथ भगवान।।5।।

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्ला पंचम्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री अजितनाथदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री अजितनाथजी की टोंक (सिद्धवर कूट)

श्री सम्मेद शिखर की जय हो, मुक्त हुए जिनवर की जय हो।
उस धरती अंबर की जय हो, दुखहारी गिरवर की जय हो।।
सोरठा– कूट सिद्धवर जान, अजितनाथ भगवान की।
इन्द्र किए गुणगान, पाया था निर्वाण जब।।
अजितनाथ का साथ मिला है, तब से जीवन चमन खिला है।
श्रद्धा का उपवन महका है, संयम से जीवन चहका है।।
चहका है जीवन विशद संयम, के बढ़े हम मार्ग पर।
शुभ जिंदगी की हर घड़ी अरु, सार्थक हो श्वास हर।
हम शरण में आए प्रभु, यह वंदना स्वीकार हो।
है भावना अंतिम विशद मम्, आत्म का उद्धार हो।।
चलो-चलो रे-2 सभी नर नार, तीर्थ के दर्शन को।
कटते हैं कर्म अपार, चलो रे भाई वंदन को।।1।।

ॐ ह्रीं निर्वाण कल्याणकमण्डित श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाह

प्रभु अजितनाथ हैं कर्मजयी, तुमने कर्मों का नाश किया।
पाकर के केवलज्ञान प्रभू, इस जग में ज्ञान प्रकाश किया॥
हम भक्त आपके गुण गाकर, यह अनुपम अर्घ्य चढ़ाते हैं।
हे नाथ! आपके चरणों में हम, सादर शीश झुकाते हैं॥2॥

दोहा– रहे अपावन भक्त हम, पावन हो प्रभु आप।
अजितनाथ का दर्श कर, कट जाते हैं पाप॥

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित सिद्धवर कूट से श्री अजितनाथ तीर्थंकरादि एक अरब अस्सी करोड़ चौवन लाख मुनि मोक्ष पधारे तिनके चरणारविन्द में अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

एक अरब चौरासी कोटी, लाख पैंतालिस जिन मुनिवर।
की पद रज पा धन्य हुआ है, कूट सिद्धवर श्री गिरवर॥
फल उपवास कोटि बत्तिस का, तीर्थ वन्दना किए मिले।
जिन पूजा वन्दन करने से, जिन जीवों का हृदय खिले॥3॥

ॐ ह्रीं श्री एक अरब चतुरशीति कोडी पंचचत्वारिंशत् लक्ष मुनीश्वरेभ्यो नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा

जयमाला

दोहा– सहज रूप को धार कर, सहज लगाए ध्यान।
सहज ज्ञान पाए प्रभू, करते तव गुणगान॥

(शम्भू छन्द)

अजितनाथ जिन के चरणों में, करते हम शत्-शत् वन्दन।
जित शत्रू के राज दुलारे, विजया माँ के जो नन्दन॥1॥
नगर अयोध्या जन्म लिए प्रभु, गज है जिन का शुभ लक्षण।
लाख बहत्तर पूर्व की आयू, हाथ अठारह सौ तुंग तन॥2॥
जन्म समय दश अतिशय पाये, दश पाए पा केवलज्ञान।
चौदह अतिशय रहे देवकृत, प्रातिहार्य वसु रहे महान॥3॥
ज्ञान दर्शनावरण मोहनीय, अन्तराय का करके नाश।
अनन्त चतुष्टय पाय प्रभु जी, कीन्हे अनुपम ज्ञान प्रकाश॥4॥
दिव्य देशना देकर प्रभु जी, किए जगत जन का कल्याण।
सर्व कर्म को नाश आपने, पाया अनुपम पद निर्वाण॥5॥

कूट सिद्ध पर तीर्थराज से, किए मोक्ष को आप प्रयाण।
'विशद' भावना भाते हैं हम, होय जगत जन का कल्याण॥6॥

दोहा– राही मुक्ती मार्ग के, बने आप भगवान।
हमको यह पद प्राप्त हो, दीजे यह शुभ ज्ञान॥

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– रत्नत्रय को प्राप्त कर, पाए शिव सोपान।
अर्चा करके आपकी, जीव करें कल्याण॥

॥इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्॥

श्री संभवनाथ निर्वाण भक्ति–3

विबुधपति खगपतिनरपति, धनदोरगभूतयक्ष पतिमहितम्।
अतुलसुखविमल निरुपम, शिवमचलमनामयं हि संप्राप्तम्॥1॥
कल्याणैः संस्तोष्ये पंचभिरनघं त्रिलोक परम गुरुम्।
भव्यजनतुष्टि जननैर्दुरवापैः संभवजिनं भक्त्या॥2॥
फाल्गुनवदि अष्टम्यां मृगशीर्ष भा मध्यमाश्रितेशशिनि।
आयातः स्वर्गसुखं भुक्त्वा ग्रैवेयकाधीशः॥3॥
जितारिराज तनयो भारतवास्ये श्रावस्तीनगरे।
देव्यां प्रियसुषेणायां सुस्वप्नान् संप्रदर्श्य विभुः॥4॥
मार्गशुक्ल ज्येष्टायां शशांकयोग दिने पूर्णिमायाम्।
जज्ञे स्वोच्चस्थेषु ग्रहेषु सोम्येषु शुभलग्ने॥5॥
ज्येष्ठाश्रिते शशांके मार्गज्योत्सने पूर्णिमा दिवसे।
पूर्वाण्हे रत्नघटै र्विबुधेन्द्राश्चक्रुरभिषेकम्॥6॥
भुक्त्वा कुमार काले बहुलक्ष पूर्वानंत गुणराशिः।
अमरोपनीत भोगान् मेघनाशः बोधितोत्वरितः॥7॥
नानाविधरूपचितां विचित्रकूटोच्छ्रितां मणि विभूषाम्।
सिद्धप्रभाख्याशिविकामारूह्यपुराद्विनिः क्रान्तः॥8॥
मार्गशिर शुक्ल स्यान्तेज्येष्ठा भा मध्यमाश्रिते सोमे।
अष्टेन त्वपराण्हे भक्तेन जिनः प्रवव्राज॥9॥
ग्रामपुर खेट कर्वट मटंब घोषाकरान्प्रविजहार।
उग्रैस्तपोविधानैः नाना वर्षाण्यमरैः पूज्यः॥10॥

सहेतुक वनस्यतीरे शाल्मलिद्रुम संश्रिते शिलापट्टे।
अपराण्हे षष्ठेनस्थितस्य खलु श्रावस्ती नगरे॥11॥
कार्तिककृष्ण चतुर्दश्यां ज्येष्ठा भा मध्यमाश्रिते चंद्रे।
क्षपक श्रेण्यारूढस्योत्पन्नं केवलज्ञानम्॥12॥
छत्राशोकौ घोषं सिंहासन दुंदुभिकुसुमवृष्टिम्
वरचामर भामण्डल दिव्यान्यन्यानि चावापत्॥13॥
दशविधमनगाराणमेकादशधोत्तरं तथा धर्मम्।
देशयमानो व्यवहरं खलु लक्ष पूर्वाण्यथजिनेंद्रः॥14॥
अथ भगवान् संप्रापद् दिव्यं सम्मेद पर्वतं रम्यम्।
चातुर्वर्ण्य सुसंघस्तत्राभूद् चारुदत्तप्रभृति॥15॥
पद्मवनदीर्घिकाकुल विविध द्रुमखण्डमंडिते रम्ये।
धवलकूटोद्याने व्युत्सर्गेण स्थितः स मुनिः॥16॥
चैत्रशुक्ल षष्ठ्याम् मृगशिराऋक्षे निहत्यकर्मरजः।
अवशेषं संप्रापद्व्यजरामरमक्षयं सौख्यम्॥17॥
परिनिर्वृत्तं जिनेन्द्र ज्ञात्वा विबुधहृयथासु चागम्य।
देवतरु रक्त चंदन कालागरु सुरभिगोशीर्षैः॥18॥
अग्नीन्द्राज्जिन देहं मुकुटानल सुरभि धूपवर माल्यैः।
अभ्यर्च्य गणधरानपिगता दिवं खं च वनभवने॥19॥
इत्येवं भगवति संभवजिनं चंद्रे, यः स्तोत्रं पठति सुसंध्ययोर्द्वयोर्हि।
सोऽनंतं परमसुखं नृदेव लोके, भुक्त्वान्ते शिवपदमक्षयं प्रयाति॥20॥
यत्रार्हतां गणभृतां श्रुतपारगाणां, निर्वाण भूमिरिह भारतवर्ष जानाम्।
तामद्य शुद्धमनसा क्रियया वचोभिः, संस्तोतुमुद्यतमतिः परिणौमि भक्त्या॥21॥
माल्यानि वाक्स्तुतिमयैः कुसुमैः सुदृब्धा, न्यादाय मानसकरैरभितः किरन्तः।
पर्येम आदृतियुता भगवन्निषद्याः, संप्रार्थिता वयमिमे परमां गतिं ताः॥22॥
शत्रुञ्जये नगवरे दमितारिपक्षाः, पण्डोः सुताः परमनिर्वृतिमभ्युपेताः।
तुंग्यां तु संग रहितो बलभ्रदनामा, नद्यास्तटे जितरिपुश्च सुवर्णभद्रः॥23॥
द्रोणीमति प्रबल कुण्डल मेढ्के च, वैभार पर्वततले वर सिद्धकूटे।
ऋष्याद्रिके च विपुलाद्रि बलाहके च, विन्ध्ये च पोदनपुरे वृषदीपके च॥24॥
सह्याचले च हिमवत्यपि सुप्रतिष्ठे, दण्डात्मके गजपथे पृथुसारयष्टौ।
ये साधवोहतमलाः सुगतिं प्रयाताः, स्थानानि तानि जगति प्रथितान्यभूवन्॥25॥

इक्षोर्विकार रसपृक्त गुणेनलोके पिष्टोऽधिकं मधुरतामुपयातियद्वत्।
तद्वच्च पुण्यपुरुषै रुषितानि नित्यं, स्थानानि तानि जगतामिह पावनानि॥26॥
इत्यर्हतां शमवतां च महामुनीनां, प्रोक्तामयात्र परिनिर्वृत्ति परिनिर्वृत्ति भूमिदेशाः।
ते मे जिना जितभया मुनयश्च शांताः, दिश्यासुराशु सुगतिं निरवद्य सौख्याम्॥27॥

क्षेपक श्लोक

शान्ति कुन्थ्यर कौरव्या यादवौ नेमिसुव्रतौ।
उग्रनाथौ पार्श्ववीरौ शेषा इक्ष्वाकुवंशजाः॥

अंचलिका

इच्छामि भंते! परिणिव्वाण भत्ति काउस्सग्गो कओ तस्सालोचेउं इमम्मिचउत्थ समयस्स मज्झिमे भाए असीदि लक्ख कोडी सागरोवम वस्स हीणे वासचउक्कम्मि सेसकालम्मि सम्मेए पव्वए चैत मासस्स सुक्क छट्टीए रत्तीए जेट्ठणक्खत्ते पच्चूसे भयवदो संभवजिणो सिद्धिं गदो। तिसुविलोएसु, भवण वासिय-वाणविंतर, जोयसिय कप्पवासियत्ति चउव्विहादेवा सपरिवारा दिव्वेण ण्हाणेण, दिव्वेण गंधेण, दिव्वेण अक्खेण, दिव्वेण, पुप्फेण दिव्वेण चुण्णेण, दिव्वेण दीवेण, दिव्वेणधूवेण, दिव्वेणवासेण, णिच्चकालं अंचंति पुजंति, वंदति णमंसंति, परिणिव्वाण महाकल्लाण पुज्जं करंति। अहमवि इह संतो तत्थ संताइयं णिच्चकालं, अंचेमि पुज्जेमि, वंदामि, णमस्सामि, दुक्खक्खओ, कम्मक्खओ बोहिलाओ सुगईगमणं, समाहि-मरणं जिणगुण संपत्ति होउ मज्झं।

श्री सम्भवनाथ जी पूजा–3

स्थापना

दोहा– सम्भव जिन समभाव धर, पाए भव से पार।
आह्वानन् करते हृदय, बन जाएँ अनगार॥

ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(चौपाई)

क्षीर सिन्धु का जल यह लाए, तीनों रोग नशाने आए।
सम्भव जिन की महिमा गाते, चरणों में नत शीश झुकाते।1॥
ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

सुरभित चन्दन यहाँ घिसाये, भव आतप मेरा नश जाए।
सम्भव जिन की महिमा गाते, चरणों में नत शीश झुकाते।।2॥
ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय भवाताप विनाशनाय चंदनं निर्व. स्वाहा।

अक्षत चढ़ा रहे शुभकारी अक्षय पद पाएँ मनहारी।
सम्भव जिन की महिमा गाते, चरणों में नत शीश झुकाते।।3॥
ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्व. स्वाहा।

पुष्प चढ़ाने को हम लाए, काम रोग मेरा नश जाए।
सम्भव जिन की महिमा गाते, चरणों में नत शीश झुकाते।।4॥
ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

सरस सद्य नैवेद्य चढ़ाएँ, क्षुधा रोग से मुक्ती पाएँ।
सम्भव जिन की महिमा गाते, चरणों में नत शीश झुकाते।5॥
ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

पावन दीप जलाकर लाए, मोहनाश मेरा हो जाए।
सम्भव जिन की महिमा गाते, चरणों में नत शीश झुकाते।।6॥
ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।

धूप जलाते यह शुभकारी, कर्मों की नश जाए क्यारी।
सम्भव जिन की महिमा गाते, चरणों में नत शीश झुकाते।।7॥
ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल से पूजा यहाँ रचाएँ, मोक्ष महाफल हम पा जाएँ।
सम्भव जिन की महिमा गाते, चरणों में नत शीश झुकाते।8॥
ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्व. स्वाहा।

अर्घ्य बनाकर के यह लाए, पद अनर्घ्य पाने हम आए।
सम्भव जिन की महिमा गाते, चरणों में नत शीश झुकाते।9॥
ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पञ्चकल्याणक के अर्घ्य

(सखी छन्द)

फागुन सित आठें पाए, सुर गर्भ कल्याण मनाए।
जिन सम्भव अन्तर्यामी, हम चरणों करें नमामी।।1॥
ॐ ह्रीं फाल्गुनशुक्ला अष्टम्यां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कार्तिक सित पूनम गाई, जो जन्म की तिथि कहलाई।
मेरू पे न्हवन कराया, देवों ने हर्ष मनाया।।2॥
ॐ ह्रीं कार्तिकशुक्ला पूर्णिमायां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षण भंगुर यह जग जाना, संयम धर मुक्ती पाना।
मगशिर सित पूनम प्यारी, प्रभु बने आप अनगारी।।3॥
ॐ ह्रीं मार्गशीर्षशुक्ला पूर्णिमायां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कार्तिक वदि चौथ बताए, जिन केवल ज्ञान जगाए।
अज्ञान के मेघ हटाए, रवि केवल जो प्रगटाए।।4॥
ॐ ह्रीं कार्तिककृष्णा चतुर्थ्यां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

षष्ठी सित चैत बखानी, प्रभु पाए शिव रजधानी।
कर्मों का किया सफाया, निज आतम सौख्य उपाया।।5॥
ॐ ह्रीं चैत्रशुक्ला षष्ठम्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री संभवनाथ जी की टोंक (धवल कूट)

श्री सम्मेद शिखर की जय हो, मुक्त हुए जिनवर की जय हो।
उस धरती अंबर की जय हो, दुखहारी गिरवर की जय हो।।
सोरठा–संभवनाथ जिनेन्द्र, मोक्ष महल में जा बसे।
आये तब शत् इन्द्र, पूजन करने प्रभु की।।

धवल कूट से मोक्ष पधारे, अपने कर्म नाश कर सारे।
शत् इन्द्रों ने चरणों आकर, भक्ति गान किया है मनहर॥
करके सुशक्तिमान प्रभु की, चरण का वंदन किया।
लेकर मनोहर द्रव्य आठों, भाव से अर्चन किया॥
हम शरण में आए प्रभु, यह वंदना स्वीकार हो।
है भावना अंतिम विशद मम्, आत्म का उद्धार हो॥
चलो-चलो रे-2 सभी नर नार, तीर्थ के दर्शन को।
कटते हैं कर्म अपार, चलो रे भाई वंदन को॥1॥

ॐ ह्रीं निर्वाणकल्याणक मण्डित श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

हे सम्भव! जिन सम्भव कर दो, हमको शिवपुर मार्ग अहा
जो पद पाया है प्रभु तुमने, वह पाने का मम् लक्ष्य रहा॥
चरण वन्दना करने हेतू, अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं।
अर्चा करने आज यहाँ पर, बहुत दूर से आए हैं॥2॥

दोहा– सम्भव जिन सम्भाव से, किये कर्म का नाश।
भ्रमण नाश मम हो प्रभु, हो शिवपुर में वास॥

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित धवल कूट से श्री सम्भवनाथ तीर्थंकरादि नौ कोड़ा-कोड़ी बहत्तर लाख ब्यालीस हजार पाँच सौ मुनि मोक्ष पधारे तिनके चरणारविन्द में अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नव कोड़ा-कोड़ी बहत्तर, लाख सहस ब्यालीस प्रमाण।
शतक पाँच सौ अधिक मुनीश्वर, का हम करते हैं गुणगान॥
धवल कूट की श्रेष्ठ वन्दना, का फल है ब्यालिस उपवास।
भक्ति भाव से पूजा करके, प्राणी पाते शिवपुर वास॥3॥

ॐ ह्रीं संभवनाथ जिनेन्द्रादि नव कोडाकोडी द्वासप्तति द्विचत्वारिंशत् सहस्र पंचशतक मुनीश्वरेभ्यो नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा– नट की भाँति जीव है, नाटक यह संसार।
गुणमाला गाते यहाँ, पाने भव से पार॥

(चौपाई)

जय जय जय सम्भव जिन स्वामी, करुणानिधि हे अन्तर्यामी।
ग्रैवेयक से चयकर आये, श्रावस्ती को धन्य बनाए॥1॥
पिता जितारी जिनके गाए, मात सुसेना प्रभु जी पाए।
लाख साठ पूरव की भाई, आयु चार सौ धनुष ऊँचाई॥2॥
घोड़ा लक्षण जिनका गाया, तप्त स्वर्ण सम तन बतलाया।
जग के भोग जिन्हें ना भाए, छोड़ के सब जिन दीक्षा पाए॥3॥
चार घातिया कर्म नशाए, प्रभु जी केवल ज्ञान जगाए।
समवशरण तब देव बनाए, दिव्य देशना प्रभू सुनाए॥4॥
ऋषि द्वय लक्ष आपके गाए, गणधर एक सौ पाँच बताए।
चारुदत्त जी प्रथम कहाए, जिनवर की जो महिमा गाए॥5॥
गिरि सम्मेद शिखर से स्वामी, मुक्ती पाए अन्तर्यामी।
'विशद' भावना यही हमारी, शिवपद पाएँ हे त्रिपुरारी॥6॥

दोहा– सिद्ध शिला पर आपने, विशद बनाया धाम।
मुक्ती हो संसार से, करते चरण प्रणाम॥

ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– भाते हैं हम भावना, प्रभू आपके द्वार।
कैसे भी हो शीघ्र हो, मेरा आत्म उद्धार॥

॥इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्॥

श्री अभिनंदन निर्वाण भक्ति–4

विबुधपति खगपतिनरपति धनदोरगभूतयक्ष पतिमहितम्।
अतुलसुखविमल निरुपम शिवमचलमनामयं हि संप्राप्तम्॥1॥
कल्याणैः संस्तोष्ये पंचभिरनघं त्रिलोक परम गुरुम्।
भव्यजनतुष्टि जननैर्दुरवापैः अभिनंदनं भक्त्या॥2॥
वैशाखसुसित षष्ठ्यां पुनर्वसु भा मध्यमाश्रितेशशिनि
आयातः स्वर्गसुखं भुक्त्वा वैजयंताधीशः॥3॥
संवर राज्ञः तनयोभारतवास्ये कौशल अयोध्यानगरे।
देव्यां सिद्धार्थायां सुस्वप्नान् संप्रदर्श्य विभुः॥4॥
पौष शुक्ला पुनर्वसु आदित्ययोगे दिने द्वादश्याम्।
जज्ञे स्वोच्चस्थेषु ग्रहेषु सोम्येषु शुभलग्ने॥5॥

पुनर्वस्वाश्रिते-रवि पौष ज्योत्सने द्वादशी दिवसे।
पूर्वाण्हे रत्नघटै र्विबुधेन्द्राश्चक्रुरभिषेकम्।।6।।
भुक्त्वा कुमार काले बहुलक्ष पूर्वानंत गुणराशिः।
अमरोपनीत भोगान् नगरनाशः बोधितोत्वरितः।।7।।
नानाविधरूपचितां विचित्रकूटोच्छ्रितां मणि विभूषाम्।
हस्तचित्राख्याशिविकामारूह्यपुराद्विनिः क्रान्तः।।8।।
पौष शुक्ल द्वादश्यां पुनर्वसु मध्यमाश्रिते सोमे।
षष्ठेन त्वपराण्हे भक्तेन जिनः प्रवव्राज।।9।।
ग्रामपुर खेट कर्वट मटंब घोषाकरान्प्रविजहार।
उग्रैस्तपोविधानैः नाना वर्षाण्समरैः पूज्यः।।10।।
सहेतुक वनस्यमध्ये शालद्रुम संश्रिते शिलापट्टे।
अपराण्हे षष्ठेनस्थितस्य खलु साकेत नगरे।।11।।
पौषशुक्ल चतुर्दश्यां पुनर्वसु मध्यमाश्रिते चंद्रे।
क्षपक श्रेण्यारूढस्योत्पन्नं केवलज्ञानम्।।12।।
छत्राशोकौ घोषां सिंहासन दुंदुभिकुसुमवृष्टिम्।
वरचामर भामण्डल दिव्यान्यन्यानि चावापत्।।13।।
दशविधमनगाराणामेकादशधोत्तरं तथा धर्मम्।
देशयमानो व्यवहरं खलु लक्ष पूर्वाण्यथजिनेंद्रः।।14।।
अथ भगवान् संप्रापद् दिव्यं सम्मेद पर्वतं रम्यम्।
चातुर्वर्ण्य सुसंघस्तत्राभूद् वज्रनाभिप्रभृति।।15।।
पद्मवनदीर्घिकाकुल विविध द्रुमखण्डमंडिते रम्ये।
आनंदकूटोद्याने व्युत्सर्गेण स्थितः स मुनिः।।16।।
वैशाखशुक्ल षष्ठ्यां पुनर्वसुऋक्षे निहत्यकर्मरजः।
अवशेषं संप्रापद्व्यजरामरमक्षयं सौख्यम्।।17।।
परिनिर्वृत्तं जिनेन्द्र ज्ञात्वा विबुधहृयथासु चागम्य।
देवतरु रक्त चंदन कालागरु सुरभिगोशीर्षैः।।18।।
अग्नीन्द्राज्जिन देहं मुकुटानल सुरभि धूपवर माल्यैः।
अभ्यर्च्य गणधरानपिगता दिवं खं च वनभवने।।19।।

इत्येवं भगवति अभिनंदन चंद्रे, यः स्तोत्रं पठति सुसंध्ययोर्द्वयोर्हि।
सोऽनंतं परम सुखं नृदेव लोके, भुक्त्वान्ते शिवपदमक्षयं प्रयाति।।20।।
यत्रार्हतां गणभृतां श्रुतपारगाणां, निर्वाण भूमिरिह भारतवर्ष जानाम्।
तामद्य शुद्धमनसा क्रियया वचोभिः, संस्तोतुमुद्यतमतिः परिणौमि भक्त्या।।21।।

माल्यानि वाक्स्तुतिमयैः कुसुमैः सुदृब्धा, न्यादाय मानसकरैरभितः किरन्तः।
पर्येम आदृतियुता भगवन्निषद्याः, संप्रार्थिता वयमिमे परमां गतिं ताः।।22।।
शत्रुञ्जये नगवरे दमितारिपक्षाः, पण्डोः सुताः परमनिर्वृतिमभ्युपेताः।
तुंग्यां तु संग रहितो बलभ्रदनामा, नद्यास्तटे जितरिपुश्च सुवर्णभद्रः।।23।।
द्रोणीमति प्रबल कुण्डल मेढ्के च, वैभार पर्वततले वर सिद्धकूटे।
ऋष्याद्रिके च विपुलाद्रि बलाहके च, विन्ध्ये च पोदनपुरे वृषदीपके च।।24।।
सह्याचले च हिमवत्यपि सुप्रतिष्ठे, दण्डात्मके गजपथे पृथुसारयष्टौ।
ये साधवोहतमलाः सुगतिं प्रयाताः, स्थानानि तानि जगति प्रथितान्यभूवन्।।25।।
इक्षोर्विकार रसपृक्त गुणेनलोके पिष्टोऽधिकं मधुरतामुपयातियद्वत्।
तद्वच्च पुण्यपुरुषै रुषितानि नित्यं, स्थानानि तानि जगतामिह पावनानि।।26।।
इत्यर्हतां शमवतां च महामुनीनां, प्रोक्तामयात्र परिनिर्वृत्ति भूमिदेशाः।
ते मे जिना जितभया मुनयश्च शांताः, दिश्यासुराशु सुगतिं निरवद्य सौख्याम्।।32।।

क्षेपक श्लोक

शान्ति कुन्थ्वर कौरव्या यादवौ नेमिसुव्रतौ।
उग्रनाथौ पार्श्ववीरौ शेषा इक्ष्वाकुवंशजाः।।

अचंलिका

इच्छामि भंते! परिणिव्वाण भत्ति काउस्सग्गो कओ तस्सालोचेउं इमम्मिचउत्थ समयस्स मज्झिमे भाए णवदि लक्ख कोडी सागरोवम वस्स हीणे वासचउक्कम्मि सेसकालम्मि सम्मेए पव्वए वैसाख मासस्स सुक्क छट्टीए पुव्वण्हे पुण्णवसुणक्खत्ते पच्चूसे भयवदो अहिंणदणजिणो सिद्धिं गदो। तिसुविलोएसु, भवण वासिय-वाणविंतर, जोयसिय कप्पवासियत्ति चउव्विहादेवा सपरिवारा दिव्वेण ण्हाणेण, दिव्वेण गंधेण दिव्वेण अक्खेण, दिव्वेण पुप्फेण दिव्वेण चुण्णेण, दिव्वेण दीवेण, दिव्वेणधूवेण, दिव्वेणवासेण, णिच्चकालं अच्चंति पुज्जंति, वंदंति, णमंसंति, परिणिव्वाण महाकल्लाण पुज्जं करंति। अहमवि इह संतो तत्था संताइयं णिच्चकालं, अंचेमि पुज्जेमि, वंदामि, णमस्सामि, दुक्खक्खओ, कम्मक्खओ बोहिलाओ सुगईगमणं, समाहि-मरणं जिणगुण संपत्ति होउ मज्झं।

श्री अभिनन्दन जिन पूजा–4

स्थापना

अभिनन्दन जिन राज का, करते हम आह्वान।
शिव पद हमको दो प्रभू, पाएँ जीवन दान।।

ॐ ह्रीं श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(सुखमा छन्द)

क्षीर सिन्धु से जल भर लाए, रोग त्रय मेरा नश जाए।
अन्दर में हम भक्ति जगाएँ, सिद्ध शिला पर धाम बनाएँ।।1।।

ॐ ह्रीं श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

चन्दन केसर संग घिसाए, भवाताप के नाश को आए।
अन्दर में हम भक्ति जगाएँ, सिद्ध शिला पर धाम बनाएँ।।2।।

ॐ ह्रीं श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय भवाताप विनाशनाय चंदनं निर्व. स्वाहा।

अक्षत अक्षय यहाँ चढ़ाएँ, अक्षय पदवी को हम पाएँ।।
अन्दर में हम भक्ति जगाएँ, सिद्ध शिला पर धाम बनाएँ।।3।।

ॐ ह्रीं श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्व. स्वाहा।

सुरभित पुष्प चढ़ा हर्षाएँ, काम रोग से मुक्ती पाएँ।
अन्दर में हम भक्ति जगाएँ, सिद्ध शिला पर धाम बनाएँ।।4।।

ॐ ह्रीं श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

सद्य चरू से पूज रचाएँ, क्षुधा रोग को पूर्ण नशाएँ।
अन्दर में हम भक्ति जगाएँ, सिद्ध शिला पर धाम बनाएँ।।5।।

ॐ ह्रीं श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

रत्नमयी शुभ दीप जलाएँ, मोह महातम शीघ्र नशाएँ।
अन्दर में हम भक्ति जगाएँ, सिद्ध शिला पर धाम बनाएँ।।6।।

ॐ ह्रीं श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।

अग्नी में शुभ धूप जलाएँ, अष्ट कर्म से मुक्ती पाएँ।
अन्दर में हम भक्ति जगाएँ, सिद्ध शिला पर धाम बनाएँ।।7।।

ॐ ह्रीं श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्व. स्वाहा।

ताजे श्रेष्ठ सरस फल लाएँ, पूजा कर शिव पदवी पाएँ।
अन्दर में हम भक्ति जगाएँ, सिद्ध शिला पर धाम बनाएँ।।8।।

ॐ ह्रीं श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्व. स्वाहा।

अर्घ्य चढ़ाकर जिन गुण गाएँ, पद अनर्घ्य हम भी पा जाएँ।
अन्दर में हम भक्ति जगाएँ, सिद्ध शिला पर धाम बनाएँ।।9।।

ॐ ह्रीं श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पञ्चकल्याणक के अर्घ्य

(सखी छन्द)

वैशाख शुक्ल छठ आई, रत्नों की झड़ी लगाई।
जब गर्भ में प्रभु जी आए, तव मात पिता हर्षाए।।1।।

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्ला षष्ठ्म्यां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बारस सित माघ बताई, जनता सारी हर्षाई।
जन्मोत्सव इन्द्र मनाए, जयकारा सभी लगाए।।2।।

ॐ ह्रीं माघशुक्ला द्वादश्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सित माघ द्वादशी जानो, संयम धारे प्रभु मानो।
वन में जा संयम धारे, तब देव किए जयकारे।।3।।

ॐ ह्रीं माघशुक्ला द्वादश्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चौदश सित पौष की गाई, प्रभु ज्ञान की कली खिलाई।
सब दिव्य देशना पाए, जिन धर्म की धार बहाए।।4।।

ॐ ह्रीं पौषशुक्ला चतुर्दश्यां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वैशाख सुदी छठ जानो, शिव पद पाए प्रभु मानो।
सम्मेद शिखर शुभ गाया, आनन्द कूट मन भाया।।5।।

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्ला षष्ठ्म्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री अभिनंदननाथजी की टोंक (आनन्द कूट)

श्री सम्मेद शिखर की जय हो, मुक्त हुए जिनवर की जय हो।
उस धरती अंबर की जय हो, दुखहारी गिरवर की जय हो।।
सोरठा– आनंद कूट महान्, अभिनंदन जिनराज की।
बंदर है पहिचान, अतिशय जिन का है बड़ा।।
श्री जिनेन्द्र का वंदन करते, अपनी कर्म कालिमा हरते।
जागे अब सौभाग्य हमारा, मिले चरण का मुझे सहारा।।
मिल जाए हमको नाथ पावन, चरण की अनुपम शरण।
हम भक्ति से करते हैं भगवन्, चरण में शत्-शत् नमन्।।
हम शरण में आए प्रभु, यह वंदना स्वीकार हो।
है भावना अंतिम विशद मम्, आत्म का उद्धार हो।।
चलो-चलो रे-2 सभी नर नार, तीर्थ के दर्शन को।
कटते हैं कर्म अपार, चलो रे भाई वंदन को।।1।।

ॐ ह्रीं निर्वाणकल्याणकमण्डित श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

हे अभिनन्दन! आनन्द धाम, आनन्द कूट से शिव पाए।
आनन्द प्राप्त करने प्रभु जी, हम भी तव चरणों में आए।।
हम भक्त आपके गुण गाकर, यह अनुपम अर्घ्य चढ़ाते हैं।
हे नाथ! आपके चरणों में हम, सादर शीश झुकाते हैं।।
दोहा– अभिनंदन तव चरण में, वन्दन मेरा त्रिकाल।
भक्त आपको पूजकर, होते मालामाल।।2।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित आनन्द कूट से श्री अभिनन्दन तीर्थंकरादि बहत्तर कोड़ा-कोड़ी सत्तर करोड़ सत्तर लाख ब्यालीस हजार सात सौ मुनि मोक्ष पधारे तिनके चरणारविन्द में अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कोड़ा-कोड़ी रहे बहत्तर, सत्तर कोटी सत्तर लाख।
सहस ब्यालिस सप्तशतक मुनि, भक्त करें जिन पर अनुराग।।
कूटानन्द का वन्दन करके, जीवों में होता आनन्द।
पूजा करके भक्ति भाव से, हो जाते प्राणी निर्द्वन्द।।3।।

ॐ ह्रीं श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्रादि द्वासप्तति कोडाकोडी सप्तति कोडी सप्तति लक्ष द्विचत्वारिंशत् सहस्त्र सप्तशतक मुनीश्वरेभ्यो नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा– अभिनन्दन वन्दन करें, चरण आपके दास।
जयमाला गाते चरण, पाने मुक्ती वास।।

(आल्हाछन्द)

अभिनन्दन प्रभु के चरणों में, माथा इन्द्र झुकाते हैं।
संवर पितु सिद्धार्था माता, के जो बाल कहाते हैं।।1।।
नगर अयोध्या जन्म लिए तब, इन्द्र ऐरावत ले आया।
पाण्डुक शिला पे न्हवन कराके, बन्दर लक्षण बतलाया।2।।
पचास लाख पूरब की आयू, देह स्वर्णमय शुभकारी।
साढ़े तीन सौ धनुष ऊँचाई, सहस्त्राष्ट लक्षण धारी।।3।।
सहस भूप सह दीक्षा पाए, दो दिन बाद लिए आहार।
नगर अयोध्या इन्द्रदत्त नृप, के गृह वरषे रत्न अपार।।4।।
गणधर एक सौ तीन आपके, वज्रनाभि के गणी प्रधान।
राक्षेश्वर था यक्ष आपका, यक्षी वज्र शृंखला जान।।5।।
कूटानन्द से तीर्थराज पर, खड्गासन से मोक्ष प्रयाण।
'विशद' मोक्ष पद पाए प्रभुजी, करने वाले जग कल्याण।।6।।

दोहा– शिवपद पाया आपने, आठों कर्म विनाश।
मुक्ती पाएँ हम प्रभू, कर दो पूरी आस।।

ॐ ह्रीं श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– बनकर आये भक्त हम, प्रभू आपके द्वार।
करना होगा भक्त को, हे प्रभु! भव से पार।।

।।इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

श्री सुमतिनाथ निर्वाण भक्ति–5

विबुधपति खगपतिनरपति, धनदोरगभूतयक्षपति महितम्।
अतुलसुखविमलनिरूपम शिवमचलमनामयं हि संप्राप्तम्॥1॥
कल्याणैः संस्ताष्ये पंचभिरनघं त्रिलोक परम गुरुम्।
भव्यजनतुष्टि जननैर्दुरवापैः श्री सुमति जिनं भक्त्या॥2॥
श्रावण शुक्ल द्वितीयायां मघा ऋक्षे मध्यमाश्रिते शशिनि।
आयातः स्वर्ग सुखं भुक्त्वा ग्रैवेयकाधीशः॥3॥
मेघरथः नृपति तनयो भारतवास्ये विनीतानगरे।
देव्यां प्रियमंगलायां सुस्वप्नान् संप्रदर्श्य विभुः॥4॥
वैशाखमघा ऋक्षे पितृयोगे शुभ दिने दशम्यां।
जो स्वोच्चस्थेषु ग्रहेषु सोम्येषु शुभलग्ने॥5॥
मघाश्रिते पितृयोगे वैशाख कृष्ण दशमी दिवसे।
पूर्वाण्हे रत्नघटैर्विबुधेन्द्राश्चक्रुरभिषेकम्॥6॥
भुक्त्वा कुमारकाले दशलक्ष पूर्वानंत गुणराशिः।
अमरोपनीत भोगान् जातिस्मरणबोधितोत्वरितः॥7॥
नानाविधरुपचितां विचित्रकूटोच्छ्रितां मणि विभूषाम्।
अभयनामाख्य शिविकामारूह्य पुराद्विनिः क्रान्तः॥8॥
वैशाख शुक्ल नवम्यां मघा भानि मध्यमाश्रिते सोमे।
अष्टेनतु पूर्वाण्हे च भक्तेन जिनः प्रवव्राज॥9॥
ग्रामपुर खेट कर्वट मटंब घोषाकरान्प्रविजहार।
उग्रैस्तपोविधानैः विंशति वर्षाण्यमरैः पूज्यः॥10॥
सहेतुक वनस्यमध्ये प्रयंगुद्रुम संश्रिते शिलापट्टे।
अपराण्हे षष्ठेनस्थितस्य खलु अयोध्या ग्रामे॥11॥
चैत्रशुक्लैकादश्यां मघा भानि मध्यमाश्रिते चंद्रे।
क्षपक श्रेण्यारूढस्योत्पन्नं केवलज्ञानम्॥12॥
छत्राशोकौ घोषं सिंहासन दुंदुभिकुसुमवृष्टिम।
वरचामर भामण्डल दिव्यान्यन्यानि चावापत्॥13॥
दशविधमनगाराणामेकादशधोत्तरं तथा धर्मम्।
देशयमानो व्यवहरं लक्षोनपूर्वाण्यथजिनेंद्रः॥14॥

अथ भगवान् संप्रापद् दिव्यं सम्मेद पर्वतं रम्यम्।
चातुर्वर्ण्य सुसंघस्तत्राभूद् वज्रनामरप्रभृति॥15॥
पद्मवनदीर्घिकाकुल विविध द्रुमखण्डमंडिते रम्ये।
अविचल कूटोद्याने व्युत्सर्गेण स्थितः स मुनिः॥16॥
चैत्रशुक्लैकादश्यां मघानक्षत्रे निहत्यकर्मरजः।
अवशेषं संप्रापद्व्यजरामरमक्षयं सौख्यम्॥17॥
परिनिर्वृत्तं जिनेन्द्रं ज्ञात्वा विबुधह्यथासु चागम्य।
देवतरु रक्त चंदन कालागरु सुरभिगोशीर्षैः॥18॥
अग्नीन्द्राज्जिन देहं मुकुटानल सुरभि धूपवर माल्यैः।
अभ्यर्च्य गणधरानपिगतादिवं खं च वनभवने॥19॥
इत्येवं भगवति सुमतिजिन चंद्रे, यः स्तोत्रं पठति सुसंध्ययोर्द्वयोर्हि।
सोऽनंतं परम सुखं नृदेव लोको, भुक्त्वान्ते शिवपदमक्षयं प्रयाति॥20॥
यत्रार्हतां गणभृतां श्रुतपारगाणां, निर्वाण भूमिरिह भारतवर्षजानाम्।
तामद्य शुद्धमनसा क्रियया वचोभिः, संस्तोतुमुद्यतमतिः परिणौमि भक्त्या॥21॥
माल्यानि वाक्स्तुतिमयैः कुसुमैः सुदृब्धा, न्यादाय मानस करैरभितः किरन्तः।
पर्येम आदृतियुता भगवन्निषद्याः, संप्रार्थिता वयमिमे परमां गतिं ताः॥22॥
शत्रुञ्जये नगवरे दमितारिपक्षाः, पण्डोः सुताः परमनिर्वृतिमभ्युपेताः।
तुंग्यां तु संगरहितो बलभद्रनामा, नद्यास्तटे जितरिपुश्च सुवर्णभद्रः॥23॥
द्रोणीमति प्रबल कुण्डल मेढ्के च, वैभार पर्वततले वर सिद्धकूटे।
ऋष्याद्रिके च विलुलाद्रि बलाहके च, विन्ध्ये च पोदनपुरे वृषदीपके च॥24॥
सह्याचले च हिमवत्यपि सुप्रतिष्ठे, दण्डात्मके गजपथे पृथुसारयष्टौ।
ये साधवोहतमलाः सुगंति प्रयाताः, स्थानानि तानि जगति प्रथितान्यभूवन्॥25॥
इक्षोर्विकार रसपृक्त गुणेनलोके पिष्टोऽधिकं मधुरतामुपयातियद्वत्।
तद्वच्च पुण्यपुरुषै रुषितानि नित्यं, स्थानानि तानि जगतामिह पावनानि॥26॥
इत्यर्हतां शमवतां च महामुनीनां प्रोक्तामयात्र परिनिर्वृत्ति भूमिदेशाः।
ते मे जिना जितभया मुनयश्च शांताः, दिश्यासुराशु सुगतिं निरवद्य सौख्याम्॥27॥

क्षेपक श्लोक

शान्ति कुन्थ्वर कौरव्या यादवौ नेमिसुव्रतौ।
उग्रनाथौ पार्श्ववीरौ शेषा इक्ष्वाकुवंशजाः॥

अंचलिका

इच्छामि भंते! परिणिव्वाण भत्ति काउस्सग्गो कओ तस्सालोचेउं इमम्मिचउत्थ समयस्य मज्झिमे भाए णव णवदि लक्ख कोडि सागरोवम वस्स हीणे वासचउक्कम्मि सेसकालम्मि सम्मेए पव्वए चैत मासस्स सुक्क एकादसीए मघा णक्खत्ते पच्चूसे भयवदो सुमतिजिणो सिद्धिं गदो। तिसुविलोएसु, भवण वासिय-वाणविंतर, जोयसिय कप्पवासियत्ति चउव्विहादेवा सपरिवारा दिव्वेण ण्हाणेण, दिव्वेण गंधेण, दिव्वेण अक्खेण, दिव्वेण पुप्फेण, दिव्वेण चुण्णेव दिव्वेण दीवेण, दिव्वेणधूवेण, दिव्वेणवासेण, णिच्चकालं अच्चंतिं पुज्जंति, वदंति, णमंसंति, परिणिव्वाण महाकल्लाण पुज्जं करंति। अहमवि इह संतो तत्थ संताइयं णिच्चकालं, अंच्चेमि पुज्जेमि, वंदामि, णमस्सामि, दुक्खक्खओ, कम्मक्खओ बोहिलाओ सुगईगमणं, समाहि-मरणं जिणगुण संपत्ति होउ मज्झं।

श्री सुमतिनाथ जिन पूजा–5

स्थापना

दोहा– सुमतिनाथ के पद युगल, झुका रहे हम माथ।
आह्वानन् करते हृदय, ऊपर करके हाथ।।

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्र! अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(मोतियादाम छन्द)

चढ़ाने लाये हम यह नीर, मिटाने जन्म जरा की पीर।
प्राप्त हो हमको शिव सोपान, शीघ्र पद पाएँ हम निर्वाण।।1।।

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

चढ़ाते सुरभित गंध विशेष, नाश कर भवाताप तीर्थेश।
प्राप्त हो हमको शिव सोपान, शीघ्र पद पाएँ हम निर्वाण।।2।।

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय भवाताप विनाशनाय चंदनं निर्व. स्वाहा।

चढ़ाते अक्षत धवल महान, पाएँ हम अक्षय पद भगवान।
प्राप्त हो हमको शिव सोपान, शीघ्र पद पाएँ हम निर्वाण।।3।।

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्व. स्वाहा।

चढ़ाने लाए सुरभित फूल, पूर्ण हो काम रोग निर्मूल।
प्राप्त हो हमको शिव सोपान, शीघ्र पद पाएँ हम निर्वाण।।4।।

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

चढ़ाते यह नैवेद्य जिनेश, नाश हो क्षुधा रोग अवशेष।
प्राप्त हो हमको शिव सोपान, शीघ्र पद पाएँ हम निर्वाण।।5।।

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

करें हम दीप से यहाँ प्रकाश, शीघ्र हो मोह महातम नाश।
प्राप्त हो हमको शिव सोपान, शीघ्र पद पाएँ हम निर्वाण।।6।।

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।

जलाते अग्नी में यह धूप, कर्म नश पाएँ सिद्ध स्वरूप।
प्राप्त हो हमको शिव सोपान, शीघ्र पद पाएँ हम निर्वाण।।7।।

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

चढ़ाते फल हम हे भगवान!, मोक्ष फल पाएँ प्रभू महान।
प्राप्त हो हमको शिव सोपान, शीघ्र पद पाएँ हम निर्वाण।।8।।

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्व. स्वाहा।

बनाया अष्ट द्रव्य का अर्घ्य, चढ़ाते पाने सुपद अनर्घ्य।
प्राप्त हो हमको शिव सोपान, शीघ्र पद पाएँ हम निर्वाण।।9।।

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पञ्चकल्याणक के अर्घ्य

(चौपाई)

श्रावण शुक्ला द्वितिया पाए, सुमतिनाथ जी गर्भ में आए।
माँ को सोलह स्वप्न दिखाए, मात पिता के भाग्य जगाए।।1।।

ॐ ह्रीं श्रावणशुक्ला द्वितीयायां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चैत शुक्ल एकादशि गाई, सुमतिनाथ जिन मंगलदायी।
जन्मे तीन ज्ञान के धारी, इन्द्र किए तब उत्सव भारी।।2।।

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्ला एकादश्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नौमी सित वैशाख बताई, संयम धारे जिस दिन भाई।
प्रभु वैराग की ज्योति जगाई, मुनिपद की तब बारी आई।।3।।

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्ला नवम्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चैत सुदी ग्यारस शुभ पाए, केवलज्ञान प्रभू प्रगटाए।
समवशरण आ देव बनाए, दिव्य देशना आप सुनाए।।4।।

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्ला एकादश्यां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ग्यारस चैत शुक्ल की गाई, सुमतिनाथ ने मुक्ती पाई।
शिव पथ को तुमने अपनाया, सिद्ध शिला पर धाम बनाया।।5।।

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्ला एकादश्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रीसुमतिनाथजी की टोंक (अविचल कूट)

श्री सम्मेद शिखर की जय हो, मुक्त हुए जिनवर की जय हो।
उस धरती अंबर की जय हो, दुखहारी गिरवर की जय हो।।

सोरठा– आनंद कूट महान्, अभिनंदन जिनराज की।
बंदर है पहिचान, अतिशय जिन का है बड़ा।।

श्री जिनेन्द्र का वंदन करते, अपनी कर्म कालिमा हरते।
जागे अब सौभाग्य हमारा, मिले चरण का मुझे सहारा।।
मिल जाए हमको नाथ पावन, चरण की अनुपम शरण।
हम भक्ति से करते हैं भगवन्, चरण में शत्-शत् नमन्।।
हम शरण में आए प्रभु, यह वंदना स्वीकार हो।
है भावना अंतिम विशद मम्, आत्म का उद्धार हो।।
चलो-चलो रे-2 सभी नर नार, तीर्थ के दर्शन को।
कटते हैं कर्म अपार, चलो रे भाई वंदन को।।1।।

ॐ ह्रीं निर्वाणकल्याणकमण्डित श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

हे सुमतिनाथ! तुमने जग को, शुभमति दे शिवपद दान किया।
भक्तों को तुमने करुणायुत, होकर सौभाग्य प्रदान किया।।
हम भक्त आपके गुण गाकर, यह अनुपम अर्घ्य चढ़ाते हैं।
हे नाथ! आपके चरणों में हम, सादर शीश झुकाते हैं।।2।।

दोहा– कुमति विनाशक आप हो, सुमति नाथ भगवान।
हमको भी हे नाथ! अब, कर दो सुमति प्रदान।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित अविचल कूट से श्री सुमतिनाथ तीर्थंकरादि एक कोड़ा-कोड़ी चौरासी करोड़ बहत्तर लाख, इक्यासी हजार सात सौ मुनि मोक्ष पधारे तिनके चरणारविन्द में अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कोड़ा-कोड़ी रहे बहत्तर, सत्तर कोटी सत्तर लाख।
सहस ब्यालिस सप्तशतक मुनि, भक्त करें जिन पर अनुराग।।
कूटानन्द का वन्दन करके, जीवों में होता आनन्द।
पूजा करके भक्ति भाव से, हो जाते प्राणी निर्द्वन्द।।3।।

ॐ ह्रीं श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्रादि द्वासप्तति कोडाकोडी सप्तति कोडी सप्तति लक्ष द्विचत्वारिंशत् सहस्र सप्तशतक मुनीश्वरेभ्यो नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा– पूजा करते भाव से, भक्ती धार विशेष।
गुणमाला गाते यहाँ, भव नश जाएँ अशेष।।

(शम्भू छन्द)

सुमतिनाथ तीर्थंकर पञ्चम, पञ्चम गति प्रगटाए हैं।
अन्तिम ग्रीवक से च्युत होकर, जन्म अयोध्या पाए है।।1।।
मात मंगला सोलह सपने, देख हुई थी भाव विभोर।
पिता मेघरथ के गृह खुशियाँ, अनुपम छाई चारों ओर।।2।।
अष्ट देवियों को माता की, सेवा का अवसर आया।
पाण्डुक शिला पे न्हवन कराने, का सौभाग्य इन्द्र पाया।।3।।
चकवा चिन्ह आपके पद में, धनुष तीन सौ ऊँचाई।
चालिस लाख पूर्व की आयु, देह स्वर्ण सम शुभ गाई।।4।।
पूर्व भवों का चिन्तन करके, प्रभु वैराग्य जगाए थे।

पञ्च महाव्रत धारण करके, मुनिवर दीक्षा पाए थे।।5।।
कर्म घातिया नाश किए प्रभु, केवलज्ञान जगाया है।
भवि जीवों ने दिव्य देशना, का अवसर शुभ पाया है।।6।।

दोहा– योग रोधकर आपने, किया आत्म का ध्यान।
मुक्त हुए संसार से, शिवपुर किया प्रयाण।
ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– रत्नत्रय निधि प्राप्त कर, हुए त्रिलोकी नाथ।
'विशद' शांति कर दीजिए, चरण झुकाते माथ।।

।।इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

श्री पद्मप्रभु निर्वाण भक्ति–6

विबुधपति खगपतिनरपतिधनदोरगभूतयक्षपतिमहितम्।
अतुलसुखविमलनिरुपम शिवमचलमनामयं हि संप्राप्तम्।।1।।
कल्याणैः संस्तोष्ये पंचभिरनघं त्रिलोक परम गुरुम्।
भव्यजनतुष्टि जननैर्दुरवापैः पद्मप्रभुं भक्त्या।।2।।
माघमासासित षष्ठ्यां चित्राभानि मध्यमाश्रिते शशिनि।
आयातः स्वर्ग सुखं भुक्त्वा वैजयंताधीशः।।3।।
श्रीधरण नृपति तनयो भारतवास्ये कौशाम्बीनगरे।
देव्यां प्रियसुसीमायां सुस्वप्नान् संप्रदर्श्य विभुः।।4।।
कार्तिक वदि चित्रायां पितृयोगे शुभ दिने त्रयोदश्याम्।
जज्ञे स्वोच्चस्थेषु ग्रहेषु सोम्येषु शुभलग्ने।।5।।
चित्राश्रिते शशांके कार्तिक कृष्णे त्रयोदशी दिवसे।
पूर्वाण्हे रत्नघटैर्विबुधेन्द्राश्चक्रुरभिषेकम्।।6।।
भुक्त्वा कुमार काले बहुलक्ष पूर्वानंत गुणराशिः।
अमरोपनीत भोगान् जातिस्मरणबोधितोत्वरितः।।7।।
नानाविधरूपचितां विचित्रकूटोच्छ्रितां मणि विभूषाम्।
निर्वृत्तिकाख्य शिविकामारूह्य पुराद्विनिः क्रान्तः।।8।।
मार्ग कृष्ण दशम्यां चित्रा भा मध्यमाश्रिते सोमे।
अष्टेनत्वपराण्हे च भक्तेन जिनः प्रवव्राज।।9।।
ग्रामपुर खेट कर्वट मटंब घोषाकरान्प्रविजहार।

उग्रैस्तपोविधानैः खलु षण्मासान्यमरैः पूज्यः।।10।।
मनोहरवनस्यमध्ये प्रियंगुद्रुम संश्रिते शिलापट्टे।
अपराण्हे षष्ठेनस्थितस्य खलु कोशाम्बी ग्रामे।।11।।
चैत्रसित पूर्णिमायां चित्रा भा मध्यमाश्रिते चंद्रे।
क्षपक श्रेण्यारूढस्योत्पन्नं केवलज्ञानम्।।12।।
छत्राशोकौ घोषं सिंहासन दुंदुभिकुसुमवृष्टिम्।
वरचामर भामण्डल दिव्यान्यन्यानि चावापत्।।13।।
दशविधमनगाराणमेकादशधोत्तरं तथा धर्मम्।
देशयमानो व्यवहरं खलु लक्ष पूर्वाण्यथजिनेद्रः।।14।।
अथ भगवान् संप्रापद् दिव्यं सम्मेद पर्वतं रम्यम्।
चातुर्वर्ण्य सुसंघस्तत्राभूद् वज्रगणप्रभूति।।15।।
पद्मवनदीर्घिकाकुल विविध द्रुमखण्डमंडिते रम्ये।
मोहन कूटोद्याने व्युत्सर्गेण स्थितः स मुनिः।।16।।
फाल्गुनकृष्ण चतुर्थ्यां चित्राऋक्षे निहत्यकर्मरजः।
अवशेषं संप्रापद्व्यजरामरमक्षयं सौख्यम्।।17।।
परिनिर्वृत्तं जिनेन्द्रं ज्ञात्वा विबुधह्यथासु चागम्य।
देवतरु रक्त चंदन कालागरु सुरभिगोशीर्षैः।।18।।
अग्नीन्द्राज्जिन देहं मुकुटानल सुरभि धूपवर माल्यैः।
अभ्यर्च्य गणधरानपिगतादिवं खं च वनभवने।।19।।
इत्येवं भगवति पद्मप्रभु चंद्रे, यः स्तोत्रं पठति सुसंध्ययोर्द्वयोर्हि।
सोऽनंतं परम सुखं नृदेव लोके, भुक्त्वाते शिवपदमक्षयं प्रयाति।।20।।
यत्रार्हतां गणभृतां श्रुतपारगाणां, निर्वाण भूमिरिह भारतवर्ष जानाम्।
तामद्य शुद्धमनसा क्रियया वचोभिः, संस्तोतुमुद्यतमतिः परिणौमि भक्त्या।।21।।
माल्यानि वाक्स्तुतिमयैः कुसुमैः सुदृब्धा, न्यादाय मानस करैरभितः किरन्तः।
पर्येम आदृतियुता भगवन्निषद्याः, संप्रार्थिता वयमिमे परमां गतिं ताः।।22।।
शत्रुञ्जये नगवरे दमितारिपक्षाः, पण्डोः सुताः परमनिर्वृत्तिमभ्युदपेताः।
तुंग्यां तु संग रहितो बलभद्रनामा, नद्यास्तटे जितरिपुश्च सुवर्णभद्रः।।23।।
द्रोणीमति प्रबल कुण्डल मेढ्रके च, वैभार पर्वततले वर सिद्धकूटे।
ऋष्याद्रिके च विपुलाद्रि बलाहके च, विन्ध्ये च पोदनपुरे वृषदीपके च।।24।।
सह्याचले च हिमवत्यपि सुप्रतिष्ठे, दण्डात्मके गजपथे पृथुसारयष्टौ।
ये साधवोहतमलाः सुगतिं प्रयाताः, स्थानानि तानि जगति प्रथितान्यभूवन्।।25।।

इक्षोर्विकार रस पृक्त गुणेनलोके पिष्टोऽधिकं मधुरतामुपयातियद्वत्।
तद्वच्च पुण्यपुरुषै रुषितानि नित्यं, स्थानानि तानि जगतामिह पावनानि॥26॥
इत्यर्हतां शमवतां च महामुनीनां, प्रोक्तामयात्र परिनिर्वृत्ति भूमिदेशाः।
ते मे जिना जितभया मुनयश्च शांताः, दिश्यासुराशु सुगतिं निरवद्य सौख्याम्॥27॥

क्षेपक श्लोक

शान्ति कुन्थ्वर कौरव्या यादवौ नेमिसुव्रतौ।
उग्रनाथौ पार्श्ववीरौ शेषा इक्ष्वाकुवंशजाः॥

अंचलिका

इच्छामि भंते। परिणिव्वाण भत्ति काउस्सग्गौ कओ तस्सालोचेउं इमम्मिचउत्थ समयस्य मज्झिमे भाए णव णवदि लक्ख कोडी णवदि सहस्स कोडि सागरोवम वस्स हीणे वासचउक्कम्मि सेसकालम्मि सम्मेए पव्वए फागुण किण्ह चउत्थीए पुव्वण्हे चित्ताए णक्खत्ते पच्चूसे भयवदो पम्मजिणो सिद्धिं गदो। तिसुविलोएसु, भवणवासिय-वाणविंतर, जोयसिय कप्पवासियत्ति चउव्विहादेवा सपरिवारा दिव्वेण ण्हाणेण, दिव्वेण गंधेण, दिव्वेण अक्खेण, दिव्वेण पुप्फेण, दिव्वेण-चुण्णेण दिव्वेण दीवेण, दिव्वेणधूवेण, दिव्वेणवासेण, णिच्चकालं अच्चतिं पुज्जंति, वंदंति, णमंसंति, परिणिव्वाण महाकल्लाण पुज्जं करेंति। अहमवि इह संतो तत्थ संताइयं णिच्चकालं, अंच्चेमि पुज्जेमि, वंदामि, णमस्समि, दुक्खक्खओ, कम्मक्खओ बोहिलाहो सुगईगमणं, समाहि-मरणं जिणगुण संपत्ति होउ मज्झं।

श्री पद्मप्रभु पूजा–6

स्थापना

पद्म प्रभु ने पद्म सम, धार लिया वैराग।
तिष्ठाते निज हृदय में, करके पद अनुराग॥

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(सखी छन्द)

हम निर्मल नीर चढ़ाएँ, जन्मादी रोग नशाएँ।
प्रभु भक्ती हृदय जगाएँ, इस भव से मुक्ती पाएँ॥1॥

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

चन्दन यह घिसकर लाए, भवताप नशाने आए।
प्रभु भक्ती हृदय जगाएँ, इस भव से मुक्ती पाएँ॥2॥

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय भवाताप विनाशनाय चंदनं निर्व. स्वाहा।

अक्षत यह यहाँ चढ़ाएँ, हम अक्षय पदवी पाएँ।
प्रभु भक्ती हृदय जगाएँ, इस भव से मुक्ती पाएँ॥3॥

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्व. स्वाहा।

यह सुरभित पुष्प चढ़ाएँ, हम काम बाण विनसाएँ।
प्रभु भक्ती हृदय जगाएँ, इस भव से मुक्ती पाएँ॥4॥

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

नैवेद्य चढ़ा हर्षाएँ, हम क्षुधा से मुक्ती पाएँ।
प्रभु भक्ती हृदय जगाएँ, इस भव से मुक्ती पाएँ॥5॥

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

घृत के यह दीप जलाए, मम मोह नाश हो जाए।
प्रभु भक्ती हृदय जगाएँ, इस भव से मुक्ती पाएँ॥6॥

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।

अग्नी में धूप जलाएँ, हम आठों कर्म नशाएँ।
प्रभु भक्ती हृदय जगाएँ, इस भव से मुक्ती पाएँ॥7॥

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल यह पूजा को लाए, शिव फल पाने हम आए।
प्रभु भक्ती हृदय जगाएँ, इस भव से मुक्ती पाएँ॥8॥

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

वसु द्रव्य का अर्घ्य बनाए, पाने अनर्घ्य पद आए।
प्रभु भक्ती हृदय जगाएँ, इस भव से मुक्ती पाएँ॥9॥

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पञ्चकल्याणक के अर्घ्य

चौपाई

गर्भ चिन्ह माँ के उर आये, देव रत्न वृष्टी करवाए।
माघ कृष्ण पष्ठी शुभ गाई, उत्सव देव किए सुखदायी।।1।।

ॐ ह्रीं माघकृष्णा षष्ठम्यां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कार्तिक कृष्ण त्रयोदशि पाए, सुर नर इन्द्र सभी हर्षाए।
जन्मोत्सव मिल इन्द्र मनाए, आनन्दोत्सव श्रेष्ठ कराए।।2।।

ॐ ह्रीं कार्तिक कृष्णा त्रयोदश्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कार्तिक वदि तेरस शुभकारी, संयम धार हुए अनगारी।
मन में प्रभु वैराग्य जगाए, जग जंजाल छोड़ वन आए।।3।।

ॐ ह्रीं कार्तिकवदि त्रयोदश्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चैत शुक्ल की पूनम पाए, विशद ज्ञान प्रभु जी प्रगटाए।
धर्म देशना आप सुनाए, इस जग को सत्पथ दिखलाए।।4।।

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्ला पूर्णिमायां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

फाल्गुन शुक्ल चतुर्थी भाई, के दिन प्रभु ने मुक्ती पाई।
अपने सारे कर्म नशाए, तज संसार वास शिव पाए।।5।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णा चतुर्थ्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री पदमप्रभुजी की टोंक (मोहन कूट)

श्री सम्मेद शिखर की जय हो, मुक्त हुए जिनवर की जय हो।
उस धरती अंबर की जय हो, दुखहारी गिरवर की जय हो।।
सोरठा– मोहन कूट प्रसिद्ध, है तीनों ही लोक में।
हुए जिनेश्वर सिद्ध, पद्मप्रभु जी जहाँ से।।

हे त्याग मूर्ति! करुणा निधान! हे धर्म दिवाकर तीर्थंकर!।
हे ज्ञान सुधाकर तेज पुंज!, सन्मार्ग दिवाकर करुणाकर!।।
हे परमब्रह्म! हे पद्मप्रभु! हे भूप! श्री धर के नंदन!।
हम अष्ट द्रव्य से करते हैं प्रभु, भाव सहित उर से अर्चन।।
हे नाथ! हमारे अंतर में, आकर के धीर बंधा जाओ।
हम भूल भटके भक्तों को, प्रभुवर सन्मार्ग दिखा जाओ।।
चलो-चलो रे-2 सभी नर नार, तीर्थ के दर्शन को।
कटते हैं कर्म अपार, चलो रे भाई वंदन को।।1।।

ॐ ह्रीं निर्वाणकल्याणकमण्डित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

दर्श ज्ञान चारित्र पद्मप्रभु, पाकर पाये केवलज्ञान।
कर्म कालिमा को विनाशकर, पाया शिवपुर में स्थान।।
चरण वन्दना करने हेतू, अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं।
अर्चा करने आज यहाँ पर, बहुत दूर से आए हैं।।2।।
दोहा– पद्म प्रभु के दर्श से, होता है अति हर्ष।
सद्गुण का भवि जीव के, होता है उत्कर्ष।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशखिर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित मोहन कूट से श्री पदमप्रभु तीर्थंकरादि निन्यानवे कोड़ा-कोड़ी सत्तासीलाख तियालीस हजार सात सौ, सत्ताईस मुनि मोक्ष पधारे तिनके चरणारविन्द में अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कोड़ि निन्यानवे लाख सतासी, मुनिवर तैंतालिस हज्जार।
सात सौ सत्तावन भी जानों, मुक्ती पाए मंगलकार।।
सुविधिनाथ अरु मुनिसुव्रत के, मध्य रहा यह कूट महान।
श्यामवर्ण के चरणा शोभते, मोहनकूट है जिसका नाम।।3।।

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्रादि नवनवति कोडी सप्ताशीलि लक्ष त्रिचत्वारिंशत् सहस्र सप्त शतक सप्तनवति मुनीश्वरेभ्यो नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा– पद्मासन पद में पदम, पद्म प्रभु भगवान।
जयमाला गाते विशद, पाने शिव सोपान।।

(मानव छन्द)

चरण में भक्ती से शत् इन्द्र, झुकाते प्रभु चरणों में शीश।
कहाए पद्मप्रभु भगवान, जगत में जगती पति जगदीश।।1।।
अनुत्तर वैजयन्त से आप, चये कौशाम्बी नगरी आन।
धरण नृप रही सुसीमा माता, गर्भ में कीन्हे आप प्रयाण।।2।।
दाहिने पग में कमल का चिन्ह, इन्द्र ने देख दिया शुभ नाम।
कराए न्हवन मेरु पे इन्द्र, चरण में कीन्हे सभी प्रणाम।।3।।
जगा प्रभु के मन में वैराग, सकल संयम धर हुए मुनीश।
ऋद्धियाँ प्रगटी अपने आप, अतः कहलाए आप ऋशीष।4।।
स्वयंभू बनकर के भगवान, जगाए अनुपम केवलज्ञान।
रचाएँ समवशरण तब देव, रहा विधि का कुछ यही विधान।।5।।
पूर्ण कर आयू कर्म अशेष, किए सब कर्मो का प्रभु नाश।
समय इक में सिद्धालय जाय, वहाँ पर कीन्हे आप निवास।।6।।

दोहा– प्रभु अनन्त ज्ञानी हुए, गुण अनन्त की खान।
गुण गाते निज भाव से, मिले मुक्ति का यान।।

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– इन्द्रिय जेता आप हो, बने आप भगवान।
अतः इन्द्र शत आपका, करें 'विशद' गुणगान।।

।।इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

श्री सुपार्श्वनाथ निर्वाण भक्ति–7

विबुधपति खगपतिनरपति धनदोरगभूतयक्षपतिमहितम्।
अतुलसुखविमल निरुपम् शिवमचलमनामयं हि संप्राप्तम्।।1।।
कल्याणैः संस्तोष्ये पंचभिरनघं त्रिलोकपरमगुरुम्।
भव्यजनतुष्टि जननैर्दुरवापैः श्री सुपार्श्वजिनं भक्त्या।।2।।
भाद्र शुक्ल पक्ष षष्ठ्यां विशाखा भा मध्यमाश्रिते शशिनि।
आयातः स्वर्ग सुखं भुक्त्वा ग्रैवेयकाधीशः।।3।।
सुप्रतिष्ठ नृपति तनयो भारतवास्ये वाराणसीनगरे।

देव्यां प्रियपृथ्व्यां तु सुस्वप्नान संप्रदर्श्य विभुः।।4।।
ज्येष्ठसित विशाखायां अनिलायोगे द्वादश्यां दिवसे।
जो स्वोच्चस्थेषु ग्रहेषु सोम्येषु शुभलग्ने।।5।।
विशाखाश्रिते शशांके ज्येष्ठाज्योत्स्ने द्वादश्यां दिवसे।
पूर्वाण्हे रत्नघटैर्विबुधेन्द्राश्चक्रुरभिषेकम्।।6।।
भुक्त्वा कुमार काले पंचलक्ष पूर्वानंत गुणराशिः।
अमरोपनीत भोगान् जातिस्मरणबोधितोत्वरितः।।7।।
नानाविधरूपचितां विचित्रकूटोच्छ्रितां मणि विभूषाम्।
सुमनोज्ञाख्या शिविकामारूह्य पुराद्विनिः क्रान्तः।।8।।
ज्येष्ठसित द्वादश्यां विशाखा मध्यमाश्रिते सोमे।
षष्ठेन त्वपराण्हे भक्तेन जिनः प्रवव्राज।।9।।
ग्रामपुर खेट कर्वट मटंब घोषाकरान्प्रविजहार।
उग्रैस्तपोविधानैः च नव वर्षाण्यमरैः पूज्यः।।10।।
सहेतुक वनस्यमध्ये शिरीषद्रुम संश्रिते शिलापट्टे।
अपराण्हे षष्ठेनस्थितस्य खलु वाराणसी ग्रामे।।11।।
फाल्गुन कृष्ण षष्ठ्यां विशाखा भा मध्यमाश्रिते चंद्रे।
क्षपक श्रेण्यारूढस्योत्पन्नं केवलज्ञानम्।।12।।
छत्राशोकौ घोषं सिंहासन दुंदुभिकुसुमवृष्टिम्।
वरचामर भामण्डल दिव्यान्यन्यानि चावापत्।।13।।
दशविधमनगाराणामेकादशधोत्तरं तथा धर्मम्।
देशयमानो व्यवहरं खलु लक्षोन पूर्वाण्यथजिनेंद्रः।।14।।
अथ भगवान् संप्रापद् दिव्यं सम्मेद पर्वतं रम्यम्।
चातुर्वर्ण्य सुसंघस्त्राभूद् वज्रनाभिप्रभृति।।15।।
पद्मवनदीर्घिकाकुल विविध द्रुमखण्डमंडिते रम्ये।
प्रभास कूटोद्याने व्युत्सर्गेण स्थितः स मुनिः।।16।।
फाल्गुन कृष्णे सप्तम्यां अनुराधाऋक्षे निहत्यकर्मरजः।
अवशेषं संप्रापद्व्यजरामरमक्षयं सौख्यम्।।17।।
परिनिर्वृत्तं जिनेन्द्र ज्ञात्वा विबुधहृयथासु चागम्य।
देवतरु रक्त चंदन कालागरु सुरभिगोशीर्षैः।।18।।
अग्नीन्द्रज्जिन देहं मुकुटानल सुरभि धूपवर माल्यैः।
अभ्यर्च्य गणधरानपिगतादिवं खं च वनभवने।।19।।

इत्येवं भगवति सुपार्श्वजिन चंद्रे, यः स्तोत्रं पठति सुसंध्ययोर्द्वयोर्हि।
सो–नंतं परम सुखं नृदेव लोके, भुक्त्वान्ते शिवपदमक्षयं प्रयाति।।20।।
यत्रार्हतां गणभृतां श्रुतपारगाणां, निर्वाण भूमिरिह भारतवर्ष जानाम्।
तामद्य शुद्धमनसा क्रियया वचोभिः, संस्तोतुमुद्यतमतिः, परिणौममि भक्त्या।।21।।
माल्यानि वाक्स्तुतिमयैः कुसुमैः सुदृब्धा, न्यादाय मानस करैरभितः किरन्तः।
पर्येम आदृतियुता भगवन्निषद्याः, संप्रार्थिता वयमिमे परमां गतिं ताः।।22।।
शत्रुञ्जये नगवरे दमितारिपक्षाः, पण्डोः सुताः परमनिर्वृतिमभ्युपैताः।
तुंग्यां तु संगरहितो बलभद्रनामा, नद्यास्तटे जितरिपुश्च सुवर्णभद्रः।।23।।
द्रोणीमति प्रबल कुण्डल मेढ्रके च, वैभार पर्वततले वर सिद्धकूटे।
ऋष्याद्रिके च विपुलाद्रि बलाहके च, विन्ध्ये च पोदनपुरे वृषदीपके च।।24।।
सह्याचले च हिमवत्यपि सुप्रतिष्ठे, दण्डात्मके गजपथे पृथुसारयष्टौ।
ये साधवोहतमलाः सुगतिं प्रयाताः, स्थानानि तानि जगति प्रथितान्यभूवन्।।25।।
इक्षोर्विकार रसपृक्त गुणेनलोके पिष्टोऽधिकं मधुरतामुपयातियद्वत्।
तद्वच्च पुण्यपुरुषै रुषितानि नित्यं, स्थानानि तानि जगतामिह पावनानि।।26।।
इत्यर्हतां शमवतां च महामुनीनां, प्रोक्तामयात्र परिनिर्वृत्ति भूमिदेशाः।
ते मे जिना जितभया मुनयश्च शांताः, दिश्यासुराशु सुगतिं निरवद्य सौख्याम्।।27।।

क्षेपक श्लोक

शान्ति कुन्थ्वर कौरव्या यादवौ नेमिसुव्रतौ।
उग्रनाथौ पार्श्ववीरौ शेषा इक्ष्वाकुवंशजाः।।

अंचलिका

इच्छामि भंते! परिणिव्वाण भत्ति काउस्सग्गो कओ तस्सालोचेउं इमम्मिचउत्थ समयस्स मज्झिमे भाए णव णवदि लक्ख कोडि णव णवदि सहस्स कोडि सागरोवम तिण्णि कोडि छत्तीस लक्ख पुव्व वस्स हीणे वासचउक्कम्मि सेसकालम्मि सम्मेए पव्वए फागुण मासस्स किण्ह सत्तमीए पुव्वण्हे अणुराहाए णक्खत्ते पच्चूसे भयवदो सुपासजिणो सिद्धिं गदो। तिसुविलोएसु, भवण वासिय-वाणविंतर, जोसिय कप्पवासियत्ति चउव्विहादेवा सपरिवारा दिव्वेण ण्हाणेण, दिव्वेण गंधेण, दिव्वेणअक्खेण, दिव्वेण पुप्फेण, दिव्वेण चुण्णेण, दिव्वेण दीवेण, दिव्वेण धूवेण, दिव्वेण वासेण णिच्चकालं अच्चंति

पुज्जंति वंदंति, णमंसंति, परिणिव्वाण महाकल्लाण पुज्जं करंति। अहमवि इह संतो तत्थ संताइयं णिच्चकालं, अचेंमि, पुज्जेमि, वंदामि, णमस्सामि, दुक्खक्खओ, कम्मक्खओ बोहिलाहो सुगईगमणं, समाहि-मरणं जिणगुण संपत्ति होउ मज्झं।

श्री सुपार्श्वनाथ जिन पूजा–7

स्थापना

जिन सुपार्श्व का दर्श कर, जागे उर श्रद्धान।
आओ तिष्ठो मम हृदय, करते हम आह्वान।।

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(चौपाई छन्द)

शीतल जल भरके हम लाए, जिन पद में त्रयधार कराए।
पूज रहे तव पद हम स्वामी, जिन सुपार्श्व हे! अन्तर्यामी।।1।।

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

चन्दन यह भवताप नशाए, अर्चा करने को हम लाए।
पूज रहे तव पद हम स्वामी, जिन सुपार्श्व हे! अन्तर्यामी।।2।।

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय भवाताप विनाशनाय चंदनं निर्व. स्वाहा।

अक्षत यहाँ चढ़ाने लाए, अक्षय पद पाने हम आए।
पूज रहे तव पद हम स्वामी, जिन सुपार्श्व हे! अन्तर्यामी।।3।।

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्व. स्वाहा।

पुष्प लिए यह मंगलकारी, काम रोग के नाशनकारी।
पूज रहे तव पद हम स्वामी, जिन सुपार्श्व हे! अन्तर्यामी।।4।।

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

चरु से जिन पद पूज रचाते, विशद भाव से महिमा गाते।
पूज रहे तव पद हम स्वामी, जिन सुपार्श्व हे! अन्तर्यामी।।5।।

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

घृत का जगमग दीप जलाए, मोह नाश मेरा हो जाए।
पूज रहे तव पद हम स्वामी, जिन सुपार्श्व हे! अन्तर्यामी।।6।।

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।

सुरभित धूप जला हर्षाएँ, अष्टकर्म से मुक्ती पाएँ।
पूज रहे तव पद हम स्वामी, जिन सुपार्श्व हे! अन्तर्यामी।।7।।

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्व. स्वाहा।

फल यह चढ़ा रहे शुभकारी, मुक्ती पद दायक मनहारी।
पूज रहे तव पद हम स्वामी, जिन सुपार्श्व हे! अन्तर्यामी।।8।।

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्व. स्वाहा।

अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाएँ, पद अनर्घ्य पाके शिव जाएँ।
पूज रहे तव पद हम स्वामी, जिन सुपार्श्व हे! अन्तर्यामी।।9।।

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पञ्चकल्याणक के अर्घ्य

(सखी छन्द)

षष्ठी सित भादों पाए, प्रभु स्वर्ग से चयकर आए।
उत्सव सब देव मनाए, जिन गृह आके हर्षाए।।1।।

ॐ ह्रीं भाद्रपक्षशुक्ला षष्ठम्यां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्वादशी जेठ सित गाई, जन्मे सुपार्श्व जिन भाई।
जन्मोत्सव इन्द्र मनाए, जिनवर का न्हवन कराए।।2।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठशुक्ला द्वादशां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्वादशी जेठ सित स्वामी, संयम धारे जगनामी।
वैराग्य हृदय में छाया, भोगों से मन अकुलाया।।3।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठशुक्ला द्वादश्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

फाल्गुन वदि छठी निराली, फैलाए ज्ञान की लाली।
अज्ञान के मेघ हटाए, केवल रवि जिन प्रगटाए।।4।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णा षष्ठम्यां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

फाल्गुन वदि सातें जानो, जिन वर शिव पाए मानो।
सम्मेद शिखर से स्वामी, प्रभु बने मोक्ष पथगामी।।5।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णा सप्तयां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री सुपार्श्वनाथजी की टोंक (प्रभास कूट)

श्री सम्मेद शिखर की जय हो, मुक्त हुए जिनवर की जय हो।
उस धरती अंबर की जय हो, दुखहारी गिरवर की जय हो।।

सोरठा– पावन कूट प्रभास, जिन सुपार्श्व का जानिए।
पाए मुक्तिवास, योग रोध करके सभी।।

जन्म बनारस नगरी पाया, हरित रंग थी जिनकी काया।
मन में जब वैराग्य समाया, छोड़ चले सब जग की माया।।
माया जगत् में कर्म का, बंधन कराती है अरे।
यह कर्म उसको न बंधे, जो धर्म का पालन करे।।
हम शरण में आए प्रभु, यह वंदना स्वीकार हो।
है भावना अंतिम विशद मम्, आत्म का उद्धार हो।।
चलो-चलो रे-2 सभी नर नार, तीर्थ के दर्शन को।
कटते हैं कर्म अपार, चलो रे भाई वंदन को।।1।।

ॐ ह्रीं निर्वाणकल्याणकमण्डित श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवर सुपार्श्व ने संयम धर, निज को निहाल कर डाला है।
प्रभु के चरणाम्बुज का दर्शन, शुभ शिव पद देने वाला है।।
हम भक्त आपके गुण गाकर, यह अनुपम अर्घ्य चढ़ाते हैं।
हे नाथ! आपके चरणों में, हम सादर शीश झुकाते हैं।।2।।

दोहा– जिसने सुपार्श्व का भाव से, किया 'विशद' गुणगान।
अल्प समय में जीव वह, होवें प्रभु समान।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित प्रभास कूट से श्री सुपार्श्वनाथ तीर्थंकरादि उनचास कोड़ा-कोड़ी चौरासी करोड़ बहत्तर लाख सात हजार सात सौ ब्यालीस मुनि मोक्ष पधारे तिनके चरणारविन्द में अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उनन्चास कोड़ा कोड़ी अरु, कोड़ि चुरासी जैन मुनीश।
लाख बहत्तर शतक सात अरु, सप्त शतक ब्यालीश ऋषीश॥
फल उपवास बत्तिस कोड़ी का, किए वन्दना होवे प्राप्त।
अनुक्रम से शिव पथ के राही, बनकर के होते हैं आप्त॥3॥

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्रादि एकोनपंचाशत कोडाकोडी चतुरशीति कोडी द्वासप्तति लक्ष सप्त सहस्र सप्तशतक द्विचरवारिंशद मुनीश्वरेभ्यो नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा– नाथ सुपारस आपकी, गाए जो जयमाल।
भक्ति जगाए निज हृदय, होवे वही निहाल॥

(ताटंक छन्द)

मध्यम ग्रीवक से चय प्रभु ने, नगर बनारस जन्म लिया।
सुप्रतिष्ठ राजा पृथ्वीमति, माँ को तुमने धन्य किया॥1॥
जन्मोत्सव पर शत् इन्द्रों ने, मेरु पे न्हवन कराया था।
स्वस्तिक चिन्ह देख सुरपति ने, नाम सुपार्श्व बताया था॥2॥
तीस लाख पूरव की आयू, तन का वर्ण हरित पाए।
दो सौ धनुष रही ऊँचाई, सहस्राष्ठ शुभगुण गाए॥3॥
पतझड़ देख भावना भाके, प्रभु वैराग्य जगाए थे।
अनुमोदन करने लौकान्तिक, ब्रह्म स्वर्ग से आए थे॥4॥
मनोगती ले देव पालकी, प्रभु को वन में पहुँचाए।
सर्व परिग्रह त्याग प्रभु जी, मुनिवर की दीक्षा पाए॥5॥
उत्तम तप का कर्म नाश प्रभु, केवल ज्ञान जगाए हैं।
समवशरण में दिव्य देशना, गणधर सुर नर पाए हैं॥6॥

दोहा– तीर्थराज सम्मेद पर, जानो कूट प्रभास।
कर्म नाश शिवपुर गये, किया जहाँ पर वास॥

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– भक्तिभाव से भक्त जो, करते प्रभु गुण गान।
अल्प समय में जीव वह, पाते पद निर्वाण।

॥इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्॥

श्री चन्द्रप्रभु निर्वाण भक्ति–8

विबुधपति खगपतिनरपति धनदोरगभूतयक्षपतिमहिमतम्।
अतुलसुखविमल निरुपम शिवमचलमनामयं हि संप्राप्तम्॥1॥
कल्याणैः संस्तोष्ये पंचभिरनघं त्रिलोक परम गुरुम्।
भव्यजनतुष्टि जननैर्दुरवापैः श्री चंद्रप्रभु जिनं भक्त्या॥2॥
चैत्रकृष्ण पंचम्यां ज्येष्ठा भा मध्यमाश्रिते शशिनि।
आयातः स्वर्ग सुखं भुक्त्वा वैजयंताधीशः॥3॥
महासेन नृपति तनयो भारतवास्ये चंद्रपुरी नगरे।
देव्यां प्रियलक्ष्मणायां सुस्वप्नान् संप्रदर्श्य विभुः॥4॥
पौषवदिः अनुराधायां अनिलायोगे दिने एकादश्याम्।
जज्ञे स्वोच्चस्थेषु ग्रहेषु सोम्येषु शुभलग्ने॥5॥
अनुराधाया शशांके पौषकृष्ण एकादशी दिवसे।
पूर्वाण्हे रत्नघटैर्विबुधेन्द्राश्चक्रुरभिषेकम्॥6॥
भुक्त्वा कुमार काले बहुलक्ष पूर्वानंत गुणराशिः।
अमरोपनीत भोगान् वज्रनाशबोधितोत्वरितः॥7॥
नानाविधरूपचितां विचित्रकूटोच्छ्रितां मणि विभूषाम्।
विमलाख्या शिविकामारूह्य पुराद्विनिः क्रान्तः॥8॥
पौष कृष्ण द्वादश्यां अनुराधा भा मध्यमाश्रिते सोमे।
षष्ठेनत्वपराण्हे भक्तेन जिनः प्रवव्राज॥9॥
ग्रामपुर खेट कर्वट मटंब घोषाकरानप्रविजहार।
उग्रैस्तपोविधानै च नवति दिनान्यमरैः पूज्यः॥10॥
सर्वार्थारण्यमध्ये नागद्रुम संश्रिते शिलापट्टे।
अपराण्हे षष्ठेनस्थितस्य खलु चंद्रपुरी ग्रामे॥11॥
फाल्गुन कृष्ण सप्तम्यां अनुराधा मध्यमाश्रिते चंद्रे।
क्षपक श्रेण्यारूढस्योत्पन्नं केवलज्ञानम्॥12॥
छत्राशोकौ घोषं सिंहासन दुंदुभिकुसुमवृष्टिम्।
वरचामर भामण्डल दिव्यान्यन्यानि चावापत्॥13॥
दश विधमनगाराणामेकादशधोत्तरं तथा धर्मम्।
देशयमानो व्यवहरं खलु पूर्वाण्यथ जिनेद्रः॥14॥
अथ भगवान् संप्रापद् दिव्यं सम्मेद पर्वतं रम्यम्।

चातुर्वर्ण्य सुसंघस्त्राभूद वैदर्भ प्रभृति।।15।।
वनौषधि दीर्घिकाकुल विधिद्रुमखण्डमंडिते रम्ये।
ललित कूटोद्याने व्युत्सर्गेण स्थितः स मुनिः।।16।।
फाल्गुन कृष्ण सप्तमयां ज्येष्ठाऋक्षे निहत्यकर्मरजः।
अवशेषं संप्रापद्व्यजरामरमक्षयं सौख्यम्।।17।।
परिनिर्वृत्तं जिनेन्द्र ज्ञात्वा विबुधह्यथासु चागम्य।
देवतरु रक्त चंदन कालागरु सुरभिगोशीर्षैः।।18।।
अग्नीन्द्राज्जिन देहं मुकुटानल सुरभि धूपवर माल्यैः।
अभ्यर्च्य गणधरानपिगतादिवं खं च वनभवने।।19।।
इत्येवं भगवति चंद्रप्रभु जिनं चंद्रे, यः स्तोत्रं पठति सुसंध्ययोर्द्वयोर्हि।
सोऽनंतं परम सुखं नृदेव लोके, भुक्त्वान्ते शिवपदमक्षयं प्रयाति।।20।।
यत्रार्हतां गणभृतां श्रुतपारगाणां, निर्वाण भूमिरिह भारतवर्ष जानाम्।
तामद्य शुद्धमनसा क्रियया वचोभिः, संस्तोतुमुद्यतमतिः परिणौमि भक्त्या।।21।।
माल्यानि वाक्स्तुतिमयैः कुसुमैः सुदृब्धा, न्यादाय मानस करैरभितः किरन्तः।
पर्येम आदृतियुता भगवनिन्नषद्याः, सुप्रार्थिता वयमिमे परमां गतिं ताः।।22।।
शत्रुञ्जये नगवरे दमितारिपक्षाः, पण्डोः सुताः परमनिर्वृतिमभ्युपेताः।
तुंग्यां तु संगरहितो बलभद्रनामा, नद्यास्तटे जितरिपुश्च सुवर्णभद्रः।।23।।
द्रोणीमति प्रबल कुण्डल मेढ्के च, वैभार पर्वततले वर सिद्धकूटे।
ऋष्याद्रिके च विपुलाद्रि बलाहके च, विन्ध्ये च पोदनपुरे वृषदीपके च।।24।।
सह्याचले च हिमवत्यपि सुप्रतिष्ठे, दण्डात्मके गजपथे पथुसार यष्टौ।
ये साधवोहतमलाः सुगतिं प्रयाताः, स्थानानि तानि जगति प्रथितान्यभूवन्।।25।।
इक्षोर्विकार रसपृक्त गुणेनलोके पिष्टोऽधिकं मधुरतामुपयातियद्वत्।
तद्वच्च पुण्यपुरुषै रुषितानि नित्यं, स्थानानि तानि जगतामिह पावनानि।।26।।
इत्यर्हतां शमवतां च महामुनीनां, प्रोक्तामयात्र परिनिर्वृत्ति भूमिदेशाः।
ते मे जिना जितभया मुनयश्च शांताः, दिश्यासुराशुसुगतिं निरवद्य सौख्यम्।।27।।

क्षेपक श्लोक

शान्ति कुन्थ्वर कौरव्या यादवौ नेमिसुव्रतौ।
उग्रनाथौ पार्श्ववीरौ शेषा इक्ष्वाकुवंशजाः।।

अंचलिका

इच्छामि भंते! परिणिव्वाण भत्ति काउस्सग्गो कओ तस्सालोचेउं इमम्मिचउत्थ समयस्य मज्झिमे भाए णव णविद लक्ख कोडि णव णवदि सहस्स कोडि णवसद कोडि सागरोवम वस्स हीणे

वासचउक्कम्मि सेसकालम्मि सम्मेए पव्वए फागुण मासस्य किण्ह सत्तमीए पुव्वण्हे जेट्ठे णक्खेत्ते भयवदो चंदजिणो सिद्धिं गदो। तिसुविलोएसु, भवण वासिय-वाणविंतर, जोयसिय कप्पवासियत्ति चउव्विहादेवा सपरिवारा दव्वेण ण्हाणेण, दिव्वेण गंधेण, दिव्वेणअक्खेण, दव्वेण पुप्फेण, दिव्वेण चुण्णेण, दिव्वेण दीवेण, दिव्वेण धूवेण, दिव्वेण वासेण णिच्चकालं अच्चंति पुज्जंति, वंदंति, णमंससंति, परिणिव्वाण महाकल्लाण पुज्जं करंति। अहमवि इह संतो तत्थ संताइयं णिच्चकालं, अंच्चेमि, पुज्जेमि, वंदामि, णमस्सामि, दुक्खक्खओ, कम्मक्खओ बोहिलाहो सुगईगमणं, समाहि-मरणं जिणगुण संपत्ति होउ मज्झं।

श्री चन्द्रप्रभु जिन पूजा–8

स्थापना

सोरठा–कांती चन्द्र समान, चन्द्र प्रभु भगवान की।
भाव सहित आह्वान, हृदय कमल में आपका।।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(चाल टप्पा)

निर्मल जल यह प्रासुक करके, हम लाए भाई।
जन्म जरादी रोग नाश हो, जो है दुखदायी।।
पूजते हम जिन पद भाई।
जिन अर्चा करने वालों ने ही मुक्ती पाई।।1।। पूजते...

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

चन्दन में केसर की खुशबू, अतिशय महकाई।
भवाताप हो नाश हमारा, चर्च रहे भाई।।
पूजते हम जिन पद भाई।
जिन अर्चा करने वालों ने ही मुक्ती पाई।।2।। पूजत...

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय भवाताप विनाशनाय चंदनं निर्व. स्वाहा।

अक्षय अक्षत धवल मनोहर, लाए हर्षाई।
अक्षय पद पाएँ हम जिसकी, फैली प्रभुताई॥
पूजते हम जिन पद भाई।
जिन अर्चा करने वालों ने ही मुक्ती पाई॥3॥ पूजते...

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्व. स्वाहा।

सुरभित पुष्पों ने इस जग में, महिमा दिखलाई।
जिन भक्तों ने काम रोग से, भी मुक्ती पाई।
पूजते हम जिन पद भाई।
जिन अर्चा करने वालों ने ही मुक्ती पाई॥4॥ पूजते...

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

ताजे यह नैवेद्य बनाए, हमने सुखदायी।
क्षुधा रोग हो नाश हमारा, महिमामय भाई॥
पूजते हम जिन पद भाई।
जिन अर्चा करने वालों ने ही मुक्ती पाई॥5॥ पूजते...

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

रत्नमयी शुभ घी के दीपक, अनुपम प्रजलाई।
महामोह तम जिन अर्चा से, क्षण में नश जाई।
पूजते हम जिन पद भाई।
जिन अर्चा करने वालों ने ही मुक्ती पाई॥6॥ पूजते...

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।

धूप अग्नि में खेने से शुभ, धूम उड़े भाई।
नशें कर्म आठों अब मेरे, जो है दुखदायी।
पूजते हम जिन पद भाई।
जिन अर्चा करने वालों ने ही मुक्ती पाई॥7॥ पूजते...

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रेष्ठ सरस ताजे फल लाए, पावन सुखदायी
महामोक्ष फल पाय जिसकी, फैली प्रभुताई॥
पूजते हम जिन पद भाई।
जिन अर्चा करने वालों ने ही मुक्ती पाई॥8॥ पूजते...

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाए, हमने शुभ भाई।
पद अनर्घ्य पाने हम आए, मन में हर्षाई॥
पूजते हम जिन पद भाई।
जिन अर्चा करने वालों ने ही मुक्ती पाई॥9॥ पूजते...

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पञ्चकल्याणक के अर्घ्य

(चालछन्द)

पाँचे वदि चैत निराली, जिन गृह में छाई लाली।
गर्भागम देव मनाए, जिन माँ के गर्भ में आए॥1॥

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णा पंचम्यां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वदि पौष एकादशि आई, सारी जगती हर्षाई।
सुर जन्म कल्याण मनाएँ, सब ताण्डव नृत्य कराएँ॥2॥

ॐ ह्रीं पौषकृष्णा एकादश्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वदि पौष एकादशि पाए, जिनवर वैराग्य जगाए।
क्षण भंगुर यह जग जाना, निजका स्वरूप पहचाना॥3॥

ॐ ह्रीं पौषकृष्णा एकादश्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

फागुन वदि सातें जानो, प्रभु हुए केवली मानो।
सुर समवशरण बनवाए, जग को सन्मार्ग दिखाए॥4॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णा सप्तम्यां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

फागुन सुदि सातें पाई, मुक्ती वधु जो परणाई।
प्रभु सारे कर्म नशाए, शिवपुर में धाम बनाए॥5॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनशुक्ल सप्तम्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री चन्द्रप्रभजी की टोक (ललित कूट)

श्री सम्मेद शिखर की जय हो, मुक्त हुए जिनवर की जय हो।
उस धरती अंबर की जय हो, दुखहारी गिरवर की जय हो॥

सोरठा– ललित कूट है श्रेष्ठ, जिसकी पूजा हम करें।
पाए धर्म यथेष्ठ, चन्द्रप्रभु जिनदेव जी।।

हे चन्द्रप्रभो! हे चन्द्रानन!, महिमा महान् मंगलकारी।
तुम चिदानंद आनंद कंद, दु:ख द्वंद फंद संकटहारी।।
हे वीतराग! जिनराज परम, हे परमेश्वर! जग के त्राता।
हे मोक्ष महल के अधिनायक!, हे स्वर्ग मोक्ष सुख के दाता!।।
मेरे मन के इस मंदिर में, हे नाथ! कृपाकर आ जाओ।
हम पूजन करते भाव सहित, मुझको सद्राह दिखा जाओ।।
चलो-चलो रे-2 सभी नर नार, तीर्थ के दर्शन को।
कटते हैं कर्म अपार, चलो रे भाई वंदन को।।1।।

ॐ ह्रीं निर्वाणकल्याणकमण्डित श्री चन्द्रनाथ जिनेन्द्राय नम: अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्द्र कान्ति सम चन्द्रनाथ जी, शोभित होते आभावान।
ललित कूट से मुक्ती पाए, शिवपुर दाता हैं भगवान।।
चरण वन्दना करने हेतू, अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं।
अर्चा करते आज यहाँ, पर बहुत दूर से आए हैं।।2।।

दोहा– उज्ज्वल गुण धरचन्द्र प्रभु, उज्ज्वलता के कोष।
सर्व कर्म क्षय कर हुए, प्रभू आप निर्दोष।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित ललित कूट से श्री चन्द्रप्रभु तीर्थंकरादि नौ सौ चौरासी अरब बहत्तर करोड़ अस्सी लाख चौरासी हजार पाँच सौ पचानवे मुनि मोक्ष पधारे तिनके चरणारविन्द में अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अरब रहे नौ सौ चौरासी, द्वादश कोड़ि असीती लाख।
सहस चुरासी पाँच सौ पंचानवे, मुनिवर कीन्हे कर्म विनाश।।
छियानवे लाख उपवासों का फल, वन्दन करके पाते जीव।
मोक्षमार्ग पर बढ़ने हेतू, प्राप्त करें सब पुण्य अतीव।।3।।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रनाथ जिनेन्द्रादि नव खरब चतुरशीति अरब द्वादश कोडी अशीति लक्ष चतुरशीति सहस्त्र पंचशतक पंच नवति मुनीश्वरेभ्यो नम: अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा– भक्ती से भवि जीव का, कटे कर्म जंजाल।
मुक्ती पाने के लिए, गाते हैं जयमाल।।

(चाल टप्पा)

जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र में, चन्द्र पुरी गाई।
वैजयन्त से चयकर माँ के, गर्भ आए भाई।।
चन्द्र प्रभ जिन मंगलदायी।
जिनकी अर्चा कर जीवों ने, मुक्ति श्री पाई।।1।।
चन्द्र प्रभ जिन मंगलदायी।
गर्भागम पूरा होने पर, जन्म घड़ी आई।
न्हवन कराया शत् इन्द्रो ने, जग मंगलदायी।।2।।
चन्द्र प्रभ जिन मंगलदायी।
दायें पग में अर्धचन्द्र शुभ, लक्षण है भाई।
आयू लाख पूर्व दश की प्रभु, पाए सुखदायी।।3।।
चन्द्र प्रभ जिन मंगलदायी।
धवल रंग था धनुष डेढ़ सौ, प्रभु की ऊँचाई।
तड़ित चमकता देख प्रभू ने, जिन दीक्षा पाई।।4।।
चन्द्र प्रभ जिन मंगलदायी।
कर्म घातिया नाश प्रभू ने, ज्ञान निधी पाई।
धन कुबेर ने समवशरण की, रचना बनवाई।।5।।
चन्द्र प्रभ जिन मंगलदायी।

दोहा– आत्म ध्यान करके प्रभू, कीन्हे कर्म विनाश।
शिव नगरी में जा किया, सिद्ध शिला पर वास।।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– भक्ती करते भक्तगण, होके भाव विभोर।
शिव पद के राही बनें, बढ़े मोक्ष की ओर।।

।।इत्याशीर्वाद: पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

पुष्पदंत जिन निर्वाण भक्ति–9

विबुधपति खगपतिनरपति धनदोरगभूतयक्ष पतिमहितम्।
अतुलसुखविमल निरुपम शिवमचलमनामयं हि संप्राप्तम्।।1।।

कल्याणैः संस्तोष्ये पंचभिरनघं त्रिलोक परमगुरुम्।
भव्यजनतुष्टि जननैदुरवापैः श्री सुविधिजिनं भक्त्या॥2॥
फाल्गुन कृष्ण नवम्यां मूलऋक्षे मध्यमाश्रिते शशिनि।
आयातः स्वर्ग सुखं भुक्त्वा अपराजिताधीशः॥3॥
सुग्रीव नृपति तनयो भारतवास्ये काकंदी नगरे।
देव्यां प्रियरामायां सुस्वप्नान् संप्रदर्श्य विभुः॥4॥
मार्गशीर्षसित मूलेभालैब्रयोगे दिने नवम्याम्।
जज्ञे स्वोच्चस्थेषु ग्रहेषु सोम्येषु शुभलग्ने॥5॥
मूलसित लैब्रयोगे मार्गशीर्ष नवमी दिवसे।
पूर्वाण्हे रत्नघटैर्विबुधेन्द्राश्चक्रुरभिषेकम्॥6॥
भुक्त्वा कुमार काले सहस्रवर्षाण्यनंत गुणराशिः।
अमरोपनीत भोगान् उल्कापाताभिनिबोधितोत्वरितः॥7॥
नानाविधरूपचितां विचित्रकूटोच्छ्रिता मणि विभूषाम्।
सूर्यप्रभाख्या शिविकामारूह्य पुराद्विनिः क्रान्तः॥8॥
मार्गशीर्षसित नवम्यां अनुराधामध्यमाश्रिते सोमे।
षष्ठेन त्वपराण्हे भक्तेन जिनः प्रवव्राज॥9॥
ग्रामपुर खेट कर्वट मटंब घोषाकरान्प्रविजहार।
उग्रैस्तपोविधानै चातुर्वर्षाण्यमरैः पूज्यः॥10॥
पुष्पारण्यस्यमध्ये अक्षद्रुम संश्रिते शिलापट्टे।
अपराण्हे षष्ठेनस्थितस्य खलु काकंदी ग्रामे॥11॥
कार्तिकसित मूलऋक्षे द्वितीयायां मध्यमाश्रिते चंद्रे।
क्षपक श्रेण्यारूढस्योत्पन्नं केवलज्ञानम्॥12॥
छत्राशोकौ घोषं सिंहासन दुंदुभिकुसुमवृष्टिम्।
वरचामर भामण्डल दिव्यान्यन्यानि चावापत्॥13॥
दश विधमनगाराणमेकादशधोत्तरं तथा धर्मम्।
देशयमानो व्यवहरं खलु लक्षपूर्वाण्यथ जिनेंद्रः॥14॥
अथ भगवान् संप्रापद् दिव्यं सम्मेद पर्वतं रम्यम्।
चातुर्वर्ण्य सुसंघस्त्राभूद् अनगार प्रभृति॥15॥
वनौषधिदीर्घिकाकुल विविधद्रुमखण्डमंडिते रम्ये।
सुप्रभकूटोद्याने व्युत्सर्गेण स्थितः स मुनिः॥16॥
भाद्र शुक्ल अष्टम्यां मूलनक्षेत्रे निहत्यकर्मरजः।
अवशेषं संप्रापद्व्यजरामरमक्षयं सौख्यम्॥17॥

परिनिर्वृत्तं जिनेन्द्रं ज्ञात्वा विबुधाह्यथासु चागम्या।
देवतरु रक्त चंदन कालागरु सुरभिगोशीर्षैः॥18॥
अग्नीन्द्राज्जिन देहं मुकुटानल सुरभि धूपवर माल्यैः।
अभ्यर्च्य गणधरानपिगतादिवं खं च वनभवने॥19॥

इत्येवं भगवति पुष्पदंत जिनं चंद्रे, यः स्तोत्रं पठति सुसंध्ययोर्द्वयोर्हि
सोऽनंतं परम सुखं नृदेव लोके, भुक्त्वान्ते शिवपदमक्षयं प्रयाति॥20॥
यत्रार्हतां गणभृतां श्रुतपारगाणां, निर्वाण भूमिरिह भारतवर्ष जानाम्।
तामद्य शुद्धमनसा क्रियया वचोभिः, संस्तोतुमुद्यतमतिः परिणौमि भक्त्या॥21॥
माल्यानि वाक्स्तुतिमयैः, कुसुमैः सुदृब्धा, न्यादाय मानस करैरभितः किरन्तः।
पर्येम आदृतियुता भगवन्निषद्याः, संप्रार्थिता वयमिमे परमां गतिं तांः॥22॥
शत्रुञ्जये नगवरे दमितारिपक्षाः, पण्डोः सुताः परमनिर्वृतिमभ्युपेताः।
तुंग्यां तु संगरहितो बलभद्रनामा, नद्यास्तटे जितरिपुश्च सुवर्णभद्रः॥23॥
द्रोणीमति प्रबल कुण्डल मेढ्के च, वैभार पर्वततले वर सिद्धकूटे।
ऋष्याद्रिके च विपुलाद्रि बलाहके च, विन्ध्ये च पोदनपुरे वृषदीपके च॥24॥
सह्यचले च हिमवत्यपि सुप्रतिष्ठे, दण्डात्मके गजपथे पृथुसार यष्टौ।
ये साधवोहतमलाः सुगतिं प्रयाताः, स्थानानि तानि जगति प्रथितान्यभूवन्॥25॥
इक्षोर्विकार रसपृक्त गुणेनलोके पिष्टोऽधिकं मधुरतामुपयातियद्वत्।
तद्वच्च पुण्यपुरुषै रुषितानि नित्यं, स्थानानि तानि जगतामिह पावनानि॥26॥
इत्यर्हतां शमवतां च महामुनीनां, प्रोक्तामयात्र परिनिर्वृत्ति भूमिदेशाः।
ते मे जिना जितभया मुनयश्च शांताः, दिश्यासुराशु सुगतिं निरवद्य सौख्याम्॥27॥

क्षेपक श्लोक

शान्ति कुन्थ्वर कौरव्या यादवौ नेमिसुव्रतौ।
उग्रनाथौ पार्श्ववीरौ शेषा इक्ष्वाकुवंशजाः॥

अचंलिका

इच्छामि भंते। परिणिव्वाण भत्ति काउस्सग्गो कओ तस्सालोचेउं इमम्मिचउत्थ समयस्य मज्झिमे भाए णव णवदि लक्ख कोडि णव णवदि सहस्स कोडि णव सद णवदि कोडि सागरोवम वस्स हीणे वासचउक्कम्मि सेसकालिम्म सम्मेए पव्वए भद्द पद मासस्य सुक्क अष्ट्टमीए पुव्वण्हे मूलाए णक्खत्ते भयवदो पुप्फयंतं जिणो सिद्धिं गदो। तिसुविलोएसु, भवण वासिय-वाणविंतर, जोयसिय कप्पवासियत्ति

चउव्विहादेवा सपरिवारा दिव्वेण ण्हाणेण, दिव्वेण गंधेण, दिव्वेणअक्खेण, दिव्वेण पुप्फेण, दिव्वेण चुण्णेण, दिव्वेण दीवेण, दिव्वेण धूवेण, दिव्वेण वासेण णिच्चकालं अच्चंति पुज्जंति, वंदंति, णमसंति, परिणिव्वाण महाकल्लाण पुज्जं करंति। अहमवि इह संतो तत्थ संताइयं णिच्चकालं, अंच्चेमि, पुज्जेमि, वंदामि, णमस्सामि, दुक्खक्खओ, कम्मक्खओ बोहिलाहो सुगईगमणं, समाहि-मरणं जिणगुण संपत्ति होउ मज्झं।

श्री पुष्पदन्त पूजा–9

स्थापना (सोरठा)

पुष्पदन्त भगवान, शिवपथ के राही बने।
करते हम आह्वान, रत्नत्रय निधि के लिए॥

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(रेखता छन्द)

यह चरण चढ़ाने लिया नीर, अब रोग त्रय की मिटे पीर।
हम पूज रहे तव चरण नाथ, दो मोक्ष मार्ग में हमें साथ॥1॥

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

फैले चन्दन की बहु सुवास, हो भवाताप का पूर्ण नाश।
हम पूज रहे तव चरण नाथ, दो मोक्ष मार्ग में हमें साथ॥2॥

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय भवाताप विनाशनाय चंदनं निर्व. स्वाहा।

अक्षत ले पूजा करें आज, अब मोक्ष महल का मिले ताज।
हम पूज रहे तव चरण नाथ, दो मोक्ष मार्ग में हमें साथ॥3॥

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्व. स्वाहा।

यह पूजा करने लिए फूल, अब काम रोग का नशे मूल।
हम पूज रहे तव चरण नाथ, दो मोक्ष मार्ग में हमें साथ॥4॥

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

यह चरू चढ़ाते हैं महान, अब क्षुधा रोग की होय हान।
हम पूज रहे तव चरण नाथ, दो मोक्ष मार्ग में हमें साथ॥5॥

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

हम करें दीप से जग प्रकाश, अब मोह महातम होय नाश।
हम पूज रहे तव चरण नाथ, दो मोक्ष मार्ग में हमें साथ॥6॥

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।

शुभ खेने लाए यहाँ धूप, नश कर्म प्राप्त हो निज स्वरूप।
हम पूज रहे तव चरण नाथ, दो मोक्ष मार्ग में हमें साथ॥7॥

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल से हम पूजा करें देव, अब मोक्ष महाफल मिले एव।
हम पूज रहे तव चरण नाथ, दो मोक्ष मार्ग में हमें साथ॥8॥

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

हम चढ़ा रहे यह श्रेष्ठ अर्घ्य, पद हम भी पाएँ शुभ अनर्घ्य।
हम पूज रहे तव चरण नाथ, दो मोक्ष मार्ग में हमें साथ॥9॥

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पञ्चकल्याणक के अर्घ्य

(छन्द)

फागुन कृष्णा नौमी प्रधान, प्रभु स्वर्ग से चय आये महान।
तव देव किए मिल नमस्कार, जो रत्नवृष्टि कीन्हे अपार॥1॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णा नवम्यां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सित मार्ग शीर्ष एकम विशेष, प्रभु पुष्पदन्त जन्मे जिनेश।
देवों ने कीन्हा नृत्य गान, शुभ न्हवन कराए हर्ष मान॥2॥

ॐ ह्रीं अगहन शुक्लाप्रतिपदायां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सित मार्ग शीर्ष एकम जिनेश, दीक्षा धारे जिनवर विशेष।
मन में जगा जिनके विराग, फिर किए प्रभु जी राग त्याग॥3॥

ॐ ह्रीं अगहन शुक्लाप्रतिपदायां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कार्तिक शुक्ल द्वितिया महान, प्रगटाएँ प्रभु कैवल्य ज्ञान।
शुभ समवशरण रचना अपार, सुर किए जहाँ पर भक्ति धार।।4।।

ॐ ह्रीं कार्तिकशुक्ला द्वितीयायां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अश्विन शुक्ला आठें ऋशीष, प्रभु सिद्ध शिला के हुए ईश।
जिनके गुण गाते हैं सुदेव, भक्ती रत रहते हैं सदैव।।5।।

ॐ ह्रीं आश्विनशुक्लाऽष्टम्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रीपुष्पदंतजी की टोंक (सुप्रभ कूट)

श्री सम्मेद शिखर की जय हो, मुक्त हुए जिनवर की जय हो।
उस धरती अंबर की जय हो, दुखहारी गिरवर की जय हो।।

सोरठा– सुप्रभ कूट महान्, तीनो लोक में।
मुक्ति का स्थान, पुष्पदन्त भगवान का।।

सम्मेदाचल पर्वत जग में न्यारा, सब जीवों का तारण हारा।
महिमा जिसकी अतिशयकारी, तीन लोक में मंगलकारी।
हैं मिष्ठ वचन मोदक जैसे, दीपक सम ज्ञान प्रकाश रहा।
यह धूप समान सुविकसित कर, फल श्रीफल जैसा सुफल अहा।
अपने मन के शुभ भावों का, यह चरणों अर्घ्य चढ़ाते हैं।
हम परम पूज्य जिन पुष्पदंत को, विशदभाव से ध्याते हैं।।
चलो-चलो रे-2 सभी नर नार, तीर्थ के दर्शन को।
कटते हैं कर्म अपार, चलो रे भाई वंदन को।।1।।

ॐ ह्रीं निर्वाणकल्याणकमण्डित श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्पदंत जिनराज आपका, दिनकर सा है रूप महान्।
रत्नत्रय को पाकर स्वामी, किया आपने निज कल्याण।।
चरण वन्दना करने हेतू, अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं।
अर्चा करने आज यहाँ पर, बहुत दूर से आए हैं।।2।।

दोहा– पुष्पदन्त जिन आप हैं, अविनाशी अविकार।
चरण वन्दना कर रहे, हे प्रभु! बारम्बार।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित सुप्रभ कूट से श्री पुष्पदंत तीर्थंकरादि एक कोड़ा-कोड़ी निन्यानवे लाख सात हजार चार सौ अस्सी मुनि मोक्ष पधारे तिनके चरणारविन्द में अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

कोटा कोटी एक निन्यानवे, लाख सप्त हज्जार प्रमाण।
सात सौ अस्सी सुप्रभ कूट से, मुनिवर पाए पद निर्वाण।।
एक कोटि प्रोषध का फल है, प्राणी पाते हैं शुभकार।
श्री जिनवर जिनमुनियों के पद, वन्दन मेरा बारम्बार।।3।।

ॐ ह्रीं श्री सुविधिनाथ जिनेन्द्रादि एक कोडाकोडी नवनवति लक्ष सप्त सहस्र सप्त शतक अशीति मुनीश्वरेभ्यो नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा– मंगलमय भगवान हैं, मंगल जिनका नाम।
मंगलमय जयमाल गा, करते चरण प्रणाम।।

(छन्द वेसरी)

पुष्पदन्त तीर्थंकर गाए, प्राणत स्वर्ग से चयकर आये।
पितु सुग्रीव मात जयरामा, काकन्दी नगरी का नामा।।1।।
मगर चिन्ह दाँये पद पाए, इक्ष्वाकु कुल नन्दन गाए।
धनुष एक सौ ऊँचे जानो, धवल रंग तन का शुभ मानो।।2।।
दो लख पूर्व की आयु पाये, निष्कंटक प्रभु राज्य चलाए।
उल्का पात देखकर स्वामी, बने मोक्ष पथ के पथगामी।।3।।
दीक्षा सहस्र भूप संग पाए, दीक्षा वृक्ष पुष्प कहलाए।
प्रभु जब केवल ज्ञान जगाए, समवशरण तब देव बनाए।।4।।
ब्रह्म आपका यक्ष कहाए, काली आप यक्षिणी पाए।
गणधर आप अठासी पाए, गणधर प्रमुख नाग कहलाए।।5।।
सर्व ऋषी दो लाख बताए, गुण छियालिस प्रभु जी के गाए।
गिरि सम्मेद शिखर से स्वामी, ''विशद'' हुए मुक्ती पथगामी।।6।।

दोहा– शुक्रारिष्ट नाशक प्रभू, पुष्पदन्त भगवान।
जीवन मंगलमय बने, करते तव गुण गान।।

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– करें चरण की वन्दना, जग के सारे जीव।
शिव पद में कारण बने, पावें पुण्य अतीव।

।।इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

श्री शीतलनाथ निर्वाण भक्ति–10

विबुधपति-खगपति नरपति धनदोरग भूत यक्षपति महितम्।
अतुल सुख विमल निरुपम शिवमचल मनामयं हि संप्राप्तम्।।1।।
कल्याणैः संस्तोष्ये पंचभिरनघं त्रिलोक परम गुरुम्।
भव्यजनतुष्टि जननै र्दुरवापैः शीतलं भक्त्या।।2।।
चैत्र कृष्ण अष्टम्यां पूर्वाषाढ़ मध्यमाश्रितेशशिनि।
आयातः स्वर्गसुखं भुक्त्वा खलु आरणाधीशः।।3।।
दृढरथ नृपति तनयो भारतवास्ये भद्रिलपुर नगरे।
देव्यां प्रियनंदायां सुस्वप्नान् संप्रदर्श्य विभुः।।4।।
पौषवदि पूर्वाषाढे लैत्र योगे दिने द्वादश्याम्।
जज्ञे स्वोच्चस्थेषु ग्रहेषु सौम्येषु शुभलग्ने।।5।।
पूर्वाषाढ लैत्र योगे पौषकृष्ण द्वादशी दिवसे।
पूर्वाण्हे रत्नघटै र्विबुधेन्द्राश्चक्रुरभिषेकम्।।6।।
भुक्त्वा कुमारकाले सहस्त्र वर्षाण्यनंत गुणराशिः।
अमरोपनीत भोगान् हिमनाशा बोधितोत्वरितः।।7।।
नानाविधरूपचितां विचित्र कूटोच्छ्रितां मणि विभूषाम्।
शुक्र प्रभाख्यशिविकामारूह्य पुराद्विनिः क्रानतः।।8।।
पोष कृष्ण द्वादश्यां पूर्वाषाढ मध्यमाश्रिते सोमे।
अष्टेन त्वपराण्हे भक्तेन जिनः प्रवव्राज।।9।।
ग्रामपुर खेटकर्वटमटंब घोषाकरान्प्रविजहार।
उग्रैस्तपोविधानैः त्रीवर्षाण्मरैः पूज्यः।।10।।
सहेतुक वनस्य मध्ये शालद्रुम संश्रिते शिलापट्टे।
अपराण्हे षष्ठेन स्थितस्य खलु भद्रिल ग्रामे।।11।।
पौष कृष्ण चतुर्दश्यां पूर्वाषाढ मध्यमाश्रिते चंद्रे।
क्षपक श्रेण्यारूढस्योत्पन्नं केवलज्ञानम्।।12।।
छत्राशोकौ घोषं सिंहासन दुंदुभि कुसुमवृष्टिम्।
वरचामर भामण्डल दिव्यान्यन्यानि चावापत्।।13।।

दस विधमनगाराणामेकादशधोत्तरं तथा धर्मम्।
देशयमानो व्यवहरं सहस्रवर्षाण्यथ जिनेन्द्रः।।14।।
अथ भगवान संप्रापद दिव्यं सम्मेद पर्वतं रम्यम्।
चार्तुर्ण्य सुसंघस्त्राभूदनगार प्रभृति।।15।।
पद्मवनदीर्घिका कुल विविध द्रुमखण्ड मंडितेरम्ये।
विद्युतकूटोद्याने व्युत्सर्गेण स्थितः स मुनिः।।16।।
अश्विन शुक्ल अष्टम्यां पूर्वाषाढे निहत्यकर्मरजः।
अवशेषं संप्रापत्व्यजरामरमक्षयं सौख्यम्।।17।।
परिनिर्वृत्तं जिनेन्द्रं ज्ञात्वा विबुधहृयथाशु चागम्य।
देवतरू रक्त चंदन कालागरू सुरभिगोशीर्षैः।।18।।
अग्नीन्द्राज्जिन देहं मुकुटानल सुरभि धूपवरमाल्यैः।
अभ्यर्च्य गणधरानपि गतादिवं खं च वनभवने।।19।।
इत्येवं भगवति शीतल जिन चंद्रे यः स्तोत्रं पठति सुसंध्ययो-र्द्वयोर्हि।
सोऽनंतं परम सुखं नृ देव लोके, भुक्त्वान्ते शिवपदमक्षयं प्रयाति।।20।।
यत्रार्हता गणभृतां श्रुतपारगाणां, निर्वाण भूमिरिह भारत वर्ष जानाम्।
तामद्य शुद्धमनसा क्रिययावचोभिः, संस्तोतुमुद्यतमतिः परिणौमिभक्त्या।।21।।
माल्यानि वाक्स्तुतिमयैः कुसुमैः सुदृब्धा, न्यादाय मानसकरैरभितः किरन्तः।
पर्येम आदृतियुता भगवन्निषद्याः, संप्रार्थिता वयमिमे परमांगतिं ताः।।22।।
शत्रुञ्जये नगवरे दमितारिपक्षाः। पण्डोः सुताः परमनिर्वृत्तिमभ्युपेताः।
तुंग्यां तु संगरहितो बलभद्रनामा, नद्यास्तटे जितरिपुश्च सुवर्णभद्रः।।23।।
द्रोणीमति प्रबल कुण्डल मेढ्के च, वैभार पर्वत तले वर सिद्ध कूटे।
ऋष्याद्रिके च विपुलाद्रिबलाहके च विन्ध्ये च पोदन पुरे वृषदीपके च।।24।।
सह्याचले च हिमवत्यपि सु प्रतिष्ठे, दण्डात्मके गजपथे पृथुसार यष्टौ।
ये साधवोहतमलाः सुगतिं प्रयाताः, स्थानानि तानि जगति प्रथितान्य भूवन्।।25।।
इक्षोर्विकार रसपृक्त गुणेन लोके पिष्टोऽधिकं मधुरतामुपयाति यद्वत्।
तद्वच्च पुण्य पुरूषै रूषितानि नित्यं, स्थानानि तानि जगतामिह पावनानि।।26।।
इत्यर्हतां शमवतां च महामुनीनां, प्रोक्तामयात्र परिनिर्वृति भूमि देशाः।
ते मे जिना जितमया मुनश्च शांताः दिश्यासुराशु सुगतिं निरवद्य सौख्याम्।।27।।

क्षेपक श्लोक

शान्ति कुन्थ्वर कौरव्या यादवौ नेमिसुव्रतौ।
उग्रनाथौ पार्श्ववीरौ शेषा इक्ष्वाकुवंशजाः।।

अंचलिका

इच्छामि भंते! परिणिव्वाण भत्ति काउस्सग्गो कओ तस्सालोचेउं इमम्मि चउत्थ समयस्य मज्झिमे भाए णव णवदि लक्ख कोडि णव णवदि सहस्सय कोडि णवसदणव णवदि कोडि सागरोवम वस्स हीणे वासचउक्कम्मि सेसकालम्मि सम्मेए पव्वए अस्सिन मासस्स सुक्क अट्ठमीए पुव्वण्हे पुव्वासाढाए णक्खत्ते पच्चूसे भयवदो सीयल जिणो सिद्धिं गदो। तिसुवि लोएसु भवण वासिय वाणविंतर जोयसिय कप्पवासियत्ति चउव्विहादेवा सपरिवारा दिव्वेण ण्हाणेण, दिव्वेण गंधेण, दिव्वेण अक्खेण, दिव्वेण पुप्फेण दिव्वेण चुण्णेण दिव्वेण दीवेण, दिव्वेण धूवेण, दिव्वेण वासेण णिच्चकालं अच्चंति पुज्जंति, वंदंति, णमंस्संति, परिणिव्वाण महाकल्लाण पुज्जं करंति। अहमवि इहसंतो तत्थ संताइयं णिच्चकालं अंचेमि, पुज्जेमि वंदामि णमस्सामि दुक्खक्खओ कम्मक्खओ बोहिलाहो सुगई गमणं समाहि मरणं जिण गुण संपत्ति होउ मज्झं।

श्री शीतलनाथ पूजा–10

स्थापना (सोरठा)

पाया शिव सोपान, शीतलनाथ जिनेन्द्र ने।
निज उर में आह्वान, करते हैं हम भाव से॥

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(छन्द मोतिया दाम)

चढ़ाते प्रभु यह निर्मल नीर, मिले भव सागर का अब तीर।
जिनेश्वर शीतलनाथ महान, विशद करते शीतल गुणगान॥1॥

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

घिसाया चन्दन यह गोशीर, मिटे अब मेरी भव की पीर।
जिनेश्वर शीतलनाथ महान, विशद करते शीतल गुणगान॥2॥

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय भवाताप विनाशनाय चंदनं निर्व. स्वाहा।

चढ़ाते अक्षत यहाँ महान, मिले अक्षय पद मुझे प्रधान।
जिनेश्वर शीतलनाथ महान, विशद करते शीतल गुणगान॥3॥

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्व. स्वाहा।

पुष्प यह सुरभित लिए विशेष, चढ़ाते तव पद यहाँ जिनेश।
जिनेश्वर शीतलनाथ महान, विशद करते शीतल गुणगान॥4॥

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

बनाए चरु हमने रसदार, चाहते हम आतम उद्धार।
जिनेश्वर शीतलनाथ महान, विशद करते शीतल गुणगान॥5॥

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

जलाते हम यह दीप प्रजाल, ज्ञान अब जागे मेरा त्रिकाल।
जिनेश्वर शीतलनाथ महान, विशद करते शीतल गुणगान॥6॥

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।

जलाएँ अग्नी में यह धूप, प्रकट हो मेरा निज स्वरूप।
जिनेश्वर शीतलनाथ महान, विशद करते शीतल गुणगान॥7॥

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

चढ़ाते ताजे फल रसदार, प्राप्त हो हमको पद अनगार।
जिनेश्वर शीतलनाथ महान, विशद करते शीतल गुणगान॥8॥

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्व. स्वाहा।

चढ़ाते अर्घ्य यहाँ पर आज, मिले शिवपद का अब स्वराज।
जिनेश्वर शीतलनाथ महान, विशद करते शीतल गुणगान॥9॥

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पञ्चकल्याणक के अर्घ्य

शुभ चैत कृष्ण आठें महान, को देव किए मिल यशोगान।
प्रभु शीतल जिनवर गर्भधार, महिमा दिखलाए सुर अपार॥1॥

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णा अष्टम्यां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ माघ कृष्ण द्वादशी सुजान, जन्मे शीतल जिनवर महान।
शत् इन्द्र किए आके प्रणाम, जिन शीतल प्रभु का दिए नाम॥2॥

ॐ ह्रीं माघकृष्णा द्वादश्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु माघ कृष्ण द्वादशी वार, दीक्षावन में जा लिए धार।
जिन सर्व परिग्रह से विहीन, निज आत्मध्यान में हुए लीन॥3॥

ॐ ह्रीं माघकृष्णा द्वादश्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ पौष कृष्ण चौदश महान, प्रकटाए प्रभु कैवल्य ज्ञान।
तब समवशरण रचना अनूप, कई देव किए पद झुके भूप॥4॥

ॐ ह्रीं पौषकृष्णा चतुर्दश्यां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आश्विन शुक्ला आठें जिनेश, मुक्ती पद पाए हैं विशेष।
कर्मों को करके आप नाश, प्रभु सिद्धशिला पर किए वास॥5॥

ॐ ह्रीं आश्विन शुक्ल अष्टमी मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री शीतलनाथजी की टोंक

श्री सम्मेद शिखर की जय हो, मुक्त हुए जिनवर की जय हो।
उस धरती अंबर की जय हो, दुखहारी गिरवर की जय हो॥
सोरठा– मोक्ष गए तीर्थेश, श्री अनंत जिनवर परम।
दिए परम उपदेश, मोक्ष मार्ग जिनधर्म का॥
कूट स्वयंभू है मनहारी, जिन तीर्थों में अतिशयकारी।
बैठ वहाँ प्रभु ध्यान लगाए, वह भी मुक्ति वधु को पाए॥
पाए स्वयं वह मोक्ष लक्ष्मी, शिवपुरी में वास हो।
हम भावना भाते सभी का, धर्म में विश्वास हो॥
हम शरण में आए प्रभु, यह वंदना स्वीकार हो।
है भावना अंतिम विशद मम्, आत्म का उद्धार हो॥
चलो-चलो रे-2 सभी नर नार, तीर्थ के दर्शन को।
कटते हैं कर्म अपार, चलो रे भाई वंदन को॥1॥

ॐ ह्रीं निर्वाणकल्याणकमण्डित श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जल चन्दन से भी अति शीतल, श्री शीतल नाथ कहाए हैं।
हे नाथ! आपके चरण शरण, शीतलता पाने आए हैं॥
चरण वन्दना करने हेतू, अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं।
अर्चा करने आज यहाँ पर, बहुत दूर से आए हैं॥2॥
दोहा– शीतलता इस भक्त को, कर दो 'विशद' प्रदान।
शिव नगरी के ईश तुम, दो शिव पद का दान॥

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित विद्युतवर कूट से श्री शीतलनाथ तीर्थंकरादि अठारह कोड़ा-कोड़ी बयालीस करोड़ बत्तीस लाख, बयालीस हजार नौ सौ पाँच मुनि मोक्ष पधारे तिनके चरणारविन्द में अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कोटा कोटी अठारह ब्यालिस, कोटि लाख बत्तीस प्रमाण।
ब्यालिस हजार नौ सौ बतलाए, पाँच मुनी पाए निर्वाण॥
कूट सुविद्युतवर के वन्दन, से फल हो कोटी उपवास।
अल्प समय में भव्य जीव भी, पा लेते हैं शिवपुर वास॥3॥

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्रादि अष्टादश कोडाकोडी द्विचत्वारिंशत् कोडी द्वात्रिंशत् लक्ष द्विचत्वारिंशत सहस्त्रनवशतक पंच मुनीश्वरेभ्यो नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा– शीतलनाथ जिनेन्द्र का, जपें निरन्तर नाम।
जयमाला गाएँ विशद, करके चरण प्रणाम॥

(मोतिया दाम)

स्वर्ग आरण से चयकर आय, नगर महिलपुर में सुखदाय।
गर्भ पाए शीतल जिन राय, इन्द्र रत्नों की वृष्टि कराय॥1॥
पिता दृढ़रथ हैं जिनके भ्रात, प्रभू की रही सुनन्दा मात।
जन्म जब पाए जिन तीर्थेश, धरा पर खुशियाँ हुई विशेष॥2॥
मनाए जन्मोत्सव तब देव, करें जिनवर की जो नित सेव।
कल्पतरु लक्षण रहा महान, आयु इक लाख पूर्व की मान॥3॥
प्राप्त करके पद युवराज, चलाया कई वर्षों तक राज।
देखकर हिम का प्रभू विनाश, किए निज आतम का आभास॥4॥
स्वयंभू जिन ने दीक्षाधार, किया कर्मों को प्रभु ने क्षार।

जगाया अनुपम केवल ज्ञान, प्रभू ने किया जगत कल्याण॥5॥
प्रथम गणधर का कुन्थू नाम, सतासी गणधर करें प्रणाम।
कूट विद्युतवर से जिनराज, प्राप्त कीन्हे शिवपुर का ताज॥6॥

दोहा– कर्म शृंखला नाशकर, हुए मोक्ष के ईश।
जिनके चरणों में 'विशद', झुका रहे हम शीश॥

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– जैनागम जिन धर्म के, विशद आप आधार।
भक्त चरण वन्दन करें, कर दो भव से पार॥

॥इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्॥

श्री श्रेयांसनाथ निर्वाण भक्ति–11

विबुधपति-खगपति नरपति धनदोरग भूत यक्षपति महितम्।
अतुल सुख विमल निरूपम शिवमचल मनामयं हि संप्राप्तम्॥1॥
कल्याणैः संस्तोष्ये पंचभिरनघं त्रिलोक परम गुरूम्!।
भव्यजनतुष्टि जननै र्दुरवापैः श्रेयांसजिनं भक्त्या॥2॥
ज्येष्ठ कृष्ण षष्ठ्यां श्रवणऋक्षेमध्यमाश्रिते सोमे।
आयातः स्वर्गसुखं भुक्त्वा श्री अच्युताधीशः॥3॥
विष्णुराज नृपति तनयो भारतवास्ये सिंहपुरीनगरे।
देव्यां श्रीनन्दायां सुस्वप्नान् संप्रदर्श्व विभुः॥4॥
फाल्गुन वदि श्रवण ऋक्षे लैत्रयोगे एकादश्यां।
जज्ञे स्वोच्चस्थेषु ग्रहेषु सौम्येषु शुभलग्ने॥5॥
श्रवणाश्रिते शशांके फाल्गुन कृष्ण एकादशी दिवसे।
पूर्वाण्हे रत्नघटै र्विबुधेन्द्राश्चक्रुरभिषेकम्॥6॥
भुक्त्वा कुमार काले लक्ष वर्षाण्यनंत गुणराशिः।
अमरोपनीत भोगान् वन लक्ष्मीनाशबोधितो त्वरितः॥7॥
नानाविधरूपचितां विचित्र कूटोच्छ्रितां मणि विभूषाम्।
विमल प्रभाख्यशिविकामारूह्य पुराद्विनिः क्रान्तः॥8॥
फाल्गुन कृष्णैकादश्यां श्रवण भामध्यमाश्रिते सोमे।
षष्ठेन तु पूर्वाण्हे भक्तेन जिनः प्रवव्राज॥9॥
ग्रामपुर खेटकर्वटमटंब घोषाकरान्प्रविजहार।

उग्रैस्तपोविधानैः द्विवर्षण्यमरैः पूज्यः॥10॥
मनोहरवनस्य मध्ये पलाशद्रुम संश्रिते शिलापट्टे।
पूर्वाण्हे षष्ठेन स्थितस्य खलु सिंहनादपुरे॥11॥
माघ कृष्ण अमावस्यायां श्रवणभा मध्यमाश्रिते चन्द्रे।
क्षपक श्रेण्यारूढस्योत्पन्नं केवलज्ञानम्॥12॥
छत्राशोकौ घोषं सिंहासन दुंदुभिः कुसुमवृष्टिम्।
वरचामर भामण्डल दिव्यान्यानि चावापत्॥13॥
दशविधमनगाराणामेकादशधोत्तरं तथा धर्मम्।
देशयमानो व्यवहरं लक्षवर्षाण्यथ जिनेन्द्रः॥14॥
अथ भगवान सम्प्रापद् दिव्यं सम्मेद पर्वतं रम्यम्।
चातुर्वर्ण्य सुसंधस्तत्राभूद् कुंथुगण प्रभृति॥15॥
पद्मवनदीर्घिका कुल विविध द्रुमखण्ड मंडिते रम्ये॥
संकुलकूटोद्याने व्युत्सर्गेण स्थितः स मुनिः॥16॥
श्रावणसितपूर्णिमायां श्रवण ऋक्षे निहत्यकर्मरजः।
अवशेषं संप्रापत्व्यजरामरमक्षयं सौख्यम्॥17॥
परिनिर्वृत्तं जिनेन्द्रं ज्ञात्वा विबुधह्यथाशु चागम्या।
देवतरू रक्त चंदन कालागरू सुरभिगोशीर्षैः॥118॥
अग्नीन्द्राज्जिन देहं मुकुटानल सुरभिर धूपवरमाल्यैः।
अभ्यर्च्य गणधरानपि गत दिवं खं च वनभवने॥19॥
इत्येवं भगवति श्रेयांस जिन चंद्रे यः स्तोत्रं पठति सुसंध्ययो र्द्वयोर्हि।
सोऽनंतं परम सुखं नृ देव लोके, भुक्त्वान्ते शिवपदमक्षयं प्रयाति॥20।
यत्रार्हतां गणभृतां श्रुतपारगाणां, निर्वाण भूमिरिह भारत वर्ष जानाम्।
तामद्य शुद्धमनसा क्रिययावचोभिः, संस्तोतुमुद्यतमतिः परिणौमिभक्त्या॥21॥
माल्यानि वाक्स्तुतिमयैः कुसुमैः सुदृब्धा, न्यादाय मानसकरैरभितः किरन्तः।
पर्येम आदृतियुता भगनन्निषद्याः, संप्रार्थिता वयमिमे परमांगतिंताः॥22॥
शत्रुञ्जये नगवरे दमितारिपक्षाः पण्डोः सुताः परमनिर्वृत्तिमभ्युपेताः।
तुंग्यां तु संगरहितो बलभद्रनामा, नद्यास्तटे जितरिपुश्च सुवर्णभद्रः॥23॥
द्रोणीमति प्रबल कुण्डल मेढ्रके च, वैभार पर्वत तले वर सिद्धकूटे
ऋष्याद्रिके च विपुलाद्रिबलाहके च विन्ध्ये च पोदनपुरे वृषदीपके च॥24॥
सह्याचले च हिमवत्यपि सुप्रतिष्ठे, दण्डात्मके गजपथे पृथुसार यष्टौ।
ये साधवोहतमलाः सुगतिं प्रयाताः, स्थानानि तानि जगति प्रथितान्य भूवन्॥25॥
इक्षोर्विकार रसपृक्त गुणेन लोके पिष्टोऽधिकं मधुरतामुपयाति यद्वत्।
तद्वच्च पुण्य पुरुषै रूषितानि नित्यं, स्थानानि तानि जगतामिह पावनानि॥26॥

इत्यर्हतां शमवतां च महामुनीनां, प्रोक्तामयात्र परिनिर्वृति भूमि देशाः।
ते मे जिना जितमया मुनश्चय शांताः दिश्यासुराशु सुगतिं निरवद्य सौख्याम्॥27॥

क्षेपक श्लोक

शांति कुन्थ्वर कौरव्या यादवौ नेमिसुव्रतौ।
उग्रनाथौ पार्श्ववीरौ शेषा इक्ष्वाकुवंशजाः।।

अंचलिका

इच्छामि भंते! परिणिव्वाण भत्ति काउस्सग्गो कओ तस्सालोचेउं इमम्मिचउत्थ समयस्स मज्झिमे भाए णव णवदि लक्ख कोडि णव णवदि सहस्स कोडि णवसदणव णवदि कोडि तेतिस लक्ख तिहत्तर सहस्स णवसद सागरोवम काल वस्स हीणे वासचउक्कम्मि सेसकालम्मि सम्मेए पव्वए सावण मासस्स सुक्क पुण्णिमासीए पुव्वण्हे घणिट्ठा णक्खत्ते भयवदो। सेयांसजिणं सिद्धिं गदो। तिसुवि लोएसु भवण वासिय वाणविंतर जोयसिय कप्पवासियत्ति चउव्विहादेवा सपरिवारा दिव्वेण ण्हाणेण, दिव्वेण गंधेण, दिव्वेण अक्खेण, दिव्वेण पुप्फेण, दिव्वेण चुण्णेण, दिव्वेण दीवेण, दिव्वेण धूवेण, दिव्वेण वासेण णिच्चकालं अच्चंति पुज्जंति, वंदंति, णमंस्संति, परिणिव्वाण महाकल्लाण पुज्जं करंति। अहमवि इहसंतो तत्थ संताइयं णिच्चकालं अंचेमि, पुज्जेमि वंदामि णमस्सामि दुक्खक्खओ कम्मक्खओ बोहिलाहो सुगई गमणं समाहि मरणं जिण गुण संपत्ति होउ मज्झं।

श्री श्रेयांसनाथ पूजा–11

स्थापना

सोरठा– श्रेय प्रदाता आप, श्री श्रेयान्स जिन गाए हैं।
करते हैं हम जाप, आह्वानन् कर निज हृदय॥

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(पद्धरि छन्द)

हम चढ़ा रहे यह शुद्ध नीर, जन्मादि रोग की मिटे पीर।
जिन श्रेय करें श्रेयस प्रदान, हम अतः चरण करते प्रणाम॥1॥
ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

चन्दन केसर को लिया साथ, भव ताप नाश हो मेरा नाथ।
जिन श्रेय करें श्रेयस प्रदान, हम अतः चरण करते प्रणाम॥2॥
ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय भवाताप विनाशनाय चंदनं निर्व. स्वाहा।

अक्षत यह लाए धवल आज, अक्षय पद का अब मिले ताज।
जिन श्रेय करें श्रेयस प्रदान, हम अतः चरण करते प्रणाम॥3॥
ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्व. स्वाहा।

पुष्पों के अर्पित करें थाल, हम झुका रहे तव चरण भाल।
जिन श्रेय करें श्रेयस प्रदान, हम अतः चरण करते प्रणाम॥4॥
ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

नैवेद्य चढ़ाने लिए हाथ, अब क्षुधा से मुक्ती मिले नाथ।
जिन श्रेय करें श्रेयस प्रदान, हम अतः चरण करते प्रणाम॥5॥
ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

हम जला रहे हैं यहाँ दीप, अब पहुँचे शिव पद के समीप।
जिन श्रेय करें श्रेयस प्रदान, हम अतः चरण करते प्रणाम॥6॥
ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।

अब नाश होय प्रभु मोह पास, शिवपुर में मेरा होय वास।
जिन श्रेय करें श्रेयस प्रदान, हम अतः चरण करते प्रणाम॥7॥
ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल चढ़ा रहे हम यहाँ आन, अब मिले शीघ्र ही मोक्ष धाम।
जिन श्रेय करें श्रेयस प्रदान, हम अतः चरण करते प्रणाम॥8॥
ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्व. स्वाहा।

यह अर्घ्य चढ़ाते हम अनूप, प्रगटाएँ अपना निज स्वरूप
जिन श्रेय करें श्रेयस प्रदान, हम अतः चरण करते प्रणाम॥9॥
ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पञ्चकल्याणक के अर्घ्य

सोरठा

पाए गर्भ भगवान्, ज्येष्ठ कृष्ण छठवी दिना।
किए देव गुणगान, उत्सव कीन्हे गर्भ का।।1।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णा षष्ठम्यां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हुआ जन्म कल्याण, फाल्गुन कृष्ण एकादशी।
इन्द्र स्वर्ग से आन, न्हवन कराए मेरु पे।।2।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णा एकादश्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीक्षा धारे नाथ, फाल्गुन कृष्ण एकादशी।
चरण झुकाएँ माथ, सुर नर मुनि के इन्द्र सब।।3।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णा एकादश्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाए केवल ज्ञान, माघ कृष्ण की अमावस।
किए जगत कल्याण, दिव्य देशना आप दे।।4।।

ॐ ह्रीं माघकृष्णाऽमावस्यायां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोक्ष गये भगवान, श्रावण शुक्ला पूर्णिमा।
पाए मोक्ष कल्याण, तीर्थराज सम्मेद से।।5।।

ॐ ह्रीं श्रावणशुक्ला पूर्णिमायां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री श्रेयांसनाथजी की टोंक (संकुल कूट)

श्री सम्मेद शिखर की जय हो, मुक्त हुए जिनवर की जय हो।
उस धरती अंबर की जय हो, दुखहारी गिरवर की जय हो।।
सोरठा– श्रेयश पाया श्रेष्ठ, श्री श्रेयांस तीर्थेश ने।
जिनवर हुए यथेष्ठ, कर्म घातिया नाशकर।।
संकुल कूट बड़ा मनहारी, तीर्थराज ये विस्मयकारी।
मन को आह्लादित कर देवे, दु:खियों के दु:ख जो हर लेवे।।

हरता दुखों को जीव के जो, भाव से वंदनकरें।
हो नाश दुख दुर्गति का जो, श्रेष्ठ अभिनंदन करें।।
हम शरण में आए प्रभु, यह वंदना स्वीकार हो।
है भावना अंतिम विशद मम्, आत्म का उद्धार हो।।
चलो-चलो रे-2 सभी नर नार, तीर्थ के दर्शन को।
कटते हैं कर्म अपार, चलो रे भाई वंदन को।।1।।

ॐ ह्रीं निर्वाणकल्याणकमण्डित श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय नम: अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्व गुणों को पाने वाले, श्रेयनाथ जिन जग के ईश।
स्वर्ग लोक से इन्द्र चरण में, आकर यहाँ झुकाते शीश।।
चरण वन्दना करने हेतू, अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं।
अर्चा करने आज यहाँ पर, बहुत दूर से आए हैं।।2।।
दोहा– सर्व कर्म को नाशकर, शिवपुर किया प्रयाण।
श्रेयस पाने को 'विशद', करते हम गुणगान।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित संकुल नामक कूट से श्री श्रेयांसनाथ तीर्थंकरादि छियानवे कोड़ा-कोड़ी छियानवे करोड़ छियानवे लाख नौ हजार पाँच सौ बयालीस मुनि मोक्ष पधारे तिनके चरणारविन्द में अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

छियानवे कोटा-कोटी छियानवे, कोटी छियानवे लाख प्रमाण।
नौ हजार अरु पाँच सौ ब्यालिस, पाए हैं मुनि पद निर्वाण।।
कोटी प्रोषध का फल पाते, करें वन्दना हो अविकार।
शिव पद पाने हम जिन पद में, करते वन्दन बारम्बार।।3।।

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्रादि षण्णवति कोडाकोडी षण्णवति कोडी षण्णवति लक्ष नवसहस्र पंचशतक द्विचत्वारिंशत् मुनीश्वरेभ्यो नम: अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा– श्रेय प्रदायक श्रेयजिन, हुए जो मंगलकार।
जयमाला गाते चरण, भविजन बारम्बार।।

(चाल छन्द)

श्रेयांस नाथ गुणधारी, इसजग में मंगलकारी।
है सिंहपुरी शुभकारी, जन्मे श्रेयांस त्रिपुरारी॥1॥
नृप विष्णूराज कहाए, माँ वेणू देवी पाए।
यह अन्तिम गर्भ कहाए, प्रभु जन्म कल्याणक पाए॥2॥
किए रत्नवृष्टी शुभकारी, सुर किए प्रशंसा भारी।
गेण्डा लक्षण शुभ पाए, तन अस्सी धनुष का पाए॥3॥
चौरासी वर्ष की स्वामी, आयू पाए शिवगामी।
लक्ष्मी बसन्त विनशाई, लख मुनिवर दीक्षा पाई॥4॥
तब देव पालकी लाए, प्रभु को वन में पहुँचाए।
प्रभु आतम ध्यान लगाए, फिर केवल ज्ञान जगाए॥5॥
सुर समवशरण बनवाए, सात योजन का जो गाए।
प्रभु दिव्य ध्वनी सुनाए, सुर नर पशु मंगल गाए॥6॥

दोहा– कर्म नाशकर के प्रभू, पाए पद निर्वाण।
भव्य जीव जिनका 'विशद', करें श्रेष्ठ गुणगान॥

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्व.

भक्ति से मुक्ती मिले, रहते ऐसा लोग।
विश्द का हे प्रभु, दो हमको अब योग॥

॥इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्॥

श्री वासुपूज्य निर्वाण भक्ति–12

foiqèkifr&[kxifrujifrèkunksjxHkwr ;{kifrefgre~A
vrqy lq[kfoeyfu:ief'koepyeuke;afglaizkIre~AA1AA
कल्याणैः संस्तोष्ये पंचभिरनघं त्रिलोक परम गुरूम्।
भव्यजनतुष्टि जननै र्दुरवापैः वासुपूज्य जिनं भक्त्या॥2॥
आषाढ शुक्ल षष्ठ्यां शतभिषा भा मध्यमाश्रिते शशिनि।
आयातः स्वर्गसुखं भुक्त्वा महाशुक्राधीशः॥3॥
वसुपूज्यनृपति तनयो भारतवास्ये चम्पापुर नगरे।
देव्यां प्रियजयावत्यां सुस्वप्नान् संप्रदर्श्य विभुः॥4॥

फाल्गुन वदि तारकायां वरूण योगे च दिने चतुर्दश्याम्।
जज्ञे स्वोच्चस्थेषु ग्रहेषु सौम्येषु शुभलग्ने॥5॥
तारकाश्रिते शशांके फाल्गुन वदि चतुर्दशी दिवसे।
पूर्वाण्हे रत्नघटै र्विबुधेन्द्राश्चक्रुरभिषेकम्॥6॥
भुक्त्वा कुमार काले सहस्त्र वर्षाण्यनंत गुणराशिः।
अमरोपनीत भोगान् जात्याभिनिबोधितोत्वरितः॥7॥
नानाविधरूपचितां विचित्र कूटोच्छ्रितां मणि विभूषाम्।
पुष्यभाख्यशिविकामारूह्य पुराद्विनिः क्रान्तः॥8॥
फाल्गुन शुक्ल चतुर्दश्यां भा मध्यमाश्रिते सोमे।
चतुर्बेलायां त्वपराण्हे, भक्तेन जिनः प्रवव्राज॥9॥
ग्रामपुर खेटकर्वटमटंब घोषाकरान्प्रविजहार।
उग्रैस्तपोविधानैः एकवर्षाण्यमरैः पूज्यः॥10॥
क्रीडोद्यानस्यमध्ये कदम्बद्रुम संश्रिते शिलापट्टे।
अपराण्हे षष्टेनस्थितस्य चम्पापुरी ग्रामे॥11॥
माघसित द्वितीयायां विशाखा भा मध्यमाश्रिते चन्द्रे।
क्षपक श्रेण्यारूढस्योत्पन्नं केवलज्ञानम्॥12॥
छत्राशोकौ घोषं सिंहासन दुंदुभिः कुसुमवृष्टिम्।
वरचामर भामण्डल दिव्यान्यन्यानि चावापत्॥13॥
दस विधमनगाराणामेकादशधोत्तरं तथा धर्मम्।
देशयमानो व्यवहरं बहुलक्षवर्षाणि जिनेन्द्रः॥14॥
अथ भगवान संप्रापद् दिव्यं मंदार पर्वतं रम्यम्।
चातुर्वर्ण्य सुसंघस्तत्राभूद् सुधर्माप्रभृति॥15॥
पद्मवनदीर्घिका कुल विविध द्रुमखण्ड मंडितेरम्ये।
मनोहरकूटोद्याने पद्मासनेन स्थितः सः मुनिः॥16॥
भाद्रसित चतुर्दश्यां अश्विनीऋक्षे निहत्यकर्मरजः।
अवशेषं संप्रापद्व्यजरामर मक्षयं सौख्यम्॥17॥
परिनिर्वृत्तं जिनेन्द्रं ज्ञात्वा विबुधह्यथाशु चागम्य।
देवतरू रक्तचंदन कालागरू सुरभिगोशीर्षैः॥18॥
अग्नीन्द्राज्जिन देहं मुकुटानल सुरभि धूपवरमाल्यैः।
अभ्यर्च्य गणधरानपि गतादिवं खं च वनभवने॥19॥
इत्येवं भगवति वासुपूज्य जिन चंद्रे यः स्तोत्रं पठति सुसंध्ययो र्द्वयोर्हि।
सोऽनंतं परम सुखं नृ देव लोके, भुक्त्वान्ते शिवपदमक्षयं प्रयाति॥20॥

यत्रार्हतां गणभृतां श्रुतपारगाणां, निर्वाण भूमिरिह भारत वर्ष जानाम्।
तामद्य शुद्धमनसा क्रिययावचोभिः।, संस्तोतुमुद्यतमतिः परिणौमिभक्त्या॥21॥
माल्यानि वाक्स्तुतिमयैः कुसुमैः सुदृब्धा, न्यादाय मानसकरैरभितः किरन्तः।
पर्येम आदृतियुता भगवन्निषद्याः, संप्रार्थिता वयमिमे परमांगतिं ताः॥22॥
शत्रुञ्जये नगवरे दमितारिपक्षाः पण्डोः सुताः परमनिर्वृत्तिमभ्युपेताः।
तुंग्यां तु संगरहितो बलभद्रनामा, नद्यास्तटे जितरिपुश्च सुवर्णभद्रः॥23॥
द्रोणीमति प्रबल कुण्डल मेढ्के च, वैभार पर्वत तले वर सिद्ध कूटे।
ऋष्याद्रिके च विपुलाद्रिबलाहके च विन्ध्ये च पोदन पुरे वृषदीपके च॥24॥
सह्याचले च हिमवत्यपि सुप्रतिष्ठे, दण्डात्मके गजपथे पृथुसार यष्टौ।
ये साधवोहतमलाः सुगतिं प्रयाताः, स्थानानि तसपि जगति प्रथितान्य भूवन्॥25॥
इक्षोर्विकार रसपृक्त गुणेन लोके पिष्टोऽधिकं मधुरतामुपयाति यद्वत्।
तद्वच्च पुण्य पुरुषै रूषितानि नित्यं, स्थानानि तानि जगतामिह पावनानि॥26॥
इत्यर्हतां शमवतां च महामुनीनां, प्रोक्तामयात्र परिनिर्वृति भूमि देशाः।
ते मे जिना जितमया मुनयश्च शांताः दिश्यासुराशु सुगतिं निरवद्य सौख्याम्॥27॥

क्षेपक श्लोक

शांति कुन्थ्वर कौरव्या यादवौ नेमिसुव्रतौ।
उग्रनाथौ पार्श्ववीरौ शेषा इक्ष्वाकुवंशजाः॥

अंचलिका

इच्छामि भंते। परिणिव्वाण भत्ति काउस्सग्गो कओ तस्सलोचेउं इमम्मि चउत्थ समयस्स मज्झिमे भाए णव णवदि लक्ख कोडि णव णवदि सहस्स कोडि णवसदणव णवदि कोडि सगसीदिलक्ख तिहत्तरिणवसद सागरोवम वस्स हीणे वासचउक्कम्मि सेसकालम्मि मंदार पव्वए भद्द मासस्स सुक्क चउदसीए अपराण्हे अस्सिनी णक्खत्ते पच्चूसे भयवदो वासुपूज्यजिणो सिद्धिं गदो। तिसुवि लोएसु भवण वासिय वाणविंतर जोयसिय कप्पवासियत्ति चउव्विहादेवा सपरिवारा दिव्वेण ण्हाणेण, दिव्वेण गंधेण, दिव्वेण अक्खेण, दिव्वेण पुप्फेण दिव्वेण चुण्णेण दिव्वेण दीवेण, दिव्वेण धूवेण, दिव्वेण वासेण णिच्चकालं अच्चंति पुज्जंति, वंदंति, णमंस्सति, परिणिव्वाण महाकल्लाण पुज्जं करंति। अहमवि इहसंतो तत्थ संताइयं णिच्चकाल अंचेमि, पुज्जेमि वंदामि णमस्सामि दुक्खक्खओ कम्मक्खओ बोहिलाहो सुगई गमणं समाहि मरणं जिण गुण संपत्ति होउ मज्झं।

श्रीवासुपूज्य पूजा–12

स्थापना (सोरठा)

वासुपूज्य भगवान, जगत पूज्यता पाए हैं।
हृदय करें आह्वान, पूजा करने के लिए॥

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

दोहा

जिन चरणों में नीर की, देते हम त्रय धार।
रोग त्रय का नाशकर, पाएँ भवदधि पार॥1॥

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

मलयागिरि चन्दन घिसा, चढ़ा रहे हम नाथ।
भव से मुक्ती दीजिए, झुका रहे हम माथ॥2॥

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय भवाताप विनाशनाय चंदनं निर्व. स्वाहा।

अक्षय अक्षत के यहाँ, भर लाए हम थाल।
अक्षय पद पाएँ प्रभू, गाते हैं गुणमाल॥3॥

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्व. स्वाहा।

पुष्प चढ़ाते भाव से, काम रोग हो नाश।
मुक्ती हो संसार से, पाए शिव पद वास॥4॥

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

चढ़ा रहे नैवेद्य यह, तुम चरणों भगवान।
क्षुधा रोग का नाश हो, पाएँ पद निर्वाण॥5॥

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

घृत का यह दीपक लिया, करके यहाँ प्रजाल।
ज्ञान दीप जगमग जले, गाते हम जयमाल॥6॥

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।

धूप जलाते आग में, फैले श्रेष्ठ सुगंध।
अष्ट कर्म का नाश हो, पाएँ आत्मानन्द॥7॥

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

पूजा करने लाए यह, उत्तम फल रसदार।
विशद भावना भा रहे, पाएँ हम शिव द्वार।।8।।

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट द्रव्य का भाव से, चढ़ा रहे यह अर्घ्य।
यही भावना है विशद, पाएँ सुपद अनर्घ्य।।9।।

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पञ्चकल्याणक के अर्घ्य

सोरठा

हो गई माला–माल, षष्ठी कृष्ण अषाढ़ की।
दीन दयाल कृपाल, गर्भ कल्याणक पाए थे।।1।।

ॐ ह्रीं आषाढ़ कृष्ण षष्ठीयां गर्भमंगल मण्डिताय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जन्मे जिन भगवान्, फाल्गुन कृष्णा चतुर्दशी।
इन्द्र किए गुणगान, आनन्दोत्सव तव किए।।2।।

ॐ ह्रीं फाल्गुन कृष्ण चतुर्दश्यां जन्ममंगल मण्डिताय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पकड़ी शिव की राह, फाल्गुन कृष्णा चतुर्दशी।
छोड़ी जग की चाह, संयम धारा आपने।।3।।

ॐ ह्रीं फाल्गुन कृष्ण चतुर्दश्यां तपोमंगल मण्डिताय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म घातिया नाश, शिव पद के राही बने।
कीन्हे ज्ञान प्रकाश, भादों शुक्ला दोज को।।4।।

ॐ ह्रीं भाद्रपद शुक्ल द्वितीयायां ज्ञानमंगल मण्डिताय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आठों कर्म विनाश, जिन श्रेयांस जी ने किए।
सिद्ध शिला पर वास, सुदी चतुर्दशी भाद्र पद।।5।।

ॐ ह्रीं भाद्रपद शुक्ल चतुर्दश्यां मोक्षमंगल मण्डिताय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री वासुपूज्य भगवान की टोंक

श्री चंपापुर क्षेत्र की जय हो, मुक्त हुए जिनवर की जय हो।
उस धरती अंबर की जय हो, दुखहारी गिरवर की जय हो।।

सोरठा– पाए पद निर्वाण, चंपापुर से प्रभु जी।
वासुपूज्य भगवान, कालदोष यह जानिए।।

चम्पापुर नगरी मन भाए, पांचों कल्याणक प्रभु पाए।
बालयति जो प्रथम कहाए, उनकी महिमा कही न जाए।।
महिमा कही न जाय प्रभु की, जो परम मंगल कहे।
उनके गुणों का गान करने, में सफल हम न हरे।।
हम शरण में आए प्रभु, यह वंदना स्वीकार हो।
है भावना अंतिम विशद मम्, आत्म का उद्धार हो।।
चलो-चलो रे-2 सभी नर नार, तीर्थ के दर्शन को।
कटते हैं कर्म अपार, चलो रे भाई वंदन को।।1।।

ॐ ह्रीं निर्वाणकल्याणकमण्डित श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

है पूज्य लोक में जैन धर्म, जिन वासुपूज्य अपनाये हैं।
जिसने भी जैन धर्म पाया, वह शिवपदवी को पाये हैं।।
हम भक्त आपके गुण गाकर, यह अनुपम अर्घ्य चढ़ाते हैं।
हे नाथ! आपके चरणों में हम, सादर शीश झुकाते हैं।।2।।

दोहा– जगत पूज्यता पा गये, वासुपूज्य भगवान।
चंपापुर में पाए हैं, प्रभु पाँचों कल्याण।।

ॐ ह्रीं श्री चम्पापुर सिद्धक्षेत्र से भादवा सुदी चौदस को श्री वासुपूज्य तीर्थंकरादि व असंख्यात मुनि मोक्ष पधारे तिनके चरणारविन्द में अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

है मन्दर सुर गिर चम्पापुर, श्री वासु पूज्य का मोक्ष स्थान।
एक सहस मुनि वासुपूज्य के, साथ में पाए पद निर्वाण।।
मुक्ती पाए यहाँ से कई मुनि, प्राप्त करेंगे शिव का द्वार।
श्री जिनवर जिन मुनिराजों के, पद में वन्दन बारम्बार।।3।।

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्रादि एक सहस्त्र मुनीश्वरेभ्यो नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा– जगत पूज्यता पाए हैं, वासुपूज्य भगवान।
हर्षित हो सुर नर मुनी, करते हैं जयगान॥

(ज्ञानोदय छन्द)

महाशुक्र से चयकर स्वामी, चम्पापुर में आये थे।
इन्द्राज्ञा से देवों ने तव, दिव्य रत्न बरसाए थे॥1॥
जयावती माता है जिनकी, वसूपूज्य है पिता महान।
इक्ष्वाकु शुभ वंश आपका, भैंसा चिन्ह रही पहिचान॥2॥
गर्भागम को पूर्ण किए प्रभु, जन्म कल्याणक तब पाए।
न्हवन कराया मेरुगिरी पर, देव सभी मंगल गाए॥3॥
लाख बहत्तर पूर्व की आयू, सात धनुष ऊंचाई जान।
बाल ब्रह्मचारी कहलाए, जाति स्मरण पाए महान॥4॥
दीक्षा धारण किए प्रभू जी, छह सौ राजाओं के साथ।
केवलज्ञान जगाया प्रभु ने, हुए आप त्रैलोकी नाथ॥5॥
छियासठ गणधर रहे प्रभु के, मंदर जिनमें रहे प्रधान।
कर्म नाशकर चम्पापुर से, पाए प्रभु जी पद निर्वाण॥6॥

दोहा– चम्पापुर में आपके, हुए पञ्च कल्याण।
भक्त पुकारें आपको, दो प्रभु जी अब ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– भक्ती से मुक्ती मिले, कहते ऐसा लोग।
'विशद' भक्ति का हे प्रभू, दो हमको अब योग॥

॥इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्॥

श्री विमलनाथ निर्वाण भक्ति–13

विबुधपति-खगपति नरपति धनदोरग भूत यक्षपति महितम्।
अतुल सुख विमल निरूपम शिवमचल मनामयं हि संप्राप्तम्॥1॥
कल्याणैः संस्तोष्ये पंचभिरनघं त्रिलोक परम गुरूम्।
भव्यजनतुष्टि जननै र्दुरवापैः विमलजिनं भक्त्या॥2॥
ज्येष्ठ कृष्ण दशम्यां उत्तराभद्र मध्यममाश्रितेशशिनि।
आयातः स्वर्ग सुखं भुक्त्वा सहस्त्राराधीशः॥3॥

कृतवर्मानृपति तनयो भारतवास्ये अंगकम्पिलापुरे।
देव्यां आर्यशामायां सुस्वप्नान् संप्रदर्श्य विभुः॥4॥
पौष मास सितोत्तराभाद्रे वरूणयोगे च शुभ चतुर्थ्याम्।
जो स्वोच्चस्थेषु ग्रहेषु सौम्येषु शुभलग्ने॥5॥
उत्तराश्रिते शशांके पौष ज्योत्सने चतुर्थी दिवसे।
पूर्वाण्हे रत्नघटै र्विबुधेन्द्राश्चक्रुरभिषेकम्॥6॥
भुक्त्वा कुमार काले सहस्र वर्षाण्यनंत गुणराशिः।
अमरोपनीत भोगान् मेघनाशाबोधितो त्वरितः॥7॥
नानाविधरूपचितां विचित्र कूटोच्छ्रितां मणि विभूषणाम्।
देवदत्तताख्यशिविका मारूहय पुराद्विनिक्रान्तः॥8॥
पौष शुक्ल चतुर्श्या भाद्रोत्तर मध्यमाश्रिते सोमे।
अष्टेन त्वपराण्हे भक्तेन जिनः प्रवव्राज॥9॥
ग्रामपुर खेटकर्वटमटंब घोषाकरान्प्रविजहार।
उग्रैस्तपोविधानैः खलुत्रिवर्षाणयमरैः पूज्यः॥10॥
सहेतुक वनस्य मध्ये जम्बुद्रुम संश्रिते शिलापट्टे।
अपराण्हे षष्ठेन स्थितस्य खलु कम्पिलाग्रामे॥11॥
माघ शुक्ल षष्ठ्यां तु उत्तराषाढ नक्षत्रे चंद्रे।
क्षपक श्रेण्यारूढस्योत्पन्नं केवलज्ञानम्॥12॥
छत्राशोकौ घोषं सिंहासन दुंदुभिः कुसुसमवृष्टिम्।
वरचामर भामण्डल दिव्यान्यन्यानि चावापत्॥13॥
दस विधमनगाराणामेकादशधोत्तरं तथा धर्मम्।
देशयमानो व्यवहरं बहुलक्षवर्षाणि जिनेन्द्रः॥14॥
अथ भगवान संप्रापद् दिव्यं सम्मेद पर्वतं रम्यम्।
चातुर्वण्यं सुसंघस्त्राभूद् जय गण प्रभृति॥15॥
पद्मवनदीर्घिका कुल विविध द्रुमखण्ड मंडितेरम्ये।
सुवीरकूटोद्याने व्युत्सर्गेण स्थितः स मुनिः॥16॥
आषाढवदि अष्टम्यां उत्तराऋक्षे निहत्यकर्मरजः।
अवशेषं संप्रापत्व्यजरामरमक्षयं सौख्यम्॥17॥
परिनिर्वृत्तं जिनेन्द्रं ज्ञात्वा विबुधहयथाक्षु चागम्य।
देवतरू रक्त चंदन कालागरू सुरभिगोशीर्षैः॥18॥
अग्नीन्द्राज्जिन देहं मुकुटानल सुरभि धूपवरमाल्यैः।
अभ्यर्च्य गणधरानपि गतादिवं खं च वनभवने॥19॥

इत्येवं भगवति विमल जिन चंद्रे यः स्तोत्रं पठति सुसंध्ययो र्द्वयोर्हि।
सोऽनंतं परम सुखं नृ देव लोके, भुक्त्वान्ते शिवपदमक्षयं प्रयाति॥20॥
यत्रार्हतां गणभृतां श्रुतपारगाणां, निर्वाण भूमिरिह भारत वर्ष जानाम्।
तामद्य शुद्धमनसा क्रिययावचोभिः, संस्तोतुमुद्यतमतिः परिणौमिभक्त्या॥21॥
माल्यानि वाक्स्तुतिमयैः कुसुमैः सुदृब्धा, न्यादाय मानसकरैरभितः किरन्तः।
पर्येम आदृतियुता भगवन्निषद्याः, संप्रार्थिता वयमिमे परमांगतिं ताः॥22॥
शत्रुञ्जये नगवरे दमितारिपक्षाः पण्डोः सुताः परमनिर्वृत्तिमभ्युपेताः।
तुंग्यां तु संगरहितो बलभद्रनामा, नद्यास्तटे जितरिपुश्च सुवर्णभद्रः॥23॥
द्रोणीमति प्रबल कुण्डल मेढ्रके च, वैभार पर्वत तले वर सिद्ध कूटे
ऋष्याद्रिके च विपुलाद्रिबलाहके च विन्ध्ये च पोदन पुरे वृषदीपके च॥24॥
सह्याचले च हिमवत्यपि सुप्रतिष्ठे, दण्डात्मके गजपथे पृथुसार यष्टौ।
ये साधवोहतमलाः। सुगतिं प्रयाताः, स्थानानि तानि जगति प्रथितान्य भूवन्॥25॥
इक्षोर्विकार रसपृक्त गुणेन लोके पिष्टोऽधिकं मधुरतामुपयाति यद्वत्।
तद्वच्च पुण्य पुरूषै रूषितानि नित्यं, स्थानानि तानि जगतामिह पावनानि॥26॥
इर्त्यहतां शमवतां च महामुनीनां, प्रोक्तामयात्र परिनिर्वृत्ति भूमि देशाः।
ते मे जिना जितमया मुनयश्च शांताः दिश्यासुराशु सुगतिं निरवद्य सौख्याम्॥27॥

क्षेपक श्लोक

शांति कुन्थ्वर कौरव्या यादवौ नेमिसुव्रतौ।
उग्रनाथौ पार्श्ववीरौ शेषा इक्ष्वाकुवंशजाः॥

अंचलिका

इच्छामि भंते! परिणिव्वाण भत्ति काउस्सग्गो कओ तस्सलोचेउं इमम्मि चउत्थ समयस्स मज्झिमे भाए सद लक्ख कोडि सागरोवम सत्तरह लक्ख तिहत्तरि णवसद सागरोवम वास्स हीणे वाचउक्कम्मि सेसकालम्मि सम्मेए पव्वए आसाढकिण्ह अट्ठमीए अपराण्हे पुव्व भददपदे णक्खत्ते भयवदो विमल जिणो सिद्धिं गदो। तिसुवि लोएसु भवण वासिय वाणविंतर जोयसिय कप्पवासियत्ति चउव्विहादेवा सपरिवारा दिव्वेण ण्हाणेण दिव्वेण गंधेण, दिव्वेण अक्खेण, दिव्वेण पुप्फेण दिव्वेण चुण्णेण दिव्वेण दीवेण, दिव्वेण धूवेण, दिव्वेण वासेण णिच्चकालं अच्चंति पुज्जंति, वंदंति, णमंस्संति, परिणिव्वाण महाकल्लाण पुज्जं करंति। अहमवि इहसंतो

तत्थ संताइयं णिच्चकालं अंचेमि, पुज्जेमि वंदामि णमस्सामि दुक्खक्खओ कम्मक्खओ बोहिलाहो सुगइ गमणं समाहि मरणं जिण गुण संपत्ति होउ मज्झं।

श्री विमलनाथ पूजा–13

स्थापना (सोरठा)

विमलनाथ तीर्थेश, शिव पदवी को पाए हैं।
धारा दिगम्बर भेष, अतः बुलाते निज हृदय॥

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(चौपाई)

नाथ आपको हम सब ध्याते, चरणों में यह नीर चढ़ाते।
शिव पथ के राही बन जाएँ, मुक्ती पद को हम भी पाएँ॥1॥
ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

सेवक बनकर हम सब आये, चन्दन यहाँ चढ़ाने लाए।
शिव पथ के राही बन जाएँ, मुक्ती पद को हम भी पाएँ॥2॥
ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय भवाताप विनाशनाय चंदनं निर्व. स्वाहा।

भक्त बने भक्ती को आये, अक्षय पद को अक्षत लाए।
शिव पथ के राही बन जाएँ, मुक्ती पद को हम भी पाएँ॥3॥
ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्व. स्वाहा।

पुष्प चढ़ाकर हम हर्षाएँ, काम रोग को पूर्ण नशाएँ।
शिव पथ के राही बन जाएँ, मुक्ती पद को हम भी पाएँ॥4॥
ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

यह नैवेद्य चढ़ाने लाए, क्षुधा नशाने को हम आए॥
शिव पथ के राही बन जाएँ, मुक्ती पद को हम भी पाएँ॥5॥
ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

दीप जलाते हम हे स्वामी, मोहनाश करने शिवगामी।
शिव पथ के राही बन जाएँ, मुक्ती पद को हम भी पाएँ॥6॥

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।

सुरभित हम यह धूप जलाएँ, अपने आठों कर्म नशाएँ।
शिव पथ के राही बन जाएँ, मुक्ती पद को हम भी पाएँ॥7॥

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल यह यहाँ चढ़ाने लाए, हम शिव फल पाने को आए।
शिव पथ के राही बन जाएँ, मुक्ती पद को हम भी पाएँ॥8॥

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्व. स्वाहा।

शुभ यह अर्घ्य चढ़ाते भाई, जो है शुभ मुक्ती पद दायी॥
शिव पथ के राही बन जाएँ, मुक्ती पद को हम भी पाएँ॥9॥

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पञ्चकल्याणक के अर्घ्य

(सुखमा छन्द)

जेठ कृष्ण दशमी दिन पाए, नगर कम्पिल धन्य बनाए।
जयश्यामा के गर्भ में आए, देव रत्न वृष्टी करवाए॥1॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णा दशम्यां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

माघ शुक्ल की चौथ बताई, जन्मे विमलनाथ जिन भाई।
जन्म कल्याणक देव मनाए, खुश हो जय जयकार लगाए।

ॐ ह्रीं माघशुक्ल चतुर्थ्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

माघ शुक्ल की चौथ कहाई, दीक्षा कल्याणक तिथि गाई।
मन में प्रभु वैराग्य जगाए, शिवपथ के राही कहलाए॥3॥

ॐ ह्रीं माघशुक्ल चतुर्थ्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

माघ शुक्ल छठ रही सुहानी, हुए प्रभू जी केवल ज्ञानी।
दिव्य देशना प्रभू सुनाए, जीवों को सन्मार्ग दिखाए॥4॥

ॐ ह्रीं माघ शुक्ल षष्ठम्यां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आठे कृष्ण आषाढ़ बखानी, प्रभु जी पाए मुक्ती रानी।
गिरि सम्मेद शिखर से स्वामी, बने मोक्ष पथ के अनुगामी॥5॥

ॐ ह्रीं आषाढ़कृष्णाऽष्टम्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री विमलनाथजी की टोंक (सुवीर कूट)

श्री सम्मेद शिखर की जय हो, मुक्त हुए जिनवर की जय हो।
उस धरती अंबर की जय हो, दुखहारी गिरवर की जय हो॥

सोरठा– कूट सुवीर महान्, कहते संकुल कूट भी।
विमलनाथ भगवान, मोक्ष महल में जा बसे॥

विमलनाथ से नाथ नहीं हैं, सर्व लोक में और कहीं हैं।
चरण शरण में जो भी आया, उसने ही सौभाग्य जगाया॥
सौभाग्यशाली वह जहाँ में, प्रभु का वंदन करें।
ले द्रव्य आठों भाव से जिन, चरण का अर्चन करें॥
हम शरण में आए प्रभु, यह वंदना स्वीकार हो।
है भावना अंतिम विशद मम्, आत्म का उद्धार हो॥
चलो-चलो रे-2 सभी नर नार, तीर्थ के दर्शन को।
कटते हैं कर्म अपार, चलो रे भाई वंदन को॥1॥

ॐ ह्रीं निर्वाणकल्याणकमण्डित श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

हैं विमलनाथ मल रहित विमल, निर्मलता श्रेष्ठ प्रदान करें।
जो शरणागत बनकर आते, भक्तों का कल्मष पूर्ण हरें॥
हम भक्त आपके गुण गाकर, यह अनुपम अर्घ्य चढ़ाते हैं।
हे नाथ! आपके चरणों में, हम सादर शीश झुकाते हैं॥2॥

दोहा– विमलनाथ तव चरण में, पाएँ हम विश्राम।
हमको प्रभु आशीष दो, बारम्बार प्रणाम॥

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित सुवीर कूट से श्री विमलनाथ तीर्थंकरादि सत्तर कोड़ा-कोड़ी साठ लाख छः हजार सात सौ ब्यालीस मुनि मोक्ष पधारे तिनके चरणारविन्द में अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सत्तर कोटा-कोटी जानो, साठ लाख ब्यालिस हज्जार।
सात सौ मुनिवर मुक्ती पाए, जिनको वन्दन बारम्बार॥

एक कोटि उपवासों का फल, कूट वन्दना किए मिले।
सम्यक् श्रद्धानी जीवों का, जिन अर्चाकर हृदय खिले॥3॥

ॐ ह्रीं श्री सप्तति कोडाकोडी षष्ठी लक्षषष्ठी सहस्र सप्त शतक एकाशीति मुनीश्वरेभ्यो नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा– विमलनाथ भगवान हैं, विमल गुणों की खान।
जिन गुण माला गाए वह, पाए केवलज्ञान॥

(वीरछन्द)

हे वीतराग सर्वज्ञ प्रभो! हमने तुमको ना पहिचाना।
इसलिये चौरासी के चक्कर, पड़ रहे अनादी से खाना॥1॥
तुम करुणा निधि हो हे स्वामी, हम द्वार आपके आये हैं।
चारों गतियों में दुख पाए, हम उनसे अब घबराए हैं॥2॥
तुम विमल गुणों के धारी हो, तुमने सत् संयम पाया है।
निज ध्यान अग्नि में हे स्वामी, कर्मों को पूर्ण जलाया है॥3॥
शत् संयम जो धारण करते, वे केवलज्ञान जगाते हैं।
वह कर्म घातिया नाश करें, फिर अनन्त चतुष्टय पाते हैं॥4॥
भगवान आपकी वाणी में, तत्त्वों का सार बताया है।
शुभ अनेकांत अरु स्याद्वाद, शत् समयसार समझाया है॥5॥
शुभ कर्म किए सुख पाएँगे, हमने अब तक ऐसा जाना।
है वीतराग शुभ धर्म 'विशद' उसको अब तक ना पहिचाना॥6॥

दोहा– वीतराग जिन धर्म को, धार बने अनगार।
कर्मनाशकर जीव सब, करें आत्म उद्धार॥

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– श्रद्धा से जिन दर्श पा, जिनवाणी से ज्ञान।
'विशद' साधना कर सदा, पावें पद निर्वाण॥

॥इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्॥

श्री अनंतनाथ निर्वाण भक्ति–14

विबुधपति-खगपति नरपति धनदोरग भूत यक्षपति महितम्।
अतुल सुख विमल निरूपम शिवमचल मनामयं हि संप्राप्तम्॥1॥
कल्याणैः संस्तोष्ये पंचभिरनघं त्रिलोक परम गुरूम्।
भव्यजनतुष्टि जननै र्दुरवापैः अनंतजिनं भक्त्या॥2॥
कार्तिक प्रतिपदायां रेवती भामध्यमाश्रिते शशिनि।
आयातः स्वर्गसुखं भुक्त्वा पुष्पोत्तराधीशः॥3॥
सिंहसेन नृपति तनयो भारतवास्ये साकेतजनपुरे।
देव्यां सर्वयशायां सुस्वप्नान् संप्रदर्श्य विभुः॥4॥
ज्येष्ठ कृष्ण रेवत्यां पुष्ययोगे दिने द्वादश्याम्।
जज्ञे स्वोच्चस्थेषु ग्रहेषु सौम्येशु शुभलग्ने॥5॥
रेवत्याश्रिते ज्येष्ठ कृष्ण पक्षे द्वादशी दिवसे।
पूर्वाण्हे रत्नघटै र्विबुधेन्द्राश्चक्रुरभिषेकम्॥6॥
भुक्त्वा कुमार काले खलु लक्ष वर्षाण्यनंत गुणराशिः।
अमरोपनीत भोगान् विधुत्याता बोधितोत्वरितः॥7॥
नानाविधरूपचितां विचित्र कूटोच्छ्रितां मणि विभूषाम्।
सागरदत्ताशिविकामारूह्य पुराद्विनिः क्रान्तः॥8॥
ज्येष्ठ कृष्ण द्वादश्यां रेवती भा मध्यमाश्रिते सोमे।
अष्टेन त्वराण्हे भक्तेन जिनः प्रवव्राज॥9॥
ग्रामपुर खेटकर्वटमटंब घोषाकरान्प्रविजहार।
उग्रैस्तोपविधानैः द्विवर्षाणिदिनामरैः पूज्यः॥10॥
सहेतुक वनस्य पिप्पल संश्रिते शिलापट्टे।
अपराण्हे षष्ठेन स्थितस्य खलु अयोध्या ग्रामे॥11॥
चैत्र कृष्ण अमावस्यां रेवती भामध्यमाश्रिते चंद्रे।
क्षपक श्रेण्यारुढस्योत्पन्नं केवलज्ञानम्॥12॥
छत्राशोकौ घोषं सिंहासन दुंदुभिः कुसुमवृष्टिम्।
वरचामर भामण्डल दिव्यान्यन्यानि चावापत्॥13॥
दस विधमनगाराणमेकादशधोत्तरं तथा धर्मम्।
देशयमानो व्यवहरं पंचसप्तति बहुलक्षवर्षाणि जिनेन्द्रः॥14॥
अथ भगवान संप्रापद् दिव्यं सम्मेद पर्वतं रम्यम्।
चातुर्वर्ण्य सुसंघस्त्रताभूदनगार प्रभृति॥15॥

पद्मवनदीर्घिका कुल विविध द्रुमखण्ड मंडितेरम्ये।
स्वयंप्रभकूटोद्याने व्युत्सर्गेण स्थितः स मुनि॥16॥
चैत्र मासामावस्या रेवती ऋक्षे निहत्यकर्मरजः।
अवशेषं संप्रापत्व्यजरामरमक्षयं सौख्यम्॥17॥
परिनिर्वृत्तं जिनेन्द्रं ज्ञात्वा विबुधहृयथाशु चागम्या।
देवतरू रक्त चंदन कालागरू सुरभिगोशीर्षैः॥18॥
अग्नीन्द्राज्जिन देहं मुकुटानल सुरभि धूपवरमाल्यैः।
अभ्यर्च्य गणधरानपि गतादिवं खं च वनभवने॥19॥

इत्येवं भगवति अनंत जिन चंद्रे यः स्तोत्रं पठति सुसंध्यो द्वर्यार्हि। सोऽनंतं परम सुखं नृ देव लोके, भुक्त्वान्ते शिवपदमक्षयं प्रयाति॥20॥
यत्रार्हतां गणभृतां श्रुतपारगाणां, निर्वाण भूमिरिह भारत वर्ष जानाम्।
तामद्य शुद्धमनसा क्रिययाश्वचोभिः, संस्तोतुमुद्यतमतिः परिणौमिभक्त्या॥21॥
माल्यानिवाक्स्तुतिमयैः कुसुमैः सुदृब्धा, न्यादाय मानसकरैरभितः किरन्तः।
पर्येम आदृतियुता भगवन्निषद्याः, संप्रार्थिता वयमिमे परामांगतिं ताः॥22॥
शत्रुञ्जये नगवरे दमितारिपक्षाः, पण्डोः सुताः परमनिर्वृत्तिमभ्युपेताः।
तुंग्यां तु संगरहितो बलभद्रनामा, नद्यास्तटे जितरिपुश्च सुवर्णभद्रः॥23॥
द्रोणीमति प्रबल कुण्डल मेढ्रके च, वैभार पर्वत तले वर सिद्ध कूटे।
ऋष्याद्रिके च विपुलाद्रिबलाहके च विन्ध्ये च पोदन पुरे वृषदीपके च॥24॥
सह्याचले च हिमवत्यपि सु प्रतिष्ठे, दण्डात्मके गजपथे पृथुसार यष्टौ।
ये साधवोहतमलाः सुगतिं प्रयाताः, स्थानानि तानि जगति प्रथितान्य भूवन्॥25॥
इक्षोर्विकार रसपृक्त गुणेन लोके पिष्टोऽधिकं मधुरतामुपयाति यद्वत्।
तद्वच्च पुण्य पुरूषै रूषितानि नित्यं, स्थानानि तानि जगतामिह पावनानि॥26॥
इत्यर्हतां शमवतां च महामुनीनां, प्रोक्तामयात्र परिनिर्वृति भूमि देशाः।
तेमे जिना जितभया मुनश्चय शांताः, दिश्यासुराशु सुगतिं निरवद्य सौख्याम्॥27॥

क्षेपक श्लोक

शांति कुन्थ्वर कौरव्या यादवौ नेमिसुव्रतौ।
उग्रनाथौ पार्श्ववीरौ शेषा इक्ष्वाकुवंशजाः॥

अंचलिका

इच्छामि भंते। परिणिव्वाण भत्ति काउस्सग्गो को तस्सालोचेउं इमम्मि चउत्थ समयस्स मज्झिमे भाए सद लक्ख कोडी छब्बीसा तिहत्तरि

णव सद सागरोवम वस्स हीणे वासचउक्कम्मि सेसकालम्मि सम्मेए पव्वए चैत किण्ह पण्णरसीए पुव्वण्हे रेवती णक्खत्ते भयवदो अणंत जिणो सिद्धिं गदो। तिसुवि लोएसु भवण वासिय वाणविंतर जोयसिय कप्पवासियत्ति चउव्विहादेवा सपरिवारा दिव्वेण ण्हाणेण, दिव्वेण गंधेण, दिव्वेण अक्खेण, दिव्वेण पुप्फेण, दिव्वेण चुण्णेण, दिव्वेण दीवेण, दिव्वेण धूवेण, दिव्वेण वासेण णिच्चकालं अच्चंति पुज्जंति, वंदंति, णमस्संति, परिणिव्वाण महाकल्लाण पुज्जं करंति। अहमवि इहसंतो तत्थ संताइयं णिच्चकालं अंचेमि, पुज्जेमि वंदामि णमस्सामि दुक्खक्खओ कम्मक्खओ बोहिलाहो सुगई गमणं समाहि मरणं जिण गुण संपत्ति होउ मज्झं।

श्री अनन्तनाथ पूजा–14

स्थापना

सोरठा– गुणानन्त के कोश, अनन्त नाथ भगवान हैं।
जीवन हो निर्दोष, आह्वानन् करते अतः॥

ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(अर्घ शम्भू छन्द)

जल पीकर भी बुझ सकी नहीं, मेरे जीवन की प्यास कभी।
जल पीते पीते युग बीते, फिर भी मन रहा उदास अभी॥1॥
ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

सूरज से भी ज्यादा गर्मी, मेरे इस तन मन में छाई हैं।
चन्दन क्या शीतलता देगा, जब धन की आस लगाई हैं॥2॥
ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय भवाताप विनाशनाय चंदनं निर्व. स्वाहा।

पद है दुनियाँ में अनगिनते, क्षण क्षण में क्षय हो जाते हैं।
यह पद पाने को जग प्राणी, मन में आकुलता पाते हैं॥3॥
ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्व. स्वाहा।

क्षण भंगुर यह जीवन गाया, हम समझ नहीं यह पाए हैं।
जो चतुर्गती का कारण है, वह चक्र काटने आए हैं॥4॥
ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

व्यंजन खाकर के कई हमने, नश्वर काया को पुष्ट किया।
आनन्द आत्मरस का हमने, शाश्वत होता जो नहीं लिया।।5।।

ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

तम हरने वाला है दीपक, जो नाश मोह ना कर पाए।
होवे प्रकाश निज चेतन में, जो दीप ज्ञान का प्रजलाए।।6।।

ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।

अग्नी में गंध जलाई है, पर कर्म नहीं जल पाए हैं।
जिसने निज आतम को ध्याया, उसने सब कर्म नशाए हैं।।7।।

ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

सब जीव कर्म का फल पाते, जिनवाणी में यह गाया है।
जो शुक्ल ध्यान में लीन हुए, उनने शाश्वत फल पाया है।।8।।

ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्व. स्वाहा।

हम भूले निज की शक्ती को, कर्मों ने दास बनाया है।
हे नाथ आपकी महिमा सुन, यह राज समझ में आया है।।9।।

ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पञ्चकल्याणक के अर्घ्य

(सुखमाछन्द)

कार्तिक वदि एकम तिथि जानो, गर्भागम प्रभु का पहिचानो।
देव रत्न वृष्टी करवाए, माँ के गर्भ का शोध कराए।।1।।

ॐ ह्रीं कार्तिक प्रतिपदायां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्येष्ठ कृष्ण द्वादशी तिथि आयी, नगर अयोध्या बजी बधाई।
जन्मोत्सव तव देव मनाए, नृत्य गान कर बाद्य बजाये।।2।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णा द्वादश्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्येष्ठ कृष्ण बारस शुभकारी, दीक्षा धार हुए अनगारी।
देव पालकी स्वर्ग से लाए, प्रभु को दीक्षा वन पहुँचाए।।3।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णा द्वादश्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चैत अमावश को जिन स्वामी, ज्ञान जगाए अन्तर्यामी।
सुर नर जय-जय कार लगाए, चरणों में नत शीश झुकाए।।4।।

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णाऽमावस्यायां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चैत अमावश तिथि शुभकारी, हुए प्रभू मुक्ती पथ धारी।
अपने आठों कर्म नशाए, मोक्ष महल में धाम बनाए।।5।।

ॐ ह्रीं चैत्र कृष्णाऽमावस्यायां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री अनन्तनाथजी की टोंक (स्वयंप्रभ कूट)

श्री सम्मेद शिखर की जय हो, मुक्त हुए जिनवर की जय हो।
उस धरती अंबर की जय हो, दुखहारी गिरवर की जय हो।।

सोरठा– मोक्ष गए तीर्थेश, श्री अनंत जिनवर परम।
दिए परम उपदेश, मोक्ष मार्ग जिनधर्म का।।

कूट स्वयंभू है मनहारी, जिन तीर्थों में अतिशयकारी।
बैठ वहाँ प्रभु ध्यान लगाए, वह भी मुक्ति वधु को पाए।।
पाए स्वयं वह मोक्ष लक्ष्मी, शिवपुरी में वास हो।
हम भावना भाते सभी का, धर्म में विश्वास हो।।
हम शरण में आए प्रभु, यह वंदना स्वीकार हो।
है भावना अंतिम विशद मम्, आत्म का उद्धार हो।।
चलो-चलो रे-2 सभी नर नार, तीर्थ के दर्शन को।
कटते हैं कर्म अपार, चलो रे भाई वंदन को।।1।।

ॐ ह्रीं निर्वाणकल्याणकमण्डित श्री अनंतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

गुण अनन्त के धारी हैं जो, जिन अनन्त है जिनका नाम।
गुण अनन्त पाने को यह जग, करता बारम्बार प्रणाम।।
चरण वन्दना करने हेतू, अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं।
अर्चा करने आज यहाँ पर, बहुत दूर से आए हैं।।2।।

दोहा– पूज्य हुए इस लोक में, हे अनन्त! जिन आप।
तव गुण पाने के लिए, करूँ नाम का जाप।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित स्वयंप्रभ कूट के दर्शन का फल

एक करोड़ उपवास श्री अनन्तनाथ तीर्थंकरादि छियानवे कोड़ा-कोड़ी सत्तर करोड़ सत्तर लाख सत्तर हजार सात सौ मुनि मोक्ष पधारे तिनके चरणारविन्द में अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

छियानवे कोटा-कोटी सत्तर, कोटी सत्तर लाख प्रमाण।
सत्तर सहस सात सौ मुनिवर, किए यहाँ से मोक्ष प्रयाण॥
कूट स्वयं प्रभु के वन्दन का फल, एक कोटि गाया उपवास।
भव्य जीव जो करें वन्दना, पाएँ वे भी शिवपुर वास॥3॥

ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राद्रि षड्नवति कोडाकोडी सप्तति कोडी सप्तति। लक्ष सप्तति सहस्र सप्त शतक एकाशीति मुनीश्वरेभ्यो नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा– जिनानन्त भगवान हैं, गुण अनन्त की खान।
गुण माला गाते विशद, करने निज कल्याण॥

(सखी छन्द)

चय अच्युत स्वर्ग से आये, इक्ष्वाकुवंशी गाए।
सिंहसेन पिता कहलाए, माँ सूर्ययशा जिन पाए॥1॥
शुभ कौशल देश कहाए, प्रभु नगर अयोध्या आये।
तव स्वर्ग समान बताया, लक्षण सेही कहलाया॥2॥
आयू पचास लख पूरव, जिन धनुष पचास अपूरव।
प्रभु उल्का पतन निहारे, जग से विरागता धारे॥3॥
दीक्षा लेने वन आए, इक सहस भूप संग पाए।
जब कर्म घातिया नाशे, तव केवल ज्ञान प्रकाशे॥4॥
गणधर पचास जिन पाए, जय प्रथम गणी कहलाए।
है यक्ष सुकिन्नर भाई, यक्षी वैरोटी गाई॥5॥
सम्मेद शिखर प्रभु आये, शिव स्वयंप्रभु कूट से पाए।
हम 'विशद' ज्ञान शुभ पाएँ, सिद्धों में धाम बनाए॥6॥

दोहा– गुण गाते हम आपके, गुण पाने भगवान।
जिन ने गुण प्रगटाए वह, पद पाए निर्वाण॥

ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– हैं अनन्त गुण आपके, महिमा का ना पार।
भक्ती कर पाएँ प्रभू, इस जीवन का सार॥

॥इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्॥

श्री धर्मनाथ निर्वाण भक्ति–15

विबुधपति-खगपति नरपति धनदोरग भूत यक्षपत्ति महितम्।
अतुल सुख विमल निरूपम शिवमचल मनामयं हि संप्राप्तम्॥1॥
कल्याणैः संस्तोष्ये पंचभिरनघं त्रिलोक परम गुरूम्।
भव्यजनतुष्टि जननै र्दुरवापैः धर्म जिनं भक्त्या॥2॥
वैशाख त्रयोदश्याम् रेवती भामध्यमाश्रिते शशिनि।
आयातः स्वर्गसुखं भुक्त्वा च सर्वार्थाधीशः॥3॥
भानुनृपति तनयो भारतवास्ये रत्नपुरी नगरे।
देव्यां प्रियसुप्रभायां सुस्वप्नान् संप्रदर्श्य विभुः॥4॥
पौष सित पुष्य शशांक योगे दिने त्रयोदश्याम्।
जज्ञे स्वोच्चस्थेषु ग्रहेषु सौम्येषु शुभ लग्ने॥5॥
पुष्याश्रिते शशांके पौष ज्योत्सने त्रयोदशी दिवसे।
पूर्वाण्हे रत्नघटै र्विबुधेन्द्राश्चक्रुरभिषेकम्॥6॥
भुक्त्वा कुमार काले सहस्र वर्षाण्यनंत गुणराशिः।
अमरोपनीत भोगान् विद्युत्पाता बोधितोत्वरितः॥7॥
नानाविधरूपचितां विचित्र कूटोच्छ्रितां मणि विभूषाम्।
नागदत्ताशिविकामारूह्य पुराद्विनिः क्रान्तः॥8॥
पौष शुक्ल पुष्य भानि मध्यमाश्रिते सोमे।
षष्टेन त्वपराण्हे भक्तेन जिनः प्रवव्राज॥9॥
ग्रामपुर खेटकर्वटमटंब घोषाकरान्प्रविजहार।
उग्रैस्तपोविधानैः एकवर्षाण्यमरैः पूज्यः॥10॥
सहेतुक वनस्य मध्ये शालद्रुम संश्रिते शिलापट्टे।
अपराण्हे अष्टेन स्थितस्य खलु रत्नपुरी ग्रामे॥11॥
पौषसित पूर्णिमायां पुष्य भानिमध्यमाश्रिते चंद्रे।
क्षपक श्रेण्यारूढस्योत्पन्नं केवलज्ञानम्॥12॥
छत्राशोकौ घोषं सिंहासन दुंदुभिः कुसुमवृष्टिम्।
वरचामर भामण्डल दिव्यान्यन्यानि चावापत्॥13॥

दस विधमनगाराणामेकादशधोत्तरं तथा धर्मम्।
देशयमानो व्यवहरं खलु लक्षवर्षाण्यथ जिनेन्द्रः॥14॥
अथ भगवान संप्रापद् दिव्यं सम्मेद पर्वतं रम्यम्।
चातुर्वर्ण्य सुसंघस्तत्राभूद् सेनगण प्रभृति॥15॥
पद्मवनदीर्घिका कुल विविध द्रुमखण्ड मंडितेरम्ये।
सुदत्त कूटोद्याने व्युत्सर्गेण स्थितः स मुनिः॥16॥
ज्येष्ठ शुक्ल चतुर्थ्या पुष्य नक्षत्रे निहत्यकर्मरजः।
अवशेषं संप्रापत्व्यजरामरमक्षयं सौख्यम्॥17॥
परिनिर्वृत्तं जिनेन्द्रं ज्ञात्वा विबुधह्यथाशु चागम्य।
देवतरू रक्त चंदन कालागरू सुरभिगोशीर्षैः॥18॥
अग्नीन्द्राज्जिन देहं मुकुटानल सुरभि धूपवरमाल्यैः।
अभ्यर्च्य गणधरानपि गतादिवं खं च वनभवने॥19॥

इत्येवं भगवति श्रीधर्म जिन चंद्रे यः स्तोत्रं पठति सुसंध्ययो र्द्वयोर्हि।
सोऽनंतं परम सुखं नृ देव लोके, भुक्त्वान्ते शिवपदमक्षयं प्रयाति॥20॥
यत्रार्हतां गणभृतां श्रुतपारगाणां, निर्वाण भूमिरिह भारत वर्ष जानाम्।
तामद्य शुद्धमनसा क्रिययावचोभिः, संस्तोतुमुद्यतमतिः परिणौमिभक्त्या॥21॥
माल्यानि वाक्स्तुतिमयैः कुसुमैः सुदृब्धा, न्यादाय मानसकरैरभितः किरन्तः।
पर्येम आदृतियुता भगवन्निषद्याः, संप्रार्थिता वयमिमे परमांगतिं ताः॥22॥
शत्रुञ्जये नगरवरे दमितारिपक्षाः पण्डोः सुताः परमनिर्वृत्तिभ्युपेताः।
तुंग्यां तु संगरहितो बलभद्रनामा, नद्यास्तटे जितरिपुश्च सुवर्णभद्रः॥23॥
द्रोणीमति प्रबल कुण्डल मेढ्रके च, वैभार पर्वत तले वर सिद्ध कूटे।
ऋष्टाद्रिके च विपुलाद्रिबलाहके च विन्ध्ये च पोदन पुरे वृषदीपके च॥24॥
सह्याचले च हिमवत्यपि सुप्रतिष्ठे, दण्डात्मके गजपथे पृथुसार यष्टौ।
ये साधवोहतमलाः सुगतिं प्रयाताः, स्थानानि तानि जगति प्रथितान्य भूवन्॥25॥
इक्षोर्विकार रसपृक्त गुणेन लोके पिष्टोऽधिकं मधुरतामुपयाति यद्वत्।
तद्वच्च पुण्य पुरुषै रूषितानि नित्यं, स्थानानि तानि जगतामिह पावनानि॥26॥
इत्यर्हतां शमवतां च महामुनीनां, प्रोक्तामयात्र परिनिर्वृति भूमि देशाः।
ते मे जिना जितमया मुनयश्च शांताः दिश्यासुराशु सुगतिं निरवद्य सौख्याम्॥27॥

क्षेपक श्लोक

शांति कुन्थ्वर कोरव्या यादवौ नेमिसुव्रतौ।
उग्रनाथौ पार्श्ववीरौ शेषा इक्ष्वाकुवंशजाः॥

अंचलिका

इच्छामि भंते। परिणिव्वाण भत्ति काउस्सग्गो कओ तस्सालोचेउं इमम्मि चउत्थ समयस्स मज्झिमे भाए सद लक्ख कोडी तीसा तिहत्तरि णव सद सागरोपम वस्सहीणे वास चउक्कम्मि सेसकालम्मि सम्मेए पव्वए जेट्ठ मासस्स सुक्क चउत्थीए पुव्वण्हे पुस्स णक्खत्ते पच्चूसे भयवदो धम्म जिणो सिद्धिं गदो। तिसुविलोएसु भवणवासिय वाणविंतर जोयसिय कप्पवासियत्ति चउव्विहादेवा सपरिवारा दिव्वेण ण्हाणेण, दिव्वेण गंधेण, दिव्वेण अक्खेण, दिव्वेण पुप्फेण दिव्वेण चुण्णेण दिव्वेण दीवेण, दिव्वेण धूवेण, दिव्वेण वासेण णिच्चकालं अच्चंति पुज्जंति, वंदंति, णमंस्संति, परिणिव्वाण महाकल्लाण पुज्जं करंति। अहमवि इहसंतो तत्थ संताइयं णिच्चकालं अंचेमि, पुज्जेमि वंदामि णमस्सामि दुक्खक्खओ कम्मक्खओ बोहिलाहो सुगई गमणं समाहि मरणं जिण गुण संपत्ति होउ मज्झं।

श्री धर्मनाथ पूजा–15

स्थापना (चाल छन्द)

जिन धर्म नाथ शिवगामी, मुक्ती पद पाए स्वामी।
उनको निज हृदय बुलाते, आह्वानन कर तिष्ठाते॥

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(केसरी छन्द)

निर्मल जल से कलश भरीजे, जिन पद में त्रयधारा दीजे।
धर्मनाथ पद शीश झुकाएँ, विशद भाव से महिमा गाएँ॥1॥

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

चन्दन में केसर घिस लीजे, जिन चरणों की अर्चा कीजे।
धर्मनाथ पद शीश झुकाएँ, विशद भाव से महिमा गाएँ॥2॥

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय भवाताप विनाशनाय चंदनं निर्व. स्वाहा।

अक्षत के शुभ थाल भराएँ, अक्षय पद पाके शिव पाएँ।
धर्मनाथ पद शीश झुकाएँ, विशद भाव से महिमा गाएँ॥3॥

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्व. स्वाहा।

पुष्प चढ़ाकर पूजा कीजे, काम रोग अपना हर लीजे।
धर्मनाथ पद शीश झुकाएँ, विशद भाव से महिमा गाएँ।।4।।
ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

ताजे शुभ नैवेद्य चढ़ाएँ, क्षुधारोग को पूर्ण नशाएँ।
धर्मनाथ पद शीश झुकाएँ, विशद भाव से महिमा गाएँ।।5।।
ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

घृत के शुभकर दीप जलाएँ, मोह तिमिर से मुक्ती पाएँ।
धर्मनाथ पद शीश झुकाएँ, विशद भाव से महिमा गाएँ।।6।।
ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।

धूप जलाएँ हम शुभकारी, अष्टकर्म की नाशन कारी।
धर्मनाथ पद शीश झुकाएँ, विशद भाव से महिमा गाएँ।।7।।
ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

पूजा करने को फल लाए, मोक्ष महाफल पाने आए।
धर्मनाथ पद शीश झुकाएँ, विशद भाव से महिमा गाएँ।।8।।
ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

पद अनर्घ्य दायक शुभकारी, अर्घ्य चढ़ाते मंगलकारी।
धर्मनाथ पद शीश झुकाएँ, विशद भाव से महिमा गाएँ।।9।।
ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पञ्चकल्याणक के अर्घ्य

(वेसरी छन्द)

सित वैशाख अष्टमी गाए, धर्म नाथ जी गर्भ में आए।
रत्नपुरी में रत्न सुवर्षे, सुरनर सभी वहाँ पे हर्षे।।1।।
ॐ ह्रीं वैशाखशुक्ला अष्टम्यां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

माघ शुक्ल तेरस शुभकारी, जन्म लिए भू पे त्रिपुरारी।
पाण्डुक वन अभिषेक कराए, देव सभी जयकार लगाये।।2।।
ॐ ह्रीं माघशुक्ला त्रयोदश्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उल्कापात देखकर स्वामी, बने मोक्ष पद के पथगामी।
माघ शुक्ल तेरस तिथि गाई, दीक्षा की पावन घड़ि आई।।3।।
ॐ ह्रीं माघशुक्ला त्रयोदश्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म घातिया आप नशाए, ऋद्धि सिद्धियाँ स्वामी पाए।
केवल ज्ञान का दीप जलाए, मुक्ती पथ की राह दिखाए।।4।।
ॐ ह्रीं पौषशुक्ला पूर्णिमायां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निज स्वभाव में रमने वाले, कर्म नाश शिवपुर को चाले।
ज्येष्ठ शुक्ल की चौथ बताई, गिर सम्मेद शिखर से भाई।।5।।
ॐ ह्रीं ज्येष्ठशुक्ला चतुर्थ्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री धर्मनाथजी की टोंक (सुदत्तवर कूट)

श्री सम्मेद शिखर की जय हो, मुक्त हुए जिनवर की जय हो।
उस धरती अंबर की जय हो, दुखहारी गिरवर की जय हो।।
सोरठा– कूट सुदत्त महान्, अतिशय कारी तीर्थ पर।
धर्मनाथ भगवान, मोक्ष गए हैं जहाँ से।।
प्रभु ने धर्म ध्वजा फहराई, अनुक्रम से फिर जहाँ से।
अष्ट कर्म का किया सफाया, केवल ज्ञान की है यह माया।।
माया कही यह ज्ञान की, जिसने जगाया है परम।
वह नाश करके भव दु:खों का, लक्ष्य पाया है चरम।।
हम शरण में आए प्रभु, यह वंदना स्वीकार हो।
है भावना अंतिम विशद मम्, आत्म का उद्धार हो।।
चलो-चलो रे-2 सभी नर नार, तीर्थ के दर्शन को।
कटते हैं कर्म अपार, चलो रे भाई वंदन को।।1।।
ॐ ह्रीं निर्वाणकल्याणकमण्डित श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय नम: अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

हे धर्म शिरोमणि धर्मनाथ!, तुम धर्म ध्वजा के धारी हो।
तुम मंगलमय हो इस जग में, प्रभु अतिशय मंगलकारी हो।।
हम भक्त आपके गुण गाकर, यह अनुपम अर्घ्य चढ़ाते हैं।
हे नाथ! आपके चरणों में हम, सादर शीश झुकाते हैं।।2।।

दोहा– धर्म धुरन्धर धर्मधर, धर्मनाथ भगवान।
जग जीवों को आपने, दिया धर्म का ज्ञान।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित (सुदत्तवर कूट के दर्शन का फल एक करोड़ उपवास) श्री धर्मनाथ तीर्थंकरादि उनतीस कोड़ा-कोड़ी उन्नीस करोड़ नौ लाख नौ हजार सात सौ पंचानवे मुनि मोक्ष पधारे तिनके चरणारविन्द में अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उन्नीस कोटा-कोटी कोटी, उन्निस हैं नव लाख प्रमाण।
नौ हजार सात सौ पंचानवे, मुनिवर पाए मोक्ष प्रयाण।।
स्वयं प्रभ कूट के वन्दन का फल, एक कोटि गाया उपवास।
भव्य जीव जो करें वन्दना, पाएँ वे भी शिवपुर वास।।3।।

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्रादि एकोनविंशति कोडाकोडी एकोनविंशति कोडी नव लक्ष नव सहस्त्र सप्त शतक एकाशीति मुनीश्वरेभ्यो नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा– धर्म धुरन्धर धर्मधर, विशद धर्म के ईश।
जयमाला गाते चरण, झुका भाव से शीश।।

(जोगीरासा छन्द)

भरत क्षेत्र में अंग देशशुभ, रत्नपुरी शुभ गाई।
सर्वार्थ सिद्धि से चयकर आये, धर्मनाथ जिन भाई।।1।।
भानुराय हैं पिता आपके, मात सुव्रता पाये।
कुरू वंश के स्वामी अनुपम, कश्यप गोत्री गाए।।2।।
हुआ जन्म तव देव यहाँ पर, जन्म कल्याण मनाए।
मेरुगिरी पे न्हवन कराके, हर्षे नाचे गाये।।3।।
धनुष पैंतालिस है ऊचाई, स्वर्ण वर्ण तुम पाए।
आयू लाख वर्ष दश की है, वज्रदण्ड पद गाए।।4।।

उल्का पात देखकर स्वामी, जग से हुए विरागी।
निज आतम का ध्यान लगाए, ज्ञान किरण तव जागी।।5।।
पाँच योजन का समवशरण तब, आके देव बनाए।
भव्य जीव तव दिव्य ध्वनी सुन, शत् श्रद्धान जगाए।।6।।

दोहा– कर्म नाशकर आपने, पाया पद निर्वाण।
तव पद के राही बनें, दो ऐसा वरदान।।

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– धर्मनाथ जी धर्म की, बहा रहे हैं धार।
अवगाहन कर जीव कई, होते भव से पार।।

।।इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

हे धर्म शिरोमणि धर्मनाथ!, तुम धर्म ध्वजा के धारी हो।
तुम मंगलमय हो इस जग में, प्रभु अतिशय मंगलकारी हो।।
हम भक्त आपके गुण गाकर, यह अनुपम अर्घ्य चढ़ाते हैं।
हे नाथ! आपके चरणों में हम, सादर शीश झुकाते हैं।।2

श्री शांतिनाथ निर्वाण भक्ति–16

विबुधपति-खगपति नरपति धनदोरग भूत यक्षपति महितम्।
अतुल सुख विमल निरूपम शिवमचल मनामयं हि संप्राप्तम्।।1।।
कल्याणैः संस्तोष्ये पंचभिरनघं त्रिलोक परम गुरूम्।
भव्यजनतुष्टि जननै र्दुरवापैः शान्ति जिनं भक्त्या।।2।।
भाद्र कृष्ण सप्तम्यां भरणी भामध्यमाश्रितेशशिनि।
आयातः स्वर्गसुखं भुक्त्वा च सर्वार्थाधीशः।।3।।
विश्वसेन नृपति तनयो भारतवास्ये कुरूहस्तिनापुरे।
देव्यां प्रियऐरायां सुस्वप्नान् संप्रदर्श्य विभुः।।4।।
ज्येष्ठ वदि भरण्याश्रिते शशांक योगे दिने चतुर्दश्याम्।
जज्ञे स्वोच्चस्थेषु ग्रहेषु सौम्येषु शुभलग्ने।।5।।
भरण्यारिते शशांके कृष्णे चतुर्दशी दिवसे।
पूर्वाण्हे रत्नघटै र्विबुधेन्द्राश्चक्रुरभिषेकम्।।6।।

भुक्त्वा कुमार काले अनेक वर्षाण्यनंत गुणराशिः।
अमरोपनीत भोगान् जाति स्मरण बोधितोत्वरितः॥7॥
नानाविधरूपचितां विचित्र कूटोच्छ्रितां मणि विभूषाम्।
सिद्धार्थाख्याशिविकामारूहृय पुराद्विनिः क्रान्तः॥8॥
ज्येष्ठ कृष्ण चतुर्दश्याम् भरणी भामध्यसमाश्रित सोमे।
ज्येष्ठ त्वपराण्हे भक्तेन जिनः प्रवव्राज॥9॥
ग्रामपुर खेटकर्वटमटंब घोषाकरान्प्रविजहार।
उग्रैस्तापोविधानैः षोडसवर्षाण्यमरैः पूज्यः॥10॥
सहेतुक वनस्य मध्ये नन्दीद्रुम संश्रिते शिलापट्टे।
अपराण्हे षष्ठेन खलु हस्तिनिकट ग्रामे॥11॥
पौषसित दशम्यां भरणी भा मध्यमाश्रिते चंद्रे।
क्षपक श्रेण्यारूढस्योत्पन्नं केवलज्ञानम्॥12॥
छत्राशोकौ घोषं सिंहासन दुंदुभिः कुसुमवृष्टिम्।
वरचामर भामण्डल दिव्यान्यन्यानि चावापत्॥13॥
दस विधमनगाराणामेकादशधोत्तरं तथा धर्मम्।
देशयमानो व्यवहरं सहस्रवर्षाण्यथ जिनेन्द्रः॥14॥
अथ भगवान संप्रापद् दिव्यं सम्मेद पर्वतं रम्यम्।
चातुर्वर्ण्य सुसंघस्तत्राभूद् चक्राय प्रभृति॥15॥
पद्मवनदीर्घिका कुल विविध द्रुमखण्ड मंडितेरम्ये।
कुन्द प्रभ कूटोद्याने व्युत्सर्गेण स्थितः स मुनिः॥16॥
ज्येष्ठ कृष्ण चतुर्दश्यां भरण्यामृक्षे निहत्यकर्मरजः।
अवशेषं संप्रापत्व्यजरामरमक्षयं सौख्यम्॥17॥
परिनिर्वृत्तं जिनेन्द्रं ज्ञात्वा विबुधहृयथाशु चागम्य।
देवतरू रक्त चंदन कालागरू सुरभिगोशीर्षैः॥18॥
अग्नीन्द्राज्जिन देहं मुकुटानल सुरभि धूपवरमाल्यैः।
अभ्यर्च्य गणधरानपि गतादिवं खं च वनभवने॥19॥
इत्येवं भगवति शीतल जिन चंद्रे यः स्तोत्रं पठति सुसंध्ययो र्द्वयोर्हि।
सोऽनंतं परम सुखं नृ देव लोके, भुक्त्वान्ते शिवपदमक्षयं प्रयाति॥20॥
यत्रार्हतां गणभृतां श्रुतपारगाणां, निर्वाण भूमिरिह भारत वर्ष जानाम्।
तामद्य शुद्धमनसा क्रिययावचोभिः, संस्तोतुमुद्यतमतिः परिणौमिभक्त्या॥21॥
माल्यानि वाक्स्तुतिमयैः कुसुमैः सुदृब्धा, न्यादाय मानसकरैरभितः किरन्तः।
पर्येम आदृतियुता भगवन्निषद्याः, संप्रार्थिता वयमिमे परमांगतिं ताः॥22॥
शत्रुञ्जये नगवरे दमितारिपक्षाः पण्डोः सुताः परमनिर्वृत्तिमभ्युपेताः।

तुंग्यां तु संगरहितो बलभद्रनामा, नद्यास्तटे जितरिपुश्च सुवर्णभद्रः॥23॥
द्रोणीमति प्रबल कुण्डल मेढ्रके च, वैभार पर्वत तले वर सिद्ध कूटे।
ऋष्याद्रिके च विपुलाद्रिबलाहके च विन्ध्ये च पोदन पुरे वृषदीपके च॥24॥
सह्याचले च हिमवत्यपि सु प्रतिष्ठे, दण्डात्मके गजपथे पृथुसार यष्टौ।
ये साधवोहतमलाः। सुगतिं प्रयाताः, स्थानानि तानि जगति प्रथितान्य भूवन्॥25॥
इक्षोर्विकार रसपृक्त गुणेन लोके पिष्टोऽधिकं मधुरतामुपयाति यद्वत्।
तद्वच्च पुण्य पुरुषै रूषितानि नित्यं, स्थानानि तानि जगतमिह पावनानि॥26॥
इत्यर्हतां शमवतां च महामुनीनां, प्रोक्तामयात्र परिनिर्वृति भूमि देशाः।
ते मे जिना जितमया मुनयश्च शांताः दिश्यासुराशु सुगतिं निरवद्य सौख्याम्॥27॥

क्षेपक श्लोक

शंति कुन्थ्वर कौरव्या यादवौ नेमिसुव्रतौ।
उग्रनाथौ पार्श्ववीरौ शेषा इक्ष्वाकुवंशजाः॥

अंचलिका

इच्छामि भंते। परिणिव्वाण भत्ति काउस्सग्गो कओ तस्सालोचेउं इमम्मि चउत्थ समयस्स मज्झिमे भाए सद लक्ख कोडि पोण पल्लूण तेत्तीसा तिहत्तरि णव सद सागरोपम वस्स हीणे वासचउक्कम्मि सेसकालिम्मि सम्मेए पव्वए जेट्ठ किण्ह चउदसीए पुव्वण्हे भरणी णक्खत्ते भयवदो संतिजिणो सिद्धिं गदो। तिसुवि लोएसु, भवणवासिय-वाणविंतर जोयसिय कप्पवासियत्ति चउव्विहादेवा सपरिवारा दिव्वेण ण्हाणेण, दिव्वेण गंधेण, दिव्वेण अक्खेण, दिव्वेण पुप्फेण दिव्वेण चुण्णेण दिव्वेण दीवेण, दिव्वेण धूवेण, दिव्वेण वासेण णिच्चकालं अंच्चंति, पूजंति, वंदंति, णमंस्संति, परिणिव्वाण महाकल्लाण पुज्जं करंति। अहमवि इहसंतो तत्थ संताइयं णिच्चकालं अंचेमि, पुज्जेमि वंदामि णमस्सामि दुक्खक्खओ कम्मक्खओ बोहिलाहो सुगई गमणं समाहि मरणं जिण गुण संपत्ति होउ मज्झं।

श्री शांतिनाथ पूजा–16

स्थापना (सखी छन्द)

हैं शांतिनाथ शिवकारी, इस जग में मंगलकारी।
निज उर में हम तिष्ठाएँ, पूजा करके सुख पाएँ॥

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट आह्वाननं।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(केसरी छन्द)

प्रासुक हमने नीर कराया, शिवपद पाने यहाँ चढ़ाया।
यही भावना विशद हमारी, पाएँ मुक्ती हे त्रिपुरारी।।1।।
ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

चन्दन यहाँ चढ़ाने लाए, भव सन्ताप नाश हो जाए।
यही भावना विशद हमारी, पाएँ मुक्ती हे त्रिपुरारी।।2।।
ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय भवाताप विनाशनाय चंदनं निर्व. स्वाहा।

अक्षत हमने यहाँ चढ़ाए, अक्षय पद पाने हम आए।
यही भावना विशद हमारी, पाएँ मुक्ती हे त्रिपुरारी।।3।।
ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्व. स्वाहा।

पुष्प चढ़ाते यह शुभकारी, काम नाश हो हे त्रिपुरारी
यही भावना विशद हमारी, पाएँ मुक्ती हे त्रिपुरारी।।4।।
ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

यह नैवेद्य चढ़ाने लाए, क्षुधा नाश करने हम आए।
यही भावना विशद हमारी, पाएँ मुक्ती हे त्रिपुरारी।।5।।
ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

मोह तिमिर का नाशनकारी, दीप चढ़ाते मंगलकारी।
यही भावना विशद हमारी, पाएँ मुक्ती हे त्रिपुरारी।।6।।
ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।

अग्नी में यह धूप जलाएँ, कर्म नाश सारे हो जाएँ।
यही भावना विशद हमारी, पाएँ मुक्ती हे त्रिपुरारी।।7।।
ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल से पूज रहे जिनस्वामी, हम भी बने मोक्ष पथ गामी।
यही भावना विशद हमारी, पाएँ मुक्ती हे त्रिपुरारी।।8।।
ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ्य चढ़ाकर हम हर्षाएँ, पद अनर्घ हम भी पा जाएँ
यही भावना विशद हमारी, पाएँ मुक्ती हे त्रिपुरारी।।9।।
ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पञ्चकल्याणक के अर्घ्य

भादों कृष्ण सप्तमी जानो, प्रभू गर्भ में आये मानो।
दिव्य रत्न खुश हो वर्षाए, देव सभी तब हर्ष मनाए।।1।।
ॐ ह्रीं भाद्र पद कृष्ण सप्तमयां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्येष्ठ कृष्ण चौदस को स्वामी, जन्मे शांतिनाथ शिवगामी।
सारे जग ने हर्ष मनाया, जिनवर का जयकारा गाया।।2।।
ॐ ह्रीं ज्येष्ठ कृष्ण चतुर्दश्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्येष्ठ कृष्ण की चौदस भाई, शांतिनाथ जिन दीक्षा पाई।
जिनके मन वैराग्य समाया, छोड़ चले इस जग की माया।।3।।
ॐ ह्रीं ज्येष्ठ कृष्ण चतुर्दश्यां तपोकल्याणक प्राप्त श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पौष शुक्ल दशमी शुभकारी, विशद ज्ञान पाये त्रिपुरारी।
ॐकार मय ध्वनि गुंजाए, भव्यों को शिवराह दिखाए।।4।।
ॐ ह्रीं पौष शुक्ल दशम्यां केवल ज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्येष्ठ कृष्ण चौदस शुभ गाई, शांतिनाथ जिन मुक्ती पाई।
प्रभु ने सारे कर्म नशाए, शिवपुर अपना धाम बनाए।।5।।
ॐ ह्रीं ज्येष्ठ कृष्ण चतुर्दश्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री शान्तिनाथजी भगवान की टोंक (कुन्दप्रभ कूट)

श्री सम्मेद शिखर की जय हो, मुक्त हुए जिनवर की जय हो।
उस धरती अंबर की जय हो, दुखहारी गिरवर की जय हो।।

सोरठा– कूट कुन्दप्रभ जान, शांतिनाथ भगवान की।
मोक्ष गए भगवान, कर्मनाश कर जहाँ से।।

शांतिनाथ शांति के दाता, तीन लोक में आप विधाता।
प्रभु हैं जन-जन के उपकारी, सर्व जहाँ में मंगलकारी।।
सारे जहाँ में आप मंगल, कर रहे सद्धर्म से।
पुण्य का संचय करें, प्राणी सभी सत्कर्म से।।
हम शरण में आए प्रभु, यह वंदना स्वीकार हो।
है भावना अंतिम विशद मम्, आत्म का उद्धार हो।।
चलो-चलो रे-2 सभी नर नार, तीर्थ के दर्शन को।
कटते हैं कर्म अपार, चलो रे भाई वंदन को।।1।।

ॐ ह्रीं निर्वाणकल्याणकमण्डित श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

हे शांतिनाथ! शांती दाता, जन-जन को शांति प्रदान करो।
भवि जीवों के उर में स्वामी, अब 'विशद' भावना आप भरो।
हम भक्त आपके गुण गाकर, यह अनुपम अर्घ्य चढ़ाते हैं।
हे नाथ! आपके चरणों में हम, सादर शीश झुकाते हैं।।2।।

दोहा– शान्ति का दरिया बहे, शान्तिनाथ के द्वार।
सद्भक्ति से भक्त का, होता बेड़ा पार।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित कुन्दप्रभ कूट से श्री शांतिनाथ तीर्थंकरादि नौ कोड़ा-कोड़ी नौ लाख नौ हजार नौ सौ निन्यानवे मुनि मोक्ष पधारे तिनके चरणारविन्द में अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नौ कोटा-कोटी नौ लख और, नौ हजार नौ शतक प्रमाण।
निन्यानवे संख्या मुनियों की, पाए हैं जो पद निर्वाण।।
असंख्यात मुनियों ने गिरि पर, किया बैठकर आतम ध्यान।
एक कोटि प्रोषध का फल हो, करें भाव से जो गुणगान।।3।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्रादि नव कोडाकोडी नव लक्ष नव सहस्र नव शतक नवनवति मुनीश्वरेभ्यो नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा– शांति प्रदायिक शांति जिन, तीनों लोक त्रिकाल।
जिनकी गाते भाव से, नत होके जयमाल।।

(छन्द-तामरस)

चिच्चेतन गुणवान नमस्ते, गुण अनन्त की खान नमस्ते।
शांतिनाथ भगवान नमस्ते, वीतराग विज्ञान नमस्ते।।1।।
सम्यक् श्रद्धाधार नमस्ते, विशद ज्ञान के हार नमस्ते।
सम्यक् चारित वान नमस्ते, तपधारी गुणवान नमस्ते।।2।।
जगती पति जगदीश नमस्ते, ऋद्धी धार ऋशीष नमस्ते।
गर्भ कल्याणक वान नमस्ते, प्राप्त जन्म कल्याण नमस्ते।।3।।
तप कल्याणक धार नमस्ते, केवल ज्ञानाधार नमस्ते।
मोक्ष महल के ईश नमस्ते, वीतराग धारीश नमस्ते।।4।।
जन्म के अतिशय वान नमस्ते, ज्ञान के भी दश जान नमस्ते।
देवों के शुभकार नमस्ते, प्रातिहार्य भी धार नमस्ते।।5।।
अनन्त चतुष्टय वान नमस्ते, शुभ छियालिस गुणवान नमस्ते।
करके आतम ध्यान नमस्ते, पाए पद निर्वाण नमस्ते।।6।।

दोहा– शांति के हैं कोष जिन, शांती के आधार।
विशद शांति पाए स्वयं, शांति के दातार।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– शांती पाने के लिए, भक्त खड़े हैं द्वार।
सुनो प्रार्थना हे प्रभो! बोलें जय-जयकार।।

।।इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

श्री कुन्थुनाथ निर्वाण भक्ति–17

विबुधपति-खगपति नरपति धनदोरग भूत यक्षपति महितम्।
अतुल सुख विमल निरूपम शिवमचल मनामयं हि संप्राप्तम्।।1।।
कल्याणैः संस्तोष्ये पंचभिरनघं त्रिलोक परम गुरूम्।
भव्यजनतुष्टि जननैर्दुरवापैः कुंथु जिनं भक्त्या।।2।।

श्रावण कृष्ण दशम्यां कृतिका भामध्यमाश्रिते शशिनि।
आयातः स्वर्गसुखं भुक्त्वा च सर्वार्थाधीशः।।3।।
सूरसेन नृपति तनयो भारतवास्ये कुरू हस्तिनापुरे।
देव्यां श्रीकान्तायां सुस्वप्नान् संप्रदर्श्य विभुः।।4।।
बैशाख शुक्ल कृतिका शशांक योगे दिने प्रतिपदायाम्।
जज्ञे स्वोच्चस्थेषु ग्रहेषु सौम्येषु शुभ लग्ने।।5।।
कृतिकाश्रिते शशांके वैशाख ज्योत्सने प्रतिपदा दिवसे।
पूर्वाण्हे रत्नघटै र्विबुधेन्द्राश्चक्रुरभिषेकम्।।6।।
भुक्त्वा कुमार काले सहस्र वर्क्षाण्यनंत गुणराशिः।
अमरोपनीत भोगान् जातिस्मरण बोधितो त्वरितः।।7।।
नानाविधरूपचितां विचित्र कूटोच्छ्रितां मणि विभूषाम्।
विजयाख्यानाम् शिविकामारूह्य पुराद्विनिः क्रान्तः।।8।।
वैशाख शुक्ल एका कृतिका भामध्यमाश्रिते सोमे।
अष्टेन त्वपराण्हे भक्तेन जिनः प्रवव्राज।।9।।
ग्रामपुर खेटकर्वटमटंब घोषाकरान्प्रविजहार।
उग्रैस्तपोविधानैः षोडसवर्षाण्यमरैः पूज्यः।।10।।
सहेतुक वनस्य मध्ये तिलकद्रुम संश्रिते शिलापट्टे।
अपराण्हे षष्टेन स्थितस्य खलु हस्तिनिकट ग्रामे।।11।।
चैत्र शुक्ल तृतीयायां कृतिका भानिमध्यमाश्रिते चंद्रे।
क्षपक श्रेण्यारूढस्योत्पन्नं केवलज्ञानम्।।12।।
छत्राशोकौ घोषं सिंहासन दुंदुभिः कुसुमवृष्टिम्।
वरचामर भामण्डल दिव्यान्यन्यानि चावापत्।।13।।
दस विधमनगाराणामेकादशधोत्तरं तथा धर्मम्।
देशयमानो व्यवहरं सहस्रवर्षाण्यथ जिनेन्द्रः।।14।।
अथ भगवान संप्रापद् दिव्यं सम्मेद पर्वतं रम्यम्।
चातुर्वर्ण्य सुसंघस्तत्राभूद स्वयंभु प्रभृति।।15।।
पद्मवनदीर्घिका कुल विविध द्रुमखण्ड मंडितेरम्ये।
ज्ञानधर कूटोद्याने व्युत्सर्गेण स्थितः स मुनिः।।16।।
वैशाख शुक्ल एका कृतिकामृक्षे निहत्य कर्मरजः।
अवशेषं संप्रापत्व्यजरामरमक्षयं सौख्यम्।।17।।
परिनिवर्वृत्तं जिनेन्द्रं ज्ञात्वा विबुधहृयथाशु चागम्य।
देवतरू रक्त चंदन कालागरू सुरभिगोशीर्षैः।।18।।

अग्नीन्द्राज्जिन देहं मुकुटानली सुरभि धूपवरमाल्यैः।
अभ्यर्च्य गणधरानपि गतादिवं खं च वनभवने।।19।।
इत्येवं भगवति कुंथुजिन चंद्रे यः स्तोत्रं पठति सुसंध्ययो र्द्वयोर्हि।
सोऽनंतं परम सुखं नृ देव लोके, भुक्त्वान्ते शिवपदमक्षपयं प्रयाति।।20।।
यत्रार्हतां गणभृतां श्रुतपारगाणां, निर्वाण भूमिरिह भारत वर्ष जानाम्।
तामद्य शुद्धमनसा क्रियायावचोभिः, संस्तोतुमुद्यतमतिः परिणौमिभक्त्या।।21।।
माल्यानि वाक्स्तुतिमयैः कुसुमैः सुदृब्धाः, न्यादाय मानसकरैरभितः किरन्तः।
पर्येम आदृतियुता भगवन्निषद्याः, संप्रार्थिता वयमिमे परमांगतिं ताः।।22।।
शत्रुञ्जये नगवरे दमितारिपक्षाः पण्डोः सुताः परमनिर्वृत्तिमभ्युपेताः।
तुंग्यां तु संगरहितो बलभद्रनामा, नद्यास्तटे जितरिपुश्च सुवर्णभद्रः।।23।।
द्रोणीमति प्रबल कुण्डल मेढ्रके च, वैभार पर्वत तले वर सिद्ध कूटे।
ऋष्याद्रिके च विपुलाद्रिबलाहके च विन्ध्ये च पोदन पुरे वृषदीपके च।।24।।
सह्याचले च हिमवत्यपि सुप्रतिष्ठे, दण्डात्मके गजपथे पृथुसार यष्टौ।
ये साधवोहतमलाः सुगतिं प्रयाताः, स्थानानि तानि जगति प्रथितान्य भूवन्।।25।।
इक्षोर्विकार रसपृक्त गुणेन लोके पिष्टोऽधिकं मधुरतामुपयाति यद्वत्।
तद्वच्च पुण्य पुरुषै रूषितानि नित्यं, स्थानानि तानि जगतामिह पावनानि।।26।।
इत्यर्हतां शमवतां च महामुनीनां, प्रोक्तामयात्र परिनिर्वृति भूमि देशाः।
ते मे जिना जितमया मुनयश्च शांताः दिश्यासुराशु सुगंति निरवद्य सौख्याम्।।27।।

क्षेपक श्लोक

शांति कुन्थ्वर कौरव्या यादवौ नेमिसुव्रतौ।
उग्रनाथौ पार्श्ववीरौ शेषा इक्ष्वाकुवंशजाः।।

अंचलिका

इच्छामि भंते। परिणिव्वाण भत्ति काउस्सग्गो कओ तस्सालोचेउं इमम्मि चउत्थ समयस्स मज्झिमे भाए सद लक्ख कोडी सवापल्लूण तेत्तीसा तिहत्तरि णवसद सागरोपम वस्सहीणे वास चउक्कम्मि सेसकालम्मि सम्मेए पव्वए वैसाख सुक्क पडिवदाए अपराण्हे कत्तिकाए णक्खत्ते भयवदो कुंथुजिणो सिद्धिं गदो तिसुविलोएसु भवणवासिए वाणविंतर जोयसिय कप्पवासियत्ति चउव्विहादेवा सपरिवारा दिव्वेण ण्हाणेण, दिव्वेण गंधेण, दिव्वेण अक्खेण,

दिव्वेण पुप्फेण दिव्वेण चुण्णेण दिव्वेण दीवेण, दिव्वेण धूवेण, दिव्वेण वासेण णिच्चकालं अंच्चंति पूजंति, वंदंति, णमंस्संति, परिणिव्वाण महाकल्लाण पुज्जं करंति। अहमवि इहसंतो तत्थ संताइयं णिच्चकालं अंचेमि, पुज्जेमि वंदामि णमस्सामि दुक्खक्खओ कम्मक्खओ बोहिलाहो सुगई गमणं समाहि मरणं जिण गुण संपत्ति होउ मज्झं।

श्री कुन्थुनाथ पूजा–17

स्थापना (चाल छन्द)

हैं कुन्थुनाथ अविकारी, जिनकी है महिमा न्यारी।
जिनको हम पूज रचाते, अपने उर में तिष्ठाते॥

ॐ ह्रीं श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(स्रग्विणी छन्द) (लक्ष्मीधरा छन्द)

नीर निर्मल से झारी भरा लाए हैं,
रोग जन्मादी के नाश को आए हैं।
कुन्थु जिनवर की पूजा रचाते सही,
प्राप्त हो हमको हे नाथ अष्टम मही॥1॥

ॐ ह्रीं श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

केशरादी से हमने कटोरी भरी,
जिन प्रभू पाद में आन चर्चन करी
कुन्थु जिनवर की पूजा रचाते सही,
प्राप्त हो हमको हे नाथ अष्टम मही॥2॥

ॐ ह्रीं श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय भवाताप विनाशनाय चंदनं निर्व. स्वाहा।

दुग्ध के फैन सम श्वेत अक्षत लिए,
आत्मनिधि प्राप्त हो पुंज रचना किए।
कुन्थु जिनवर की पूजा रचाते सही,
प्राप्त हो हमको हे नाथ अष्टम मही॥3॥

ॐ ह्रीं श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्व. स्वाहा।

बाग से फूल चुनकर यहाँ लाए हैं,
काम का रोग हरने शरण आए हैं।
कुन्थु जिनवर की पूजा रचाते सही,
प्राप्त हो हमको हे नाथ अष्टम मही॥4॥

ॐ ह्रीं श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

ताजे नैवेद्य हम यह चढ़ाते अहा,
क्षुधा व्याधी नशे लक्ष्य मेरा रहा॥
कुन्थु जिनवर की पूजा रचाते सही,
प्राप्त हो हमको हे नाथ अष्टम मही॥5॥

ॐ ह्रीं श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

प्रज्ज्वलित दीप लेके करें आरती,
हृदय जागे मेरे ज्ञान की भारती।
कुन्थु जिनवर की पूजा रचाते सही,
प्राप्त हो हमको हे नाथ अष्टम मही॥6॥

ॐ ह्रीं श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।

धूप दश गंध ले अग्नि में जारते,
कर्म शत्रू प्रभु आप ही निवारते।
कुन्थु जिनवर की पूजा रचाते सही,
प्राप्त हो हमको हे नाथ अष्टम मही॥7॥

ॐ ह्रीं श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल ये ताजे सरस थाल भर लाए हैं,
मोक्ष पद प्राप्त हो भावना भाए हैं।
कुन्थु जिनवर की पूजा रचाते सही,
प्राप्त हो हमको हे नाथ अष्टम मही॥8॥

ॐ ह्रीं श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

नीर गंधादि से स्वर्ण थाली भरें,
नाथ पद पूजते, सर्वसिद्धी करें।
कुन्थु जिनवर की पूजा रचाते सही,
प्राप्त हो हमको हे नाथ अष्टम मही॥9॥

ॐ ह्रीं श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पञ्चकल्याणक के अर्घ्य

(तोटक छन्द)

श्रावण कृष्ण दशें को भाई, गर्भ में आए कुन्थु जिनेश।
दिव्य रत्न देवों ने आकर, पृथ्वी पर वर्षाए विशेष॥1॥

ॐ ह्रीं श्रावणकृष्णा दशम्यां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

एकम सुदि वैशाख बताई, नगर हस्तिनापुर शुभकार।
जन्म कल्याणक देव मनाए, हुई धरा पर जय जयकार॥2॥

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्ला प्रतिपदायां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुक्ल पक्ष वैशाख सु एकम, दीक्षा धारे कुन्थूनाथ।
कामदेव चक्री पद छोड़ा, तीर्थकर पद पाए सनाथ॥3॥

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्ला प्रतिपदायां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चैत्र शुक्ल की तृतिया जानो, प्रगटाए प्रभु केवल ज्ञान।
इन्द्र शरण में आये मिलकर, समवशरण सुर रचे महान॥4॥

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्ला तृतीयायां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुदि वैशाख तिथी एकम को, कीन्हें प्रभु जी कर्म विनाश।
कूट ज्ञानधर से जिन स्वामी, सिद्ध शिला पर कीन्हे वास॥5॥

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्ला प्रतिपदायां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री कुन्थुनाथजी की टोंक (ज्ञानधर कूट)

श्री सम्मेद शिखर की जय हो, मुक्त हुए जिनवर की जय हो।
उस धरती अंबर की जय हो, दुखहारी गिरवर की जय हो॥
सोरठा– कुंथुनाथ भगवान, परम ज्ञानधर कूट से।
पाए पद निर्वाण, मुक्त हुए संसार से॥

पावन कूट ज्ञानधर भाई, कुंथुनाथ जिन मुक्ति पाई।
अन्य मुनीश्वर ध्यान लगाए, कर्म नाश कर मोक्ष सिधाए॥
पाए हैं मुक्तिधाम अनुपम, नहीं जिसका अंत है।
अतिशय मनोहर कूट अनुपम, विशद महिमावंत है॥
हम शरण में आए प्रभु, यह वंदना स्वीकार हो।
है भावना अंतिम विशद मम्, आत्म का उद्धार हो॥
चलो-चलो रे-2 सभी नर नार, तीर्थ के दर्शन को।
कटते हैं कर्म अपार, चलो रे भाई वंदन को॥1॥

ॐ ह्रीं निर्वाणकल्याणकमण्डित श्री कुंथनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

कुन्थुनाथ त्रय पद के धारी, बनकर कीन्हें कर्म विनाश।
हेकुन्थुनाथ त्रयपद के स्वामी!, किया आपने शिवपुर वास॥
चरण वन्दना करने हेतू, अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं।
अर्चा करने आज यहाँ पर, बहुत दूर से आए हैं॥2॥
दोहा– तीन लोक के श्रेष्ठतम, कुन्थुनाथ भगवान।
सारे कर्म विनाश कर, पाया पद निर्वाण॥

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित ज्ञानधर कूट से श्री कुन्थुनाथ तीर्थंकरादि छियानवे कोड़ा-कोड़ी छियानवे करोड़ बत्तीस लाख, छियानवे हजार सात सौ बयालीस मुनि मोक्ष पधारे तिनके चरणारविन्द में अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

छियानवे कोटा कोटी छियानवे, कोटि बत्तिस लाख प्रमाण।
छियानवे सहस्त्र सात सौ ब्यालिस, किए मुनीश्वर मोक्ष प्रयाण॥
असंख्यात मुनियों ने गिरि पर, किया बैठकर आतम ध्यान।
एक कोटि प्रोषध का फल हो, करें भाव से जो गुणगान॥3॥

ॐ ह्रीं श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्रादि षड्नवति कोडाकोडी षड्नवति कोडी द्वात्रिंशत् लक्ष षड्नवति सहस्त्रसप्तशतक द्विचत्वारिंशत् मुनीश्वरेभ्यो नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा– त्रयपद धारी जिन हुए, कुन्थुनाथ भगवान।
जयमाला वर्णन करें, करने प्रभु गुणगान॥

(कुसुमलता छन्द)

जम्बुद्वीप में नगर हस्तिनागपुर गाया है मंगलकार।
सूरसेन राजा कहलाए, रानी श्री मती मनहार।।1।।
सर्वार्थ सिद्धि से चयकर आये, गर्भागम पाए भगवान।
रत्न वृष्टि की तव देवों ने, प्रभु फिर पाए जन्म कल्याण।।2।।
इन्द्र राज ने मेरुगिरी पर, न्हवन कराया मंगलकार।
बकरा चिन्ह देखकर बोला, कुन्थुनाथ का जय-जयकार।।3।।
सहस पंचानवे वर्ष की आयू, तन पाए प्रभु स्वर्ण समान।
पैंतिस धनुष रही ऊँचाई, प्रभू जगाए भेद विज्ञान।।4।।
विजया लाए देव पालकी, वन में जाके कीन्हा ध्यान।
कर्म घातिया नाश किए प्रभु, प्रगटाए तव केवल ज्ञान।।5।।
चार योजन का समवशरण था, दिव्य देशना दिए महान।
भव्य जीव श्रद्धान जगाए, संयम धारे चरणों आन।।6।।

दोहा– सर्वकर्म का नाशकर, पाए पद निर्वाण।
सुर नरेन्द्र नर चरण में, विशद करें गुणगान।।

ॐ ह्रीं श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– महिमा जिनकी अगम है, अगम है जिनका ज्ञान।
अगम भक्ति करके मिले, जीवों को निर्वाण।।

।।इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

श्री अरहनाथ निर्वाण भक्ति–18

विबुधपति-खगपति नरपति धनदोरग भूत यक्षपति महितम्।
अतुल सुख विमल निरूपम शिवमचल मनामयं हि संप्राप्तम्।।1।।
कल्याणैः संस्तोष्ये पंचभिरनघं त्रिलोक परम गुरूम्।
भव्यजनतुष्टि जनमै र्दुरवापैः अरहजिनं भक्तया।।2।।
फाल्गुन सित तृतियायां रेवती भा मध्यमाश्रिते शशिनि।
आयातः स्वर्गसुखं भुक्त्वा सर्वार्थाधीशः।।3।।
सुदर्शन नृपति तनयो भारतवास्ये कुरूहस्तिनापुरे।
देव्यां मित्र सेनायां सुखप्नान् संप्रदर्श्य विभुः।।4।।
मार्ग शुक्ल रोहिण्यां शशांक योगे दिने चतुर्दश्याम्।

जज्ञे स्वोच्चस्थेषु ग्रहेषु सौम्येषु शुभलग्ने।।5।।
रोहिणी शशांके खलु मार्ग ज्योत्सने चतुर्दशी दिवसे।
पूर्वाण्हे रत्नघटै खलु मार्ग र्विबुधेन्द्राश्चुरभिषेकम्।।6।।
भुक्त्वा कुमार काले सहस्र वर्षाण्यनंत गुणराशिः।
अमरोपनीत भोगान् मेघनाशाबोधितो त्वरितः।।7।।
नानाविधरूपचितां विचित्र कूटोच्छ्रितां मणि विभूषाम्।
वैजयन्ताख्य शिविकामारूह्य पुराद्विनिक्रान्तः।।8।।
मार्ग शुक्ल दशम्यां रेवती भामध्यमाश्रिते सोमे।
षष्टेन त्वपराण्हे भक्तेन जिनः प्रवव्राज।।9।।
ग्रामपुर खेटकर्वटमटंब घोषाकरान्प्रविजहार।
उग्रैस्तपोविधानैः षोडसवर्षाण्यमरैः पूज्यः।।10।।
सहेतुक वनस्य मध्ये आम्रद्रुम संश्रिते शिलापट्टे।
अपराण्हे षष्ठेन स्थितस्य खलु हस्ति निकट ग्रामे।।11।।
कार्तिक सित द्वादश्यां रेवती भामध्यमाश्रिते चंद्रे।
क्षपक श्रेण्यारूढस्योत्पन्नं केवलज्ञानम्।।12।।
छत्राशोकौ घोषं सिंहासन दुंदुभिः कुसुमवृष्टिम्।
वरचामर भामण्डल दिव्यान्यन्यानि चावापत्।।13।।
दस विधमनगाराणमेकादशधोत्तरं तथा धर्मम्।
देशयमानो व्यवहरं सहस्रवर्षाणि जिनेन्द्रः।।14।।
अथ भगवान संप्रापद् दिव्यं सम्मेद पर्वतं रम्यम्।
चातुर्वर्ण्य सुसंघस्तत्राभूद कुम्भगण प्रभृति।।15।।
पद्मवनदीर्घिका कुल विविध द्रुमखण्ड मंडितेरम्ये।
नाटककूटोद्याने व्युत्सर्गेण स्थितः स मुनिः।।16।।
चैत्रासित अमावस्यां रेवतीमृक्षे निहत्य कर्मरजः।
अवशेषं संप्रापत्व्यजरामरमक्षयं सौख्यम्।।17।।
परिनिर्वृत्तं जिनेन्द्र ज्ञात्वा विबुधहृयथाशु चागम्य।
देवतरू रक्त चंदन कालागरू सुरभिगोशीर्षैः।।18।।
अग्नीन्द्राज्जिन देहं मुकुटानल सुरभि धूपवरमाल्यैः।
अभ्यर्च्य गणधरानपि गतादिवं खं च वनभवने।।19।।

इत्येवं भगवति अरहजिन चंद्रे यः स्तोत्रं पठति सुसंध्ययो र्द्वयोर्हि।
सोऽनंतं परम सुखं नृ देव लोके, भुक्त्वान्ते शिवपदमक्षयं प्रयाति।।20।।
यत्रार्हतां गणभृतां श्रुतपारगाणां, निर्वाण भूमिरिह भारत वर्ष जानाम्।

तामद्य शुद्धमनसा क्रिययावचोभिः, संस्तोतुमुद्यतमतिः परिणौमिभक्त्या॥21॥
माल्यानि वाक्स्तुतिमयैः कुसुमैः सुदृब्धा, न्यादाय मानसकरैरभितः किरन्तः।
पर्येम आदृतियुता भगवन्निषद्याः, संप्रार्थिता वयमिमे परमांगतिं ताः॥22॥
शत्रुञ्जये नगवरे दमितारिपक्षाः पण्डोः सुताः परमनिर्वृत्तिमभ्युपेताः।
तुंग्यां तु संगरहितो बलभद्रनामा, नद्यास्तटे जितरिपुश्च सुवर्णभद्रः॥23॥
द्रोणीमति प्रबल कुण्डल मेढ्रके च, वैभार पर्वत तले वर सिद्ध कूटे।
ऋष्याद्रिके च विपुलाद्रिबलाहके च विन्ध्ये च पोदन पुरे वृषदीपके च॥24॥
सह्याचले च हिमवत्यपि सुप्रतिष्ठे, दण्डात्मके गजपथे पृथुसार यष्टौ।
ये साधवोहतमलाः सुगतिं प्रयाताः, स्थानानि तानि जगति प्रथितान्य भूवन्॥25॥
इक्षोर्विकार रसपृक्त गुणेन लोके पिष्टोऽधिकं मधुरतामुपयाति यद्वत्।
तद्वच्च पुण्य पुरुषै रूषितानि नित्यं, स्थानानि तानि जगतामिह पावनानि॥26॥
इत्यर्हतां शमवतां च महामुनीनां, प्रोक्तामयात्र परिनिर्वृति भूमि देशाः।
ते मे जिना जितमया मनुयश्च शांताः दिश्यासुराशु सुगतिं निरवद्य सौख्याम्॥27॥

क्षेपक श्लोक

शांति कुन्थुवर कौरव्या यादवौ नेमिसुव्रतौ।
उग्रनाथौ पार्श्ववीरौ शेषा इक्ष्वाकुवंशजाः॥

अचंलिका

इच्छामि भंते! परिणिव्वाण भत्ति काउस्सग्गो कओ तस्सलोचेउं इमम्मि चउत्थ समयस्स मज्झिम भाए सद लक्ख कोडी सहस्स कोडी वस्समुच्चा एगड्ढं पल्लूण तेत्तीसा तिहत्तरि णव सद सागरोवम वस्स हीणे वासचउक्कमि सेसकालम्मि सम्मेए पव्वए चैत किण्ह अमावस्साए पुव्वण्हे रेवती णक्खत्ते भयवदो अरह जिणो सिद्धिं गदो। तिसुवि लोएसु भवण वासिय वाणविंतर जोयसिय कप्पवासियत्ति चउव्विहादेवा सपरिवारा दिव्वेण ण्हाणेण, दिव्वेण, गंधेण, दिव्वेण अक्खेण, दिव्वेण पुप्फेण दिव्वेण चुण्णेण दिव्वेण दीवेण, दिव्वेण धूवेण, दिव्वेण वासेण णिच्चकालं अंच्चंति पूजंति, वंदंति, णमस्संति, परिणिव्वाण महाकल्लाण पुज्जं करंति। अहमवि इहसंतो तत्थ संताइयं णिच्चकालं अंचेमि, पुज्जेमि वंदामि णमस्सामि दुक्खक्खओ कम्मक्खओ बोहिलाहो सुगई गमणं समाहि मरणं जिण गुण संपत्ति होउ मज्झं।

श्री अरहनाथ पूजा–18

स्थापना (सखी छन्द)

जिनराज अरह कहलाए, जग को सन्मार्ग दिखाए।
आह्वानन् करते भाई, जो हैं शिव सौख्य प्रदायी॥

ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(स्रग्विणी छन्द)

नीर गंगा का निर्मल सुगन्धित लिया,
जिन प्रभू के चरण में समर्पित किया।
अरह जिनकी हमें प्राप्त होवे शरण,
पूजते भाव से हम श्री जिन चरण॥1॥

ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

चन्दनादिक से प्रभु के चरण चर्चते,
दाह हो नाश भव की प्रभू अर्चते।
अरह जिनकी हमें प्राप्त होवे शरण,
पूजते भाव से हम श्री जिन चरण॥2॥

ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय भवाताप विनाशनाय चंदनं निर्व. स्वाहा।

शालि के पुञ्ज से पूजते नाथ को,
सुपद अक्षय में हमको प्रभू साथ दो।
अरह जिनकी हमें प्राप्त होवे शरण,
पूजते भाव से हम श्री जिन चरण॥3॥

ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्व. स्वाहा।

खिले सुरभित सुमन आज आए लिए,
शील गुण के हृदय में जलें अब दिए।
अरह जिनकी हमें प्राप्त होवे शरण,
पूजते भाव से हम श्री जिन चरण॥4॥

ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

सद्य नैवेद्य लाए यहाँ थाल में,
पूजते आत्म तृप्ती हो तत्काल में।
अरह जिनकी हमें प्राप्त होवे शरण,
पूजते भाव से हम श्री जिन चरण।।5।।

ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

दीप की ज्योति फैला सुतम वारती,
आरती कर वरें ज्ञान की भारती।
अरह जिनकी हमें प्राप्त होवे शरण,
पूजते भाव से हम श्री जिन चरण।।6।।

ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।

धूप खेते सुगन्धी हो आकाश में,
कर्म के नाश करने की हम आस में।
अरह जिनकी हमें प्राप्त होवे शरण,
पूजते भाव से हम श्री जिन चरण।।7।।

ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल चढ़ाते चरण में ये ताजे प्रभो!
मोक्ष की आश पूरी हो मेरी विभो।
अरह जिनकी हमें प्राप्त होवे शरण,
पूजते भाव से हम श्री जिन चरण।।8।।

ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

आठ द्रव्यों का शुभ अर्घ्य हम यह किए,
प्राप्त शाश्वत सुपद हो हमारे लिए।
अरह जिनकी हमें प्राप्त होवे शरण,
पूजते भाव से हम श्री जिन चरण।।9।।

ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पञ्चकल्याणक के अर्घ्य

(मानव छन्द)

सुदी फागुन तृतिया शुभकार, गर्भ में आए अरह जिनेश।
दिव्य वर्षाए रत्न अपार, धरा पे आके इन्द्र विशेष।।1।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनशुक्ला तृतीयायां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अगहन सुदि चतुर्दशी भगवान, जन्म ले किए जगत कल्याण।
बजाए भाँति-भाँति के वाद्य, बधाई किए नगर में आन।।2।।

ॐ ह्रीं अगहनशुक्ला चतुर्दश्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जगा जिनके मन में वैराग, त्याग कर चले स्वजन परिवार।
रहा ना जिनके मन में राग, दशे सुदि मंगसिर तिथि शुभकार।।3।।

ॐ ह्रीं अगहनशुक्ला दशम्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुदी कार्तिक द्वादशी महान, प्रभु जी पाए केवल ज्ञान।
किए प्रभु जग में ज्ञान प्रकाश, बने तव भक्त चरण के दास।।4।।

ॐ ह्रीं कार्तिक शुक्लाद्वादश्यां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अमावस चैत कृष्ण की खास, किए प्रभु आठों कर्म विनाश।
किए शिवपुर को प्रभू प्रयाण, किया शिवपुर में प्रभु ने वास।।5।।

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णाऽमावस्यायां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री अरहनाथजी की टोंक (नाटक कूट)

श्री सम्मेद शिखर की जय हो, मुक्त हुए जिनवर की जय हो।
उस धरती अंबर की जय हो, दुखहारी गिरवर की जय हो।।

सोरठा– तीन पदों के साथ, मुक्त हुए संसार से।
चरण झुकाऊँ माथ, अरहनाथ भगवान को।।

नाटक कूट नाम है भाई, जहाँ से प्रभु ने मुक्ति पाई।
हम भी मुक्ति पाने आए, भक्ति भाव से शीश झुकाए।।
चरणों झुकाकर शीश हम, प्रभु कर रहे हैं अर्चना।
ले द्रव्य आठों थाल में शुभ, कर रहे हैं वंदना।।
हम शरण में आए प्रभु, यह वंदना स्वीकार हो।
है भावना अंतिम विशद मम्, आत्म का उद्धार हो।।
चलो-चलो रे-2 सभी नर नार, तीर्थ के दर्शन को।
कटते हैं कर्म अपार, चलो रे भाई वंदन को।।1।।

ॐ ह्रीं निर्वाणकल्याणकमण्डित श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

इस संसार सरोवर का कहीं, छोर नजर न आता है।
वियोग आपसे हे अर जिन! अब, और सहा न जाता है॥
चरण वन्दना करने हेतू, अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं।
अर्चा करने आज यहाँ पर, बहुत दूर से आए हैं॥2॥

दोहा– कर्मारिनाशे सभी, अरहनाथ भगवान।
त्रय पद के धारी हुए, शिवपुर किया प्रयाण॥

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित नाटक कूट से श्री अरहनाथ तीर्थंकरादि निन्यानवे करोड़ निन्याननवे लाख निन्यानवे हजार नौ सौ निन्यानवे मुनि मोक्ष पधारे तिनके चरणारविन्द में अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कोटि निन्यानवे लाख निन्यानवे और निन्यानवे सहस मुनीश।
नौ सौ अरु निन्यानवे मुनि पद, झुका रहे हम अपना शीश॥
नाटक कूट की किए वन्दना, लाख छयानवे का उपवास।
पाते हैं इस जग के प्राणी, पाएँ अन्त में मुक्ती वास॥3॥

ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेन्द्रादि नवनवतिकोडी नवनवति लक्ष नवनवति सहस्र नवनवतिशतक नवनवति मुनीश्वरेभ्यो नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा– आप हमारे देवता, आप हमारे नाथ।
गुणमाला गाते-चरण, झुका भाव से माथ॥

(पाईता छन्द)

प्रभु अरहनाथ कहलाए, जो स्वर्ग से चयकर आए।
पितु भूप सुदर्शन जानो, माता मित्रावति मानो॥1॥
है गजपुर नगरी प्यारी, इक्ष्वाकु कुल मनहारी।
स्वर्गो से सुर बालाएँ, जो गर्भ को शोध कराएँ॥2॥
जब गर्भ में प्रभु जी आए, इस जग में मंगल छाए।
जब जन्म प्रभु जी पाए, सुर जन्म कल्याण मनाए॥3॥
प्रभु राज्य सम्पदा पाए, त्रयपद के धारी गाए।
चक्री के भोग ना भाए, सब छोड़ के दीक्षा पाए॥4॥
आतम का ध्यान लगाए, तब घाती कर्म नशाए।

फिर केवल ज्ञान जगाए, दिव्य ध्वनि आप सुनाए॥5॥
जग को सन्मार्ग दिखाए, मुक्ति श्री जिनवर पाए।
जो रत्नत्रय शुभ पाते, वे मोक्ष महल को जाते॥6॥

दोहा– जिनवर हैं इस लोक में, शुद्ध बुद्ध अविरुद्ध।
पाए परमान्द जिन, निज आतम कर शुद्ध॥

ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– धन्य धन्य यह शुभ घड़ी, जिन पूजा की आज।
सुख सम्पति सौभाग्य हो, मिले मोक्ष साम्राज्य॥

॥इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्॥

श्री मल्लिनाथ निर्वाण भक्ति–19

विबुधपति-खगपति नरपति धनदोरग भूत यक्षपतिमहितम्।
अतुल सुख विमल निरूपम शिवमचलमनामयं हि संप्राप्तम्॥1॥
कल्याणैः संस्तोष्ये पंचभिरनघं त्रिलोक परम गुरूम्।
भव्यजनतृष्टि जननै र्दुरवापैः मल्लिजिनं भक्त्या॥2॥
चैत्र सित प्रतिपदायां अश्विनी भा मध्यमाश्रिते शशिनि।
आयातः स्वर्गसुखं भुक्त्वा अपराजिताधीशः॥3॥
कुम्भ श्री नृपति तनयो भारतवास्ये अंग मिथिलापुरे।
देव्यां श्री प्रभावत्यां सुस्वप्नान् संप्रदर्श्य विभुः॥4॥
मार्गशीर्ष अश्विन्यां शशांक योगे दिने एकादश्याम्।
जज्ञे स्वोच्चस्थेषु ग्रहेषु सौम्येषु शुभलग्ने॥5॥
अश्विन्यामाश्रिते शशांके मार्ग सित एकादशी दिवसे।
पूर्वाण्हे रत्नघटै र्विबुधेन्द्राश्चक्रुरभिषेकम्॥6॥
भुक्त्वा कुमार काले शतैक वर्षाण्यनंत गुणराशिः।
अमरोपनीत भोगान् विद्युत्पाता बोधितोत्वरितः॥7॥
नानाविधरूपचितां विचित्र कूटोच्छ्रितां मणि विभूषाम्।
जयंताख्यशिविकामारूह्य पुराद्विनिः क्रान्तः॥8॥
मार्गशिर एकादश्यां अश्विनी भा मध्यमाश्रिते सोमे।
षष्ठेन पूर्वाण्हे तु भक्तेन जिनः प्रवव्राज॥9॥
ग्रामपुर खेटकर्वटमटंब घोषाकरान्प्रविजहार।

उग्रैस्तपोविधानैः, षट् दिनान्यामरैः पूज्यः॥10॥
श्वेतवनस्यमध्ये तु अशोकद्रुम संश्रिते शिलापट्टे।
पूर्वाण्हे षष्ठेन स्थितस्य खलु मिथिलानिकट ग्रामे॥11॥
पौष वदि द्वितियायी अश्विनी भा मध्यमाश्रिते चंद्रे।
क्षपक श्रेण्यारूढस्योत्पन्नं केवलज्ञानम्॥12॥
छत्राशोकौ घोषं सिंहासन दुंदुभिः कुसुमवृष्टिम्।
वरचामर भामण्डल दिव्यान्यन्यानि चावापत्॥13॥
दस विधमनगाराणामेकादशधोत्तरं तथा धर्मम्।
देशयमानो व्यवहरं अनेकवर्षाणि खलु जिनेन्द्रः॥14॥
अथ भगवान संप्रापद् दिव्यं सम्मेद पर्वतं रम्यम्।
चातुर्वण्यं सुसंघस्तत्राभूद् विशाखा प्रभृति॥15॥
पद्मवनदीर्घिका कुल विविध द्रुमखण्ड मंडितेरम्ये।
सम्बल कूटोद्याने व्युत्सर्गेण स्थितः स मुनिः॥16॥
फाल्गुन शुक्ल पंचम्यां भरणीनामृक्षे निहत्यकर्मरजः।
अवशेषं संप्रापद्व्यजजरामर मक्षयं सौख्यम्॥17॥
परिनिर्वृत्तं जिनेन्द्रं ज्ञात्वा विबुधह्यथाशु चागम्य।
देवतरू रक्त चंदन कालागरू सुरभिगोशीर्षैः॥18॥
अग्नीन्द्राज्जिन देहं मुकुटानल सुरभि धूपवरमाल्यैः।
अभ्यर्च्य गणधरानपि गतादिवं खं च वनभवने॥19॥
इत्येवं भगवति मल्लिजिनेश चंद्रे यः स्तोत्रं पठति सुसंध्ययो र्द्वयोर्हि।
सोऽनंतं परम सुखं नृ देव लोके, भुक्त्वान्ते शिवपदमक्षयं प्रयाति॥20॥
यत्रार्हतां गणभृतां श्रुतपारगाणां, निर्वाण भूमिरिह भारत वर्ष जानाम्।
तामद्य शुद्धमनसा क्रिययावचोभिः, संस्तोतुमुद्यतमतिः परिणौमिभक्त्या॥21॥
माल्यानि वाक्स्तुतिमयैः, कुसुमैः सुदृब्धा, न्यादाय मानसकरैरभितः, किरन्तः।
पर्येम आदृतियुता भगवन्निषद्याः, संप्रार्थिता वयमिमे परमांगतिं ताः॥22॥
शत्रुञ्जये नगवरे दमितारिपक्षाः पण्डोः सुताः परमनिर्वृत्तिमभ्युपेताः।
तुंग्यां तु संगरहितो बलभ्रदनामा, नद्यास्तटे जितरिपुश्च सुवर्णभद्रः॥23॥
द्रोणीमति प्रबल कुण्डल मेढ्रके च, वैभार पर्वत तले वर सिद्ध कूटे।
ऋष्याद्रिके च विपुलाद्रिबलाहके च विन्ध्ये च पोदन पुरे वृषदीपके च॥24॥
सह्याचले च हिमवतयपि सुप्रतिष्ठे, दण्डात्मके गजपथे पृथुसार यष्टौ।
ये साधवोहतमलाः सुगतिं प्रयाताः, स्थानानि तानि जगति प्रथितान्य भूवन्॥25॥
इक्षोर्विकार रसपृक्त गुणेन लोके पिष्टोऽधिकं मधुरतामुपयाति यद्वत्।

तद्वच्च पुण्य पुरुषै रूषितानि नित्यं, स्थानानि तानि जगतामिह पावनानि॥26॥
इत्यर्हतां शमवतां च महामुनीनां, प्रोक्तामयात्र परिनिर्वृति भूमि देशाः।
ते मे जिना जितमया मुनयश्च शांताः दिश्यासुराशु सुगतिं निरवद्य सौख्याम्॥27॥

क्षेपक श्लोक

शांति कुन्थ्वर कौरव्या यादवौ नेमिसुव्रतौ।
उग्रनाथौ पार्श्ववीरौ शेषा इक्ष्वाकुवंशजाः॥

अंचलिका

इच्छामि भंते। परिणिव्वाण भत्ति काउस्सग्गो कओ तस्सालोचेउं इमम्मि चउत्थ समयस्स मज्झिमे भाए सद लक्ख कोडी एग सड्ढं पल्लूण तेत्तीसा तिहत्तरि णवसद सागरोवम वस्स हीणे वासचउक्कम्मि सेसकालम्मि सम्मेए पव्वए फागुण सुक्क पक्ख पंचमी अपराण्हे भरणीए णक्खत्ते भयवदो मल्लिजिणो सिद्धिं गदो। तिसुवि लोएसु भवण वासिय वाणविंतर जोयसिय कप्पवासियत्ति चउव्विहादेवा सपरिवारा दिव्वेण ण्हाणेण, दिव्वेण गंधेण दिव्वेण, धूवेण, दिव्वेण वासेण णिच्चकालं अंच्चंति पूजंति, वंदंति, णमंस्संति, परिणिव्वाण महाकल्लाण पुज्जं करंति। अहमवि इहसंतो तत्थ संताइयं णिच्चकालं अंचेमि, पुज्जेमि वंदामि णमस्सामि दुक्खक्खओ कम्मक्खओ बोहिलाहो सुगई गमणं समाहि मरणं जिन गुण संपत्ति होउ मज्झं।

श्री मल्लिनाथ पूजा–19

स्थापना (चाल छन्द)

जो मल्लिनाथ को ध्याते, वे विजय मोह पर पाते।
आह्वानन करने वाले, होते है जीव निराले॥

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(अर्ध शम्भू छंद)

निज अनुभव अमृत जल पीकर, त्रिविध ताप का शमन करें।
मल्लिनाथ की पूजा करके, मोक्ष मार्ग पर गमन करें॥1॥

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

निज गुण का शीतल चंदन पा, भवाताप का हरण करें।
मल्लिनाथ की पूजा करके, मोक्ष मार्ग पर गमन करें।।2।।
ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय भवाताप विनाशनाय चंदनं निर्व. स्वाहा।

मोती सम अक्षय अक्षत यह, श्री जिनेन्द्र के चरण धरें।
मल्लिनाथ की पूजा करके, मोक्ष मार्ग पर गमन करें।।3।।
ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्व. स्वाहा।

जिसके कारण जग में भटके, काम रोग का शमन करें।
मल्लिनाथ की पूजा करके, मोक्ष मार्ग पर गमन करें।।4।।
ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

तन का पोषक क्षुधा रोग है, उसका अब अपहरण करें।
मल्लिनाथ की पूजा करके, मोक्ष मार्ग पर गमन करें।।5।।
ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

विशद ज्ञान का दीप जलाकर, जीवन अपना चमन करें।
मल्लिनाथ की पूजा करके, मोक्ष मार्ग पर गमन करें।।6।।
ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।

भ्रमण कराया है कर्मों ने, उनका अब हम हनन करें।
मल्लिनाथ की पूजा करके, मोक्ष मार्ग पर गमन करें।।7।।
ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

महा मोक्ष फल पाकर के हम, शिव नगरी को गमन करें।
मल्लिनाथ की पूजा करके, मोक्ष मार्ग पर गमन करें।।8।।
ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्व. स्वाहा।

पद अनर्घ पाकर के हम भी, निज चेतन को चमन करें।।
मल्लिनाथ की पूजा करके, मोक्ष मार्ग पर गमन करें।।9।।
ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पञ्चकल्याणक के अर्घ्य

(मानव छन्द)

चैत सुदि एकम को जिनराज, गर्भ में आए जग के ईश।
धरा पर छाया मंगल कार, देव नर चरण झुकाए शीश।।1।।
ॐ ह्रीं चैत्रशुक्ला प्रतिपदायां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अगहन सुदि एकादशि शुभकार, जन्म ले आये मल्लि कुमार।
प्राप्त कीन्हे अतिशय दश आप, हुआ धरती पर हर्ष अपार।।2।।
ॐ ह्रीं अगहनशुक्ला एकादश्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुदी एकादशि मगसिर माह, जगा प्रभु के मन में वैराग्य।
महाव्रत लिए आपने धार, बुझाए प्रभू राग की आग।।3।।
ॐ ह्रीं मार्गशीर्षशुक्ला एकादश्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पौष वदि द्वितिया को भगवान, जगाए अनुपम केवल ज्ञान।
ध्यानकर घाती कर्म विनाश, देशना दे कीन्हे कल्याण।।4।।
ॐ ह्रीं पौषकृष्णा द्वितीयायां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पञ्चमी फाल्गुन सुदी महान, किए प्रभु आठों कर्म विनाश।
चले अष्टम भू पे जिनराज, किए प्रभु सिद्ध शिला पे वास।।5।।
ॐ ह्रीं फाल्गुनशुक्ला पंचम्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री मल्लिनाथजी की टोंक (संबल कूट)

श्री सम्मेद शिखर की जय हो, मुक्त हुए जिनवर की जय हो।
उस धरती अंबर की जय हो, दुखहारी गिरवर की जय हो।।

सोरठा– मल्लिनाथ भगवान, अष्ट कर्म को जीतकर।
पाया पद निर्वाण, शिव नगरी में जा बसे।।

संवलकूट श्रेष्ठ मन भाया, मल्लिनाथ ने ध्यान लगाया।
आठों कर्म नाशकर भाई, अष्ट गुणों की सिद्धि पाई।।
सिद्धि प्रभु ने प्राप्त करके, सिद्ध जिन को भी अहा।
अर्हन्त पद के साथ में अब, सिद्ध जिन को भी कहा।।
हम शरण में आए प्रभु, यह वंदना स्वीकार हो।
है भावना अंतिम विशद मम्, आत्म का उद्धार हो।।
चलो-चलो रे-2 सभी नर नार, तीर्थ के दर्शन को।

कटते हैं कर्म अपार, चलो रे भाई वंदन को।।1।।

ॐ ह्रीं निर्वाणकल्याणकमण्डित श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री मल्लिनाथ की महिमा का, कोई भी पार नहीं पाए।
गुण गाथा कौन कहे स्वामी, कहने वाला भी थक जाए।।
चरण वन्दना करने हेतू, अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं।
अर्चा करने आज यहाँ, पर बहुत दूर से आए हैं।।2।।

दोहा– जीते काम कषाय को, बने श्री के नाथ।
शिवपुर के राही बने, जग में मल्लिनाथ।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशखिर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित संबल कूट से श्री मल्लिनाथ तीर्थंकरादि छियानवे करोड़ मुनि मोक्ष पधारे तिनके चरणारविन्द में अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कोटि छियानवे मुनी ध्यान कर, किए पूर्णतः कर्म विनाश।
अनन्त चतुष्टय पाने वाले, पाए केवल ज्ञान प्रकाश।।
संबल कूट की किए वन्दना, लाख छियानवे का उपवास।
पाते हैं इस जग के प्राणी, पाएँ अन्त में मुक्ती वास।।3।।

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्रादि षण्णवति कोटि मुनीश्वरेभ्यो नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा– तीन लोक के नाथ जिन, जगती पति जगदीश।
गुणगावें सब भाव से, सुर नर पशु के ईश।।

(अवतार छन्द)

श्री मल्लिनाथ जिनराज, शिव पदवी पाए।
अपराजित से जिनराज, चयकर के आए।।1।।
मिथला नगरी के भूप, कुम्भ कहलाए हैं।
माँ प्रजावती के गर्भ, में प्रभु आए है।।2।।
इक्ष्वाकू नन्दन आप, चिन्ह कलश धारी।
है स्वर्ण समान सुदेह, जिनकी मनहारी।।3।।
है पच्चिस धनुष महान, तन की ऊँचाई।
आयू पचपन हज्जार, वर्ष की शुभगाई।।4।।
प्रभु तडित चमकता देख, दीक्षा को धारे।

फिर किए आत्म का ध्यान, किए सुर जयकारे।।5।।
प्रभु पाए केवल ज्ञान, आतम ध्यान किए।
भवि जीवों के हित हेत, देशना आप दिए।।6।।

दोहा– कर्म नशाए आपने, भव से पाया पार।
भव्य जीव चरणों 'विशद', नमन करें शतवार।।

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– भाते हैं हम भावना, पद में बारम्बार।
भक्त बने हम आपके, पाने भव से पार।।

।।इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

श्री मुनिसुव्रत निर्वाण भक्ति–20

विबुधपति-खगपति नरपति धनदोरग भूत यक्षपति महितम्।
अतुल सुख विमल निरूपम शिवमचल मनामयं हि संप्राप्तम्।।1।।
कल्याणैः संस्तोष्ये पंचभिरनघं त्रिलोक परम गुरुम्।
भव्यजनतुष्टि जननै दुर्रवापैः मुनिसुव्रतं भक्त्या।।2।।
श्रावण कृष्ण द्वितीयायां श्रवणनक्षत्रेमध्यमाश्रिते सोमे।
आयातः स्वर्गसुखं भुक्त्वा प्राणताधीशः।।3।।
सुमित्र नृपति तनयो भारतवास्ये अंग कुशाग्रपुरे।
देव्यां श्री सोमायां सुस्वप्नान् संप्रदर्श्य विभुः।।4।।
वैसाखकृष्णऋक्षे शशांकयोगे शुभ दिने दशम्याम्।
जज्ञे स्वोच्चस्थेषु ग्रहेषु सौम्येषु शुभलग्ने।।5।।
श्रवणाश्रिते शशांके चैत्र कृष्ण शुभ दशम्यां दिवसे।
पूर्वाण्हे रत्नघटै र्विबुधेन्द्राश्चक्रुरभिषेकम्।।6।।
भुक्त्वा कुमार काले सहस्र वर्षाण्यनंत गुणराशिः।
अमरोपनीत भोगान् जातिस्मरण बोधितो त्वरितः।।7।।
नानाविधरूपचितां विचित्र कूटोच्छ्रितां मणि विभूषाम्।
अपराजिताख्य शिविकामारूह्य पुराद्विनिः क्रान्तः।।8।।
वैशाख कृष्ण दशम्यां श्रवण भामध्यमाश्रिते सोमे।
अष्टेन त्वपराण्हे भक्तेन जिनः प्रवव्राज।।9।।
ग्रामपुर खेटकर्वटमटंब घोषाकरान्प्रविजहार।
उग्रैस्तपोविधानैः अनेकमासान्यमरैः पूज्यः।।10।।

नील वनस्य मध्ये चम्पकद्रुम संश्रिते शिलापट्टे।
पूर्वाण्हे अष्टेन स्थितस्य खलु कुशाग्र ग्रामे॥11॥
वैशाख कृष्ण नवम्यां श्रवणभा मध्यमाश्रिते चन्द्रे।
क्षापक श्रेण्यारूढस्योत्पन्नं केवलज्ञानम्॥12॥
छत्राशोकौ घोषं सिंहासन दुंदुभिः कुसुमवृष्टिम्।
वरचामर भामण्डल दिव्यान्यन्यानि चावापत्॥13॥
दशविधमनगाराणमेकादशधोत्तर तथा धर्मम्।
देशयमानो व्यवहरं सहस्रवर्षाण्यथ जिनेन्द्रः॥14॥
अथ भगवान सम्प्रापद् दिव्यं सम्मेद पर्वतं रम्यम्।
चातुर्वर्ण्य सुसंधस्तत्राभूद् मल्लिजिनप्रभृति॥15॥
पद्मवनदीर्घिका कुल विविध द्रुमखण्ड मंडिते रम्ये।
निर्जर कूटोद्याने व्युत्सर्गेण स्थितः स मुनिः॥16॥
फाल्गुन वदि द्वादश्यां श्रवण ऋक्षे निहत्यकर्मरजः।
अवशेषं संप्रापत्व्यजरामरमक्षयं सौख्यम्॥17॥
परिनिर्वृत्तं जिनेन्द्र ज्ञात्वा विबुधहृयथाशु चागम्य।
देवतरू रक्त चंदन कालागरू सुरभिगोशीर्षैः॥18॥
अग्नीन्द्राज्जिन देहं मुकुटानल सुरभि धूपवरमाल्यैः।
अभ्यर्च्य गणधरानपि गतादिवं खं च वनभवने॥19॥

इत्येवं भगवति मुनिसुव्रत जिन चंद्रे यः स्तोत्रं पठति सुसंध्ययो र्द्वयोर्हि।
सोऽनंतं परम सुखं नृ देव लोके, भुक्त्वान्ते शिवपदमक्षयं प्रयाति॥20॥
यत्रार्हतां गणभृतां श्रुतपारगाणां, निर्वाण भूमिरिह भारत वर्ष जानाम्।
तामद्य शुद्धमनसा क्रिययावचोभिः, संस्तोतुमुद्यतमतिः परिणौमिभक्त्या॥21॥
माल्यानि वाक्स्तुतिमयैः कुसुमैः सुदृब्धा, न्यादाय मानसकरैरभितः किरन्तः।
पर्येम आदृतियुता भगनन्निषद्याः, संप्रार्थिता वयमिमे परमांगतिंताः॥22॥
शत्रुञ्जये नगवरे दमितारिपक्षाः पण्डोः सुताः परमनिर्वृत्तिमभ्युपेताः।
तुंग्यां तु संगरहितो बलभद्रनामा, नद्यास्तटे जितरिपुश्च सुवर्णभद्रः॥23॥
द्रोणीमति प्रबल कुण्डल मेढ्रके च, वैभार पर्वत तले विपुलाद्रिबलाहके च।
ऋष्याद्रिके च विपुलाद्रिबलाहके च विन्ध्ये च पोदनपुरे वृषदीपके च॥24॥
सह्याचले च हिमवत्यपि सुप्रतिष्ठे, दण्डात्मके गजपथे पृथुसार यष्टौ।
ये साधवोहतमलाः सुगंति प्रयाताः, स्थानानि तानि जगति प्रथितान्य भूवन्॥25॥
इक्षोर्विकार रसपृक्त गुणेन लोके पिष्टोऽधिकं मधुरतामुपयाति यद्वत्।
तद्वच्च पुण्य पुरुषै रुषितानि नित्यं, स्थानानि तानि जगतामिह पावनानि॥26॥

इत्यर्हतां शमवतां च महामुनीनां, प्रोक्तामयात्र परिनिर्वृति भूमि देशाः।
ते मे जिना जितमया मुनयश्च शांताः दिश्यासुराशु सुगतिं निरवद्य सौख्याम्॥27॥

क्षेपक श्लोक

शांति कुन्थ्वर कौरव्या यादवौ नेमिसुव्रतौ।
उग्रनाथौ पार्श्ववीरौ शेषा इक्ष्वाकुवंशजाः॥

अंचलिका

इच्छामि भंते! परिणिव्वाण भत्ति काउस्सग्गो कओ तस्सलोचेउं इमम्मि चउत्थ समयस्स मज्झिमे भाए सद लक्ख कोडी एग सड्ढं पल्लूण तेत्तीसा तिहत्तरि णवसद सागरोवम चउवण्णं लक्ख वस्स हीणे वास चउक्कम्मि सेसकालिम्म सम्मेए पव्वए फागुण किण्ह द्वादशी अपराण्हे सवण णक्खत्ते भयवदो मुणिसुव्वए जिणो सिद्धिं गदो। तिसुवि लोएसु, भवणवासिय वाणविंतर, जोयसिय, कप्पवासियत्ति चउव्विहादेवा सपरिवारा दिव्वेण ण्हाणेण, दिव्वेण गंधेण, दिव्वेण अक्खेण, दिव्वेण पुप्फेण, दिव्वेण चुण्णेण, दिव्वेण, दिव्वेण धूवेण, दिव्वेण वासेण णिच्चकालं अंच्चंति पूजंति, वंदंति, णमंस्संति, परिणिव्वाण महाकल्लाण पुज्जं करंति। अहमवि इहसंतो तत्थ संताइयं णिच्चकालं अंचेमि, पुज्जेमि वंदामि णमस्सामि दुक्खक्खओ कम्मक्खओ बोहिलाहो सुगई गमणं समाहि मरणं जिन गुण संपत्ति होउ मज्झं।

श्री मुनिसुव्रतनाथ पूजा–20

स्थापना (सखी छन्द)

हैं मुनीव्रतों के धारी, श्री मुनिसुव्रत अविकारी।
हम निज उर में तिष्ठाते, पद सादर शीश झुकाते॥

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(सग्विणी छन्द)

शुद्ध यमुना के जल से ये झारी भरें,
नाथ के पाद में तीन धारा करें।
मुनिसुव्रत के चरण पूजते भाव से,
स्वात्म पीयूष पाएँ बड़े चाव से॥1॥

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

श्रेष्ठ चन्दन घिसाके कटोरी भरें,
नाथ पदाब्ज में चर्च के दुख हरें।
मुनिसुव्रत के चरण पूजते भाव से,
स्वात्म पीयूष पाएँ बड़े चाव से॥2॥

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय भवाताप विनाशनाय चंदनं निर्व. स्वाहा।

श्वेत तन्दुल शशी रश्मि सम लाए हैं,
नाथ चरणों चढ़ा हम सुख पाए हैं।
मुनिसुव्रत के चरण पूजते भाव से,
स्वात्म पीयूष पाएँ बड़े चाव से॥3॥

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्व. स्वाहा।

श्रेष्ठ सुरभित सुगन्धित कुसुम ले लिए,
जिन प्रभू के चरण आज अर्पण किए।
मुनिसुव्रत के चरण पूजते भाव से,
स्वात्म पीयूष पाएँ बड़े चाव से॥4॥

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

सरस ताजे चरू यह बना लाए हैं,
क्षुधा व्याधी नशाने को हम आाए है।
मुनिसुव्रत के चरण पूजते भाव से,
स्वात्म पीयूष पाएँ बड़े चाव से॥5॥

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

दीप ज्योती जलाई ये हमने अहा,
मोह हरना मेरा लक्ष्य अन्तिम रहा।

मुनिसुव्रत के चरण पूजते भाव से,
स्वात्म पीयूष पाएँ बड़े चाव से॥6॥

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।

धूप घट में सुरभि धूप की यह जले,
कर्म निर्मूल हों देह कांति मिले।
मुनिसुव्रत के चरण पूजते भाव से,
स्वात्म पीयूष पाएँ बड़े चाव से॥7॥

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्व. स्वाहा।

फल ये ताजे चढ़ाते सरस फल भले,
मोक्ष की आश मेरी प्रभु अब फले
मुनिसुव्रत के चरण पूजते भाव से,
स्वात्म पीयूष पाएँ बड़े चाव से॥8॥

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्व. स्वाहा।

आठ द्रव्यों का यह अर्घ्य लाए सही,
प्राप्त हो नाथ हमको अब अष्टम मही।
मुनिसुव्रत के चरण पूजते भाव से,
स्वात्म पीयूष पाएँ बड़े चाव से॥9॥

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पञ्चकल्याणक के अर्घ्य

(चौपाई)

सावन वदि द्वितीया शुभकारी, मुनिसुव्रत जिन मंगलकारी।
माँ के गर्भ में चयकर आए, रत्नवृष्टि कर सुर हर्षाए॥1॥

ॐ ह्रीं श्रावण कृष्णा द्वितीयायां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दशें कृष्ण वैशाख बखानी, जन्म लिए मुनिसुव्रत स्वामी।
इन्द्र देव सेना ले आए, जन्मोत्सव पर हर्ष मनाए॥2॥

ॐ ह्रीं वैशाख कृष्णा दशम्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अस्थिर भोग जगत के गाए, जान प्रभु जी दीक्षा पाए।
घोर सुतप कर कर्म नशाए, दशें कृष्ण वैशाख सुहाए।।3।।

ॐ ह्रीं वैशाख कृष्णा दशम्यां तपकल्याणक प्राप्त श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नमी कृष्ण वैशाख सुहानी, हुए प्रभू जी केवल ज्ञानी।
जगमग-जगमग दीप जलाए, सुरनर दीपावली मनाए।।4।।

ॐ ह्रीं वैशाख कृष्णा नवम्यां ज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

फागुन वदि बारस शुभकारी, मुक्ती पाए जिन त्रिपुरारी।
कूट निर्जरा से शिव पद पाए, शिवपुर अपना धाम बनाए।।5।।

ॐ ह्रीं फाल्गुन कृष्ण द्वादश्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री मुनिसुव्रतनाथजी की टोंक (निर्जर कूट)

श्री सम्मेद शिखर की जय हो, मुक्त हुए जिनवर की जय हो।
उस धरती अंबर की जय हो, दुखहारी गिरवर की जय हो।।

सोरठा– मुनिसुव्रत भगवान, मुक्त हुए हैं कर्म से।
निर्जर कूट महान्, भक्ति करते भाव से।।

तीर्थंकर श्री मुनिसुव्रत प्रभु, के चरणों में करूँ नमन्।
नृप सुमित्र के राजदुलारे, पद्मावती मां के नंदन।।
मुनिव्रतधारी हे भवतारी! योगीश्वर! जिनवर वंदन।
हम शनि अरिष्ट ग्रह शांति हेतु, करते हैं प्रभु का अर्चन।
हे जिनेन्द्र! मम् हृदय कमल पर, आना तुम स्वीकार करो।
अब चरण शरण का भक्त बनालो, इतना सा उपकार करो।।
चलो-चलो रे-2 सभी नर नार, तीर्थ के दर्शन को।
कटते हैं कर्म अपार, चलो रे भाई वंदन को।।1।।

ॐ ह्रीं निर्वाणकल्याणकमण्डित श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनिसुव्रत मुनिव्रत के धारी, हुए लोक में सर्व महान्।
कर्मदहन कर किया आपने, 'विशद' आत्मा का उत्थान।।

चरण वन्दना करने हेतू, अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं।
अर्चा करने आज यहाँ पर, बहुत दूर से आए हैं।।2।।

दोहा– शिवपुर जाके आपने, कीन्हा है विश्राम।
मुनिसुव्रत के पद युगल, करते चरण प्रणाम।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित निर्जर नामक कूट से श्री मुनिसुव्रतनाथ तीर्थंकरादि निन्यानवे कोड़ा-कोड़ी नौ करोड़ निन्यानवे लाख नौ सौ निन्यानवे मुनि मोक्ष पधारे तिनके चरणारविन्द में अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निन्यानवे कोटा-कोटी मुनिवर, कोटि निन्यानवे करके ध्यान।
लाख निन्यानवे नौ सौ निन्यानवे, कर्म नाश पाए निर्वाण।।
एक कोटि उपवासों का फल, किए वन्दना होवे प्राप्त।
आत्म ध्यान कर जग के प्राणी, स्वयं शीघ्र बन जाते आप्त।।3।।

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्रादि नवनवति कोडाकोडी नवनवति कोडी नवनवति लक्ष नवशतक नवनवति मुनीश्वरेभ्यो नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा– मुनिसुव्रत भगवान की, रही निराली चाल।
भव सुख पाते जीव जो, गाते हैं जयमाल।।

(नरेन्द्र छन्द)

प्राणत स्वर्ग से मुनिसुव्रत जिन, चयकर के जब आये।
राजगृही में खुशियाँ छाईं, जग जन सब हर्षाए।।1।।
नृप सुमित्र के राज दुलारे, जय श्यामा माँ गाई।।
गर्भ समय पर रत्न इन्द्र कई, वर्षाये थे भाई।।2।।
तीन लोक में खुशियाँ छाईं, घड़ी जन्म की आई।
सहस्त्राष्ट लक्षण के धारी, बीस धनुष ऊँचाई।।3।।
न्हवन कराया देवेन्द्रों ने, कछुआ चिन्ह बताया।
बीस हजार वर्ष की आयू, श्याम रंग शुभ गाया।।4।।
उल्का पात देखकर स्वामी, शुभ वैराग्य जगाए।
पञ्च मुष्ठि से केश लुंचकर, मुनिवर दीक्षा पाए।।5।।
आत्म ध्यान कर कर्म घातिया, नाश किए जिन स्वामी।
केवल ज्ञान जगाया प्रभु ने, हुए मोक्ष पथगामी।।6।।

दोहा– अष्टादश गणधर रहे, सुप्रभ प्रथम गणेश।
कूट निर्जरा से प्रभू, नाशे कर्म अशेष॥

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– मुनिसुव्रत भगवान का, जपे निरन्तर नाम।
इस भव के सुख प्राप्त कर, पावे वह शिव धाम॥

॥इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्॥

श्री नमिनाथ निर्वाण भक्ति–21

विबुधपति-खगपति नरपति धनदोरग भूत यक्षपति महितम्।
अतुल सुख विमल निरूपम शिवमचल मनामयं हि संप्राप्तम्॥1॥
कल्याणैः संस्तोष्ये पंचभिरनघं त्रिलोक परम गुरूम्।
भव्यजनतुष्टि जननै दुर्रवापैः नमिजिनं भक्त्या॥2॥
अश्विनद्वितीयासिते अश्विन्यापि मध्यमाश्रिते शशिनि।
आयातः स्वर्गसुखं भुक्त्वा अपराजिताधीशः॥3॥
विजय महाराज तनयो भारतवास्ये अंग मिथिलापुरे।
देव्यां श्री प्रियवप्रायां सुस्वप्नान् संप्रदर्श्य विभुः॥4॥
आषाढ कृष्ण स्वाती शशांक योगे शुभ दिने दशम्याम्।
जज्ञे स्वोच्चस्थेषु ग्रहेषु सौम्येषु शुभलग्ने॥5॥
स्वात्याश्रिते शशांके आषाढ कृष्णे दशम्याम् दिवसे।
पूर्वाण्हे रत्नघटै र्विबुधेन्द्राश्चक्रुरभिषेकम्॥6॥
भुक्त्वा कुमार काले पंचविंशतिशत वर्षाण्यनंत गुणराशिः।
अमरोपनीत भोगान् जातिस्मरण बोधितो त्वरितः॥7॥
नानाविधरूपचितां विचित्र कूटोच्छ्रितां मणि विभूषाम्।
उत्तरकुरू शिविकामारूह्य पुराद्विनिः क्रान्तः॥8॥
आषाढ कृष्ण दशम्यां अश्विनी च मध्यमाश्रिते सोमे।
षष्ठेन त्वराण्हे भक्तेन जिनः प्रववाज॥9॥
ग्रामपुर खेटकर्वटमटंब घोषाकरान्प्रविजहार।
उग्रैस्तपोविधानैः नववर्षाण्यमरैः पूज्यः॥10॥
सहस्राम्रवनस्यमध्ये बकुलद्रुम संश्रिते शिलापट्टे।
अपराण्हे षष्ठेन स्थितः मिथिलापुरी ग्रामे॥11॥
मार्गशीर्षैकादश्यां अश्विनी मध्यमाश्रिते चन्द्रे।

क्षपक श्रेण्यारूढस्योत्पन्नं केवलज्ञानम्॥12॥
छत्राशोकौ घोषं सिंहासन दुंदुभिः कुसुमवृष्टिम्।
वरचामर भामण्डल दिव्यान्यन्यानि चावापत्॥13॥
दशविधमनगाराणामेकादशधोत्तर तथा धर्मम्।
देशयमानो व्यवहरं अनेक वर्षाणि जिनेन्द्रः॥14॥
अथ भगवान सम्प्रापद् दिव्यं सम्मेद पर्वतं रम्यम्।
चातुर्वर्ण्य ससंधस्तत्राभूद् सुप्रभप्रभृति॥15॥
पद्मवनदीर्घिका कुल विविध द्रुमखण्ड मंडिते रम्ये।
मित्रधर कूटोद्याने व्युत्सर्गेण स्थितः स मुनिः॥16॥
वैशाख वदि चतुर्दशी अश्विन्यामृक्षे निहत्यकर्मरजः।
अवशेषं संप्रापत्व्यजरामरमक्षयं सौख्यम्॥17॥
परिनिर्वृत्तं जिनेन्द्रं ज्ञात्वा विबुधहृयथाशु चागम्य।
देवतरू रक्त चंदन कालागरू सुरभिगोशीर्षैः॥18॥
अग्नीन्द्राज्जिन देहं मुकुटानल सुरभि धूपवरमाल्यैः।
अभ्यर्च्य गणधरानपि गतादिवं खं च वनभवने॥19॥

इत्येवं भगवति नमिजिनेश चंद्रे यः स्तोत्रं पठति सुसंध्ययो र्द्वयोर्हि।
सोऽनंतं परम सुखं नृ देव लोके, भुक्त्वान्ते शिवपदमक्षयं प्रयाति॥20॥
यत्रार्हतां गणभृतां श्रुतपारगाणां, निर्वाण भूमिरिह भारत वर्ष जानाम्।
तामद्य शुद्धमनसाा क्रिययावचोभिः, संस्तोतुमुद्यतमतिः परिणौमिभक्त्या॥21॥
माल्यानि वाक्स्तुतिमयैः कुसुमैः सुदृब्धा, न्यादाय मानसकरैरभितः किरन्तः।
पर्येम आदृतियुता भगनन्निषद्याः, संप्रार्थिता वयमिमे परमांगतिंताः॥22॥
शत्रुञ्जये नगवरे दमितारिपक्षाः पण्डोः सुताः परमनिर्वृत्तिमभ्युपेताः।
तुंग्यां तु संगरहितो बलभद्रनामा, नद्यास्तटे जितरिपुश्च सुवर्णभद्रः॥23॥
द्रोणीमति प्रबल कुण्डल मेढ्रके च, वैभार पर्वत तले वर सिद्ध कूटे।
ऋष्याद्रिके च विपुलाद्रिबलाहके च विन्ध्ये च पोदनपुरे वृषदीपके च॥24॥
सह्याचले च हिमवत्यपि सुप्रतिष्ठे, दण्डात्मके गजपथे पृथुसार यष्टौ।
ये साधवोहतमलाः सुगतिं प्रयाताः, स्थानानि तानि जगति प्रथितान्य भूवन्॥25॥
इक्षोर्विकार रसपृक्त गुणेन लोके पिष्टोऽधिकं मधुरतामुपयाति यद्वत्।
तद्वच्च पुण्य पुरुषै रुषितानि नित्यं, स्थानानि तानि जगतामिह पावनानि॥26॥
इत्यर्हतां शमवतां च महामुनीनां, प्रोक्तामयात्र परिनिर्वृत्ति भूमि देशाः।
ते मे जिना जितभया मुनयश्च शांताः दिश्यासुराशु सुगतिं निरवद्य सौख्याम्॥27॥

क्षेपक श्लोक

शांति कुन्थ्वर कौरव्या यादवौ नेमिसुव्रतौ।
उग्रनाथौ पार्श्ववीरौ शेषा इक्ष्वाकुवंशजाः॥

अंचलिका

इच्छामि भंते! परिणिव्वाण भत्ति काउस्सग्गो कओ तस्सालोचेउं इमम्मि चउत्थ समयस्स मज्झिमे भाए सद लक्ख कोडी एकसड्ढं पल्लूण तेत्तीसा तिहत्तरि णवसद सागरोवम अस्सी लक्ख वस्स हीणे वास चउक्कम्मि सेसकालम्मि सम्मेए पव्वए वैसाख मासस्स किण्ह चउद्दसीए पुव्वण्हे अस्सिनी णक्खत्ते भयवदो णमि जिणो सिद्धिं गदो। तिसुवि लोएसु, भवणसायि वाणविंतर, जोयसिय, कप्पवासियत्ति चउव्विहादेवा सपरिवारा दिव्वेण, ण्हाणेण, दिव्वेण गंधेण, दिव्वेण अक्खेण, दिव्वेण पुप्फेण, दिव्वेण चुण्णेण, दिव्वेण दीवेण, दिव्वेण धूवेण, दिव्वेण वासेण णिच्चकालं अंच्चंति पूजंति, वंदंति,णमंस्संति, परिणिव्वाण महाकल्लाण पुज्जं करंति। अहमवि इहसंतो तत्थ संताइयं णिच्चकालं अंचेमि, पुज्जेमि वंदामि णमस्सामि दुक्खक्खओ कम्मक्खओ बोहिलाओ सुगई गमणं समाहि मरणं जिण गुण संपत्ति होउ मज्झं।

श्री नमिनाथ जिन पूजा–21

स्थापना (सखी छन्द)

जो जिनवर नमि को ध्याते, अपने उर में तिष्ठाते।
वे होते मुक्ती गामी, बनते हैं श्री के स्वामी॥

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(नरेन्द्र छन्द)

साम्य सुधारस पाने जल यह, निर्मल चरण चढ़ाते।
बनें आपके पथगामी हम, यही भावना भाते॥1॥

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

भव संताप निवारण हेतू, चरणों गंध चढ़ाते।
बनें आपके पथगामी हम, यही भावना भाते॥2॥

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय भवाताप विनाशनाय चंदनं निर्व. स्वाहा।

पद अखण्ड पाने हे स्वामी, अक्षत धवल चढ़ाते।
बनें आपके पथगामी हम, यही भावना भाते॥3॥

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्व. स्वाहा।

सुरभि स्वात्म गुण को पाने हम, सुरभित सुमन-चढ़ाते।
बनें आपके पथगामी हम, यही भावना भाते॥4॥

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

उदराग्नी प्रशमन करने को, यह नैवेद्य चढ़ाते।
बनें आपके पथगामी हम, यही भावना भाते॥5॥

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

मोह नाश कर ज्ञान जगाने, जगमग दीप जलाते।
बनें आपके पथगामी हम, यही भावना भाते॥6॥

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।

कर्म जाल हम पूर्ण जलाने, सुरभित धूप जलाते।
बनें आपके पथगामी हम, यही भावना भाते॥7॥

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्ण अतिन्द्रिय सुख फल पाने, फल यह सरस चढ़ाते।
बनें आपके पथगामी हम, यही भावना भाते॥8॥

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

पद अनर्घ्य शाश्वत पाने हम, अतिशय अर्घ्य चढ़ाते।
बनें आपके पथगामी हम, यही भावना भाते॥9॥

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पञ्चकल्याणक के अर्घ्य

(सखी छन्द)

आश्विन वदि द्वितिया जानो, गर्भागम मंगल मानो।
सुर रत्न श्रेष्ठ वर्षाए, शुभ गर्भ कल्याण मनाए॥1॥

ॐ ह्रीं आश्विनकृष्णा द्वितीयायां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दशमी अषाढ़ वदि गाई, जन्मे नमि मंगल दाई।
शत इन्द्र शरण में आए, जो जन्म कल्याण मनाए।।2।।

ॐ ह्रीं आषाढ़कृष्णा दशम्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दशमी आषाढ़ वदि स्वामी, दीक्षा धारे शिवगामी।
मन में वैराग्य जगाए, वन में जा ध्यान लगाए।।3।।

ॐ ह्रीं आषाढ़कृष्णा दशम्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मगसिर सुदि ग्यारस पाए, प्रभु केवल ज्ञान जगाए।
सुर समवशरण बनवाए, उपदेश जीव तब पाए।।4।।

ॐ ह्रीं मार्गशीर्षशुक्ला एकादश्यां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चौदश वैशाख की गायी, मुक्ती पाए जिन भाई।
अपने सब कर्म नशाए, शिवपुर में धाम बनाए।।5।।

ॐ ह्रीं वैशाखकृष्णा चतुर्दश्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री नमिनाथजी की टोंक (मित्रधर कूट)

श्री सम्मेद शिखर की जय हो, मुक्त हुए जिनवर की जय हो।
उस धरती अंबर की जय हो, दुखहारी गिरवर की जय हो।।
सोरठा– नमिनाथ भगवान, श्रेष्ठ मित्रधर कूट से।
पाए पद निर्वाण, मुक्त हुए हैं कर्म से।।
नीलकमल लक्षण के धारी, नमिनाथ जिन मंगलकारी।
प्रभु ने कर्म घातिया नाशे, अतिशय केवल ज्ञान प्रकाशे।।
होकर प्रकाशी ज्ञान के, उपदेश दे सद्ज्ञान का।
मारग बताया आपने, संसार को कल्याण का।।
हम शरण में आए प्रभु, यह वंदना स्वीकार हो।
है भावना अंतिम विशद मम्, आत्म का उद्धार हो।।

चलो-चलो रे-2 सभी नर नार, तीर्थ के दर्शन को।
कटते हैं कर्म अपार, चलो रे भाई वंदन को।।1।।

ॐ ह्रीं निर्वाणकल्याणकमण्डित श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

गुण अनन्त को पाने वाले, नमीनाथ जी हुए महान्।
निज गुण पाने हेतु आपका, करते हैं हम भी गुणगान।।
चरण वन्दना करने हेतू, अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं।
अर्चा करने आज यहाँ पर, बहुत दूर से आए हैं।।2।।
दोहा– रत्नत्रय को धारकर, कर्म घातिया नाश।
नमि जिन मुक्ती पा लिए, करके ज्ञान प्रकाश।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित मित्रधर कूट से श्री नमिनाथ तीर्थंकरादि नौ कोड़ा-कोड़ी एक अरब पैंतालीस लाख सात हजार नौ सौ बयालीस मुनि मोक्ष पधारे तिनके चरणारविन्द में अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

एक अरब नौ कोटा-कोटी, लाख पैंतालिस सात हजार।
नौ सौ ब्यालिस अधिक बताए, हुए मुनीश्वर भव से पार।।
कूट मित्रधर के वन्दन से, एक कोटि का फल उपवास।
रत्नत्रय के धारी पाते, इसी कूट से मुक्ती वास।।3।।

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्रादि नव शतक कोडाकोडी एक अरब पंचचत्वारिंशत् लक्षसप्तसहस्र द्विचत्वारिंशत् मुनीश्वरेभ्यो नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा– चेतन गुण में लीन नित, रहते नमि जिनराज।
जयमाला गाए चरण, मिलकर सकल समाज।।

(रोला छन्द)

अपराजित से नाथ, चयकर भूपर आये।
मिथला नगरी को आकर, के धन्य बनाए।।1।।
विजय राज पितु जान, इक्ष्वाकु वंश कहाए।
मात वप्रिला नाथ, चिन्ह कमल सित पाए।।2।।
आयू दश हज्जार वर्ष, की पाए स्वामी।
साठ हाथ का उच्च, तन पाए शिवगामी।।3।।

जातिस्मरण कर प्राप्त, प्रभु वैराग्य जगाए।
लक्षण सहसरु आठ, देह में प्रभु प्रगटाये।।4।।
सहस भूप जिनराज, के संग दीक्षा पाए।
घाती कर्म विनाश, केवल ज्ञान जगाए।।5।।
गणधर सत्रह श्रेष्ठ, सुप्रभ प्रथम कहाए।।
करके कर्म विनाश, नमि जिन मुक्ती पाए।।6।।

दोहा– तीर्थराज सम्मेदगिर, कूट मित्र धर जान।
जिन प्रभु भक्ती पाए हैं, रहे हृदय में ध्यान।।

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– नमीनाथ भगवान के, गुण हैं उपमातीत।
भक्त मुक्ति पावे 'विशद', धारें गुण में प्रीत।।

।।इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

श्री नेमिनाथ निर्वाण भक्ति–22

विबुधपति-खगपति नरपति धनदोरगर भूत यक्षपति महितम्।
अतुल सुख विमल निरूपम शिवमचल मनामयं हि संप्राप्तम्।।1।।
कल्याणैः संस्तोष्ये पंचभिरनघं त्रिलोक परम गुरूम्।
भव्यजनतुष्टि जननै र्दुरवापैः नेमिजिनं भक्त्या।।2।।
कार्तिक शुक्ल षष्ठ्यां उत्तराषाढ मध्यमाश्रिते शशिनि।
आयातः स्वर्गसुखं भुक्त्वा जयन्ताधीशः।।3।।
समुद्र नृपतितनयो भारतवास्ये नगर शौरीपुरे।
देव्यां श्रीप्रियशिवाख्यायां सुस्वप्नान् संप्रदर्श्य विभुः।।4।।
श्रावणसित चित्रायां शशांक योगे चाहन्यां षष्ठ्याम्।
जज्ञे स्वोच्चस्थेषु ग्रहेषु सौम्येषु शुभलग्ने।।5।।
चित्राश्रिते शशांके श्रवण ज्योत्सने षष्ठ्याम् दिवसे।
पूर्वाण्हे रत्नघटै र्विबुधेन्द्राश्चक्रुरभिषेकम्।।6।।
भुक्त्वा कुमार काले त्रिशत वर्षाण्यनंत गुणराशिः।
अमरोपनीत भोगान् प्राणिवधाबोधितो त्वरितः।।7।।
नानाविधरूपचितां विचित्रा कूटोच्छ्रितां मणि विभूषाम्।
देवकुर्वाख्य शिविकामारूहय पुराद्विनिः क्रान्तः।।8।।

श्रावण शुक्ल षष्ठ्यां चित्रा भा मध्यमाश्रिते सोमे।
षष्ठेन त्वपराण्हे भक्तेन जिन प्रववाज।।9।।
ग्रामपुर खेटकर्वटमटंब घोषाकरान्प्रविजहार।
उग्रैस्तपोविधानैः नानादिवसामरैः पूज्यः।।10।।
सहस्राम्रवनस्य मध्ये वेणुद्रुम संश्रिते शिलापट्टे।
पूर्वाण्हे अष्ठेनस्थितस्य खलु जूनागढ़ ग्रामे।।11।।
अश्विन शुक्ल प्रतिपदायां चित्रा भानिमध्यमाश्रिते शशिनि।
क्षपक श्रेण्यारूढस्योत्पन्नं केवलज्ञानम्।।12।।
छत्राशोकौ घोषं सिंहासन दुंदुभिः कुसुमवृष्टिम्।
वरचामर भामण्डल दिव्यान्यन्यानि चावापात्।।13।।
दशविधमनगाराणामेकादशधोत्तरं तथा धर्मम्।
देशयमानो व्यवहरं सप्तशतऊनवर्षाणि जिनेन्द्रः।।14।।
अथ भगवान सम्प्रापद् दिव्यं गिरनार पर्वतं रम्यम्।
चातुर्वर्ण्य सुसंधस्तत्राभूद् वरदत्त प्रभृति।।15।।
पद्मवनदीर्घिका कुल विविध द्रुमखण्ड मंडिते रम्ये।
जूनागढ़नगरोद्याने पद्मासनेन स्थितः स मुनिः।।16।।
आषाढसित सप्तम्यां चित्रामृक्षे निहत्यकर्मरजः।
अवशेषं संप्रापत्व्यजरामरमक्षयं सौख्यम्।।17।।
परिनिर्वृत्तं जिनेन्द्रं ज्ञात्वा विबुधहृयथाशु चागम्य।
देवतरू रक्त चंदन कालागरू सुरभिगोशीर्षैः।।18।।
अग्नीन्द्राज्जिन देहं मुकुटानल सुरभि धूपवरमाल्यैः।
अभ्यर्च्य गणधरानपि गतादिवं खं च वनभवने।।19।।
इत्येवं भगवति नेमि जिन चंद्रे यः स्तोत्रं पठति सुसंध्यो द्वयोर्हि।
सोऽनंतं परम सुखं नृ देव लोके, भुक्त्वान्ते शिवपदमक्षयं प्रयाति।।20।।
यत्रार्हतां गणभृतां श्रुतपारगाणां, निर्वाण भूमिरिह भारत वर्ष जानाम्।
तामद्य शुद्धमनसा क्रिययावचोभिः, संस्तोतुमुद्यतमतिः परिणौमिभक्त्या।।21।।
माल्यानि वाक्स्तुतिमयैः कुसुमैः सुदृब्धा, न्यादाय मानसकरैरभितः किरन्तः।
पर्येम आदृतियुता भगनन्निषद्याः, संप्रार्थिता वयमिमे परमांगतिंताः।।22।।
शत्रुञ्जये नगवरे दमितारिपक्षाः पण्डोः सुताः परमनिर्वृत्तिमभ्युपेताः।
तुंग्यां तु संगरहितो बलभद्रनामा, नद्यास्तटे जितरिपुश्च सुवर्णभद्रः।।23।।
द्रोणीमति प्रबल कुण्डल मेढ्रके च, वैभार पर्वत तले वर सिद्ध कूटे।
ऋष्याद्रिके च विपुलाद्रिबलाहके च विन्ध्ये च पोदनपुरे वृषदीपके च।।24।।

सह्याचले च हिमवत्यपि सुप्रतिष्ठे, दण्डात्मके गजपथे पृथुसार यष्टौ।
ये साधवोहतमलाः सुगतिं प्रयाताः, स्थानानि तानि जगति प्रथितान्य भूवन्।।25।।
इक्षोर्विकार रसपृक्त गुणेन लोके पिष्टोऽधिकं मधुरतामुपयाति यद्वत्।
तद्वच्च पुण्य पुरुषै रुषितानि नित्यं, स्थानानि तानि जगतामिह पावनानि।।26।।
इत्यर्हतां शमवतां च महामुनीनां, प्रोक्तामयात्र परिनिर्वृत्ति भूमि देशाः।
ते मे जिना जितमया मुनयश्च शांताः दिश्यासुराशु सुगंति निरवद्य सौख्याम्।।27।।

क्षेपक श्लोक

शांति कुन्थ्वर कौरव्या यादवौ नेमिसुव्रतो।
उग्रनाथौ पार्श्ववीरौ शेषा इक्ष्वाकुवंशजाः।।

अंचलिका

इच्छामि भंते। परिणिव्वाण भत्ति काउस्सग्गो कओ तस्सालोचेउं इमम्मि चउत्थ समयस्स सद लक्ख कोडी एग सड्ढं पल्लूण तेत्तीसा तिहत्तरि णवसद सागरोवम पणसट्ठी लक्ख वस्स हीणे वासचउकम्मि सेसकालम्मि उज्जंते पव्वए आसाढ मास्स सुक्क सत्तमीए पुव्वण्हे चित्ता णक्खत्ते भयवदो णेमि जिणो सिद्धिं गदो। तिसुविलोएसु भवणवासिय-वाणविंतर जोयसिय-कप्पवासियत्ति चउव्विहादेवा सपरिवारा दिव्वेण ण्हाणेण दिव्वेण गंधेण, दिव्वेण अक्खेण, दिव्वेण पुप्फेण, दिव्वेण चुण्णेण दिव्वेण दीवेण, दिव्वेण धूवेण, दिव्वेण वासेण णिच्चकालं अच्चंति पूजंति वंदंति णमसंति परिणिव्वाण-महाकल्लाण पुज्जं करंति अहमवि इह संतो तत्थ संताइयं णिच्चकालं अंच्चेमि, पुज्जेमि वंदामि णमस्सामि दुक्खक्खओ कम्मक्खओ बोहिलाहो सुगई गमणं समाहि मरणं जिण गुण संपत्ति होउ मज्झं।

श्री नेमिनाथ पूजा–22

स्थापना (सखी छन्द)

जिनको जग भोगना भाए, वे मुक्ती पथ अपनाए।
हे नेमिनाथ जगनामी, आह्वानन् करते स्वामी।।

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(भुजंग प्रयात)

प्रभु के चरण तीन धारा कराएँ,
सभी पाप मल धोके पावन कहाएँ।
श्री नेमि जिन की हम पूजा रचाएँ,
लगे कर्म अपने सभी हम नशाएँ।।1।।

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

कपूरादि चंदन महांगध लाए,
परम मोक्ष गामी की पूजा को आए।
श्री नेमि जिन की हम पूजा रचाएँ,
लगे कर्म अपने सभी हम नशाएँ।।2।।

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय भवाताप विनाशनाय चंदनं निर्व. स्वाहा।

धुले शालि तन्दुल धरे पुञ्ज आगे,
निजानन्द पाएँ सभी शोक भागें
श्री नेमि जिन की हम पूजा रचाएँ,
लगे कर्म अपने सभी हम नशाएँ।।3।।

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्व. स्वाहा।

सुगंधित सुमन ले बनाई ये माला,
चढ़ाते चरण काम को मार डाला।
श्री नेमि जिन की हम पूजा रचाएँ,
लगे कर्म अपने सभी हम नशाएँ।।4।।

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

सरस मिष्ठ नैवेद्य ताजे बनाएँ,
प्रभू पूजते भूख व्याधी नशाएँ।
श्री नेमि जिन की हम पूजा रचाएँ,
लगे कर्म अपने सभी हम नशाएँ।।5।।

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

जले ज्योति कर्पूर की ध्वांत नाशें,
करें आरती ज्ञान ज्योती प्रकाशें।

श्री नेमि जिन की हम पूजा रचाएँ,
लगे कर्म अपने सभी हम नशाएँ॥6॥

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।

सुगन्धित सुरभि धूप खेते अगनि में,
सभी कर्म की भस्म हो एक क्षण में।
श्री नेमि जिन की हम पूजा रचाएँ,
लगे कर्म अपने सभी हम नशाएँ॥7॥

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री फलादि ताजे ये चरणों चढ़ाएँ,
मिले मोक्ष फल नाथ शिव सौख्य पाएँ
श्री नेमि जिन की हम पूजा रचाएँ,
लगे कर्म अपने सभी हम नशाएँ॥8॥

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

उदक गंध आदिक मिला अर्घ्य लाए,
सुपद श्रेष्ठ शाश्वत प्रभू पाते आए।
श्री नेमि जिन की हम पूजा रचाएँ,
लगे कर्म अपने सभी हम नशाएँ॥9॥

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पञ्चकल्याणक के अर्घ्य

(चाल छन्द)

भूलोक पूर्ण हर्षाया, गर्भागम प्रभु ने पाया।
कार्तिक सुदि षष्ठी पाए, प्रभु स्वर्ग से चयकर आए॥1॥

ॐ ह्रीं कार्तिक शुक्लाषष्ठम्यां गर्भ मंगलमण्डिताय श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रावण सुदि षष्ठी स्वामी, जन्मे जिन अन्तर्यामी।
भू पे छाई उजियाली, पा दिव्य दिवाकर लाली॥2॥

ॐ ह्रीं श्रावण शुक्लाषष्ठम्यां जन्म मंगलमण्डिताय श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रावण सुदि षष्ठी गाई, नेमी जिन दीक्षा पाई।
पशुओं का बन्धन तोड़ा, इस जग से मुख को मोड़ा॥3॥

ॐ ह्रीं श्रावण शुक्लाषष्ठम्यां तप मंगलमण्डिताय श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अश्विन सुदि एकम जानो, प्रभु ज्ञान जगाए मानो।
शिव पथ की राह दिखाए, जीवों को अभय दिलाए॥4॥

ॐ ह्रीं आश्विन शुक्ला प्रतिपदायां केवलज्ञान मण्डिताय श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आठें आषाढ़ सुदि गाई, भव से प्रभु मुक्ती पाई।
नश्वर शरीर यह छोड़े, कर्मों के बन्धन तोड़े॥5॥

ॐ ह्रीं श्रावण शुक्ला अष्टम्यां मोक्षमंगल प्राप्त श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री नेमिनाथजी की टोंक

श्री गिरनार गिरि की जय हो, मुक्त हुए जिनवर की जय हो।
उस धरती अंबर की जय हो, दुखहारी गिरवर की जय हो॥
सोरठा– गिरि गिरनार महान्, ऊर्जयन्त भी नाम है।
पाए पद निर्वाण, काल दोष से नेमि जिन॥
नेमिनाथ के चरण कमल में, भव्य जीव आ पाते हैं।
तीर्थंकर जिन के दर्शन से, सर्व कर्म कट जाते हैं॥
गिरि गिरनार के ऊपर श्रीजिन, को हम शीश झुकाते हैं।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, प्रभु के चरण चढ़ाते हैं॥
राहु अरिष्ट ग्रह शांत करो प्रभु, हमने तुम्हें पुकारा है।
हमको प्रभु भव से पार करो, तुम बिन न कोई हमारा है॥
चलो-चलो रे-2 सभी नर नार, तीर्थ के दर्शन को।
कटते हैं कर्म अपार, चलो रे भाई वंदन को॥1॥

ॐ ह्रीं निर्वाणकल्याणकमण्डित श्री नेमिनानाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नेमिनाथ! करुणा निधान, सब पर करुणा बरसाते हो।
जो शरणागत बन जाते हैं, उनको भव पार लगाते हो॥

हम भक्त आपके गुण गाकर, यह अनुपम अर्घ्य चढ़ाते हैं।
हे नाथ! आपके चरणों में हम, सादर शीश झुकाते हैं।।2।।

दोहा– राज्य तजा राजुल तजी, छोड़ा सब धन धाम।
गिरनारी से शिव गये, तव पद 'विशद' प्रणाम।।

ॐ ह्रीं श्री गिरनार सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित कूट से आषाढ़ सुदी सातै को श्री नेमिनाथ तीर्थंकरादि व बहत्तर करोड़ सात सौ मुनि मोक्ष पधारे तिनके चरणारविन्द में अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चरण युगल त्रय रहे मनोहर, अजितनाथ की कूट के पास।
अनिरुद्ध शम्भु प्रद्युम्न कृष्णसुत, कीन्हे अपने कर्म विनाश।।
उर्जयन्त से नेमिनाथ जी, कोटि बहत्तर मुनि के साथ।
मुक्ती पाए जिनके चरणों, झुका रहे हम पद में माथ।।3।।

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्र शंबू प्रद्युम्नकुमारादि द्वासप्तति कोडी सप्तशतक मुनीश्वरेभ्यो नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा– जिन अर्चा जो भी करें, वे हों मालामाल।
नेमिनाथ भगवान की, गाएँ नित गुणमाल।।

(तोटक छन्द)

जय नेमिनाथ चिद्रूपराज, जय जय जिनवर तारण जहाज।
जय समुद्र विजय जग में महान, प्रभु शिवादेवि के गर्भ आन।।1।।
अनहद बाजों की बजी तान, सुर पुष्प वृष्टि कीन्हे महान।
सुर जन्म कल्याणक किए आन, है शंख चिन्ह जिनका प्रधान।।2।।
ऊँचाई चालिस रही हाथ, इक सहस आठ लक्षण सनाथ।
है श्याम रंग तन का महान, इस जग में जिनकी अलग शान।।3।।
जीवों पर करुणा आप धार, मन में जागा वैराग्य सार।
झंझट संसारी आप छोड़, गिरनार गये रथ आप मोड़।।4।।
कर केश लुंच व्रत लिए धार, संयम धारे हो निर्विकार।।
फिर किए आत्म का प्रभू ध्यान, तब जगा आपको विशद ज्ञान।।5।।
तब दिव्य देशना दिए नाथ, सुर नर पशु सुनते एक साथ।
फिर करके सारे कर्म नाश, गिरनार से पाए मोक्ष वास।।6।।

दोहा– भोगों को तज योग धर, दिए 'विशद' सन्देश।
वरने शिव रानी चले, धार दिगम्बर भेष।।

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– गुणाधार योगी बने, अपनाया शिव पंथ।
मोक्ष महल में जा बसे, किया कर्म का अंत।।

।।इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

श्री पार्श्वनाथ निर्वाण भक्ति–23

विबुधपति-खगपति नरपति धनदोरग भूत यक्षपति महितम्।
अतुल सुख विमल निरूपम शिवमचल मनामयं हि संप्राप्तम्।।1।।
कल्याणैः संस्तोष्ये पंचभिरनघं त्रिलोक परम गुरूम्।
भव्यजनतुष्टि जननै र्दुरवापैः पार्श्वजिनं भक्त्या।।2।।
वैशाख कृष्ण तृतीयायां विशाखा भामध्यमाश्रितेशशिनि।
आयातः स्वर्गसुखं भुक्तवां प्राणताधीशः।।3।।
विश्वसेन नृपति तनयो भारतवास्ये वाराणसी नगरे।
देव्यां प्रियवामायां सुस्वप्नान् संप्रदर्श्य विभुः।।4।।
पौष कृष्ण विशाखायां अनिलायोगे दिने एकादश्यां।
जज्ञे स्वोच्चस्थेषु ग्रहेषु सौम्येषु शुभलग्ने।।5।।
विशाखाश्रिते शशांके पौष कृष्णे एकादशी दिवसे।
पूर्वाण्हे रत्नघटै र्विबुधेन्द्राश्चक्रुरभिषेकम्।।6।।
भुक्त्वा कुमार काले च त्रिंशत् वर्षाण्यनंत गुणराशिः।
अमरोपनीत भोगान् जाति स्मरण बोधितोत्वरितः।।7।।
नानाविधरूपचितां विचित्र कूटोच्छ्रितां मणि विभूषाम्।
विमला कुर्वाख्य शिविकामारूह्य पुराद्विनिः क्रान्तः।।8।।
पौषवदि एकादश्यां विशाखा भामध्यमाश्रिते सोमे।
षष्टेन त्वपराण्हे भक्तेन जिनः प्रवव्राज।।9।।
ग्रामपुर खेटकर्वटमटंब घोषकरान्प्रविजहार।
उग्रैस्तापोविधानैः चतुर्मासान्यमरैः पूज्यः।।10।।
अश्व वनस्य मध्ये धवलद्रुम संश्रिते शिलापट्टे।
पूर्वाण्हे अष्टेन स्थितस्य वाराणसी ग्रामे।।11।।

चैत्र कृष्ण चतुर्थ्यां विशाखा भामध्यमाश्रिते चंद्रे।
क्षपक श्रेण्यारूस्योत्पन्नं केवलज्ञानम्।।12।।
छत्राशोकौ घोषं सिंहासन दुंदुभिः कुसुमवृष्टिम्।
वरचामर भामण्डल दिव्यान्यन्यानि चावापत्।।13।।
दश विधमनगाराणमेकादशधोत्तरं तथा धर्मम्।
देशयमानो व्यवहरं अनेकवर्षाण्यथ जिनेन्द्रः।।14।।
अथ भगवान सप्रांपद् दिव्यं सम्मेद पर्वतं रम्यम्।
चातुर्वर्ण्य सुसंघस्तत्राभूत्स्वयंभू प्रभृति।।15।।
पद्मवनदीर्घिका कुल विविध द्रुमखण्ड मंडितेरम्ये।
सुवर्णकूटोद्याने व्युत्सर्गेण स्थितः स मुनिः।।16।।
श्रावण शुक्ला सप्तम्यां विशाखामृक्षे निहत्यकर्मरजः।
अवशेषं संप्रापत्व्यजरामरमक्षयं सौख्यम्।।17।।
परिनिर्वृत्तं जिनेन्द्रं ज्ञात्वा विबुधहृयथाशु चागम्य।
देवतरू रक्त चंदन कालागरू सुरभिगोशीर्षैः।।18।।
अग्नीन्द्राज्जिन देहं मुकुटानल सुरभि धूपवरमाल्यैः।
अभ्यर्च्य गणधरानपि गतादिवं खं च वनभवने।।19।।
इत्येवं भगवति पार्श्व जिनेश चंद्रे यः स्तोत्रं पठति सुसंध्ययो र्द्वयोर्हि।
सोऽनंतं परम सुखं नृ देव लोके, भुक्त्वान्ते शिवपदमक्षयं प्रयाति।।20।।
यत्रार्हतां गणभृतां श्रुतपारगाणां, निर्वाण भूमिरिह भारत वर्ष जानाम्।
तामद्य शुद्धमनसा क्रिययावचोभिः, संस्तोतुमुद्यतमतिः परिणौमिभक्त्या।।21।।
माल्यानि वाक्स्तुतिमयैः कुसुमैः सुदृब्धा, न्यादाय मानसकरैरभितः किरन्तः।
पर्येम आदृतियुता भगवन्निषद्याः, संप्रार्थिता वयमिमे परमांगतिं ताः।।22।।
शत्रञ्जये नगवरे दमितारिपक्षाः पण्डो, सुताः परमनिर्वृत्तिमभ्युपेताः।
तुंग्यां तु संगरहितो बलभद्रनामा, नद्यास्तटे जितरिपुश्च सुवर्णभद्रः।।23।।
द्रोणीमति प्रबल कुण्डल मेढ्रके च, वैभार पर्वत तले वर सिद्ध कूटे।
ऋष्याद्रिके च विपुलाद्रिबलाहके च विन्ध्ये च पोदन पुरे वृषदीपके च।।24।।
सह्याचले च हिमवत्यपि सु प्रतिष्ठे, दण्डात्मके गजपथे पृथुसार यष्टौ।
ये साधवोहतमलाः सुगतिं प्रयाताः, स्थानानि तानि जगति प्रथितान्य भूवन्।।25।।
इक्षोर्विकार रसपृक्त गुणेन लोके पिष्टोऽधिकं मधुरतामुपयाति यद्वत्।
तद्वच्च पुण्य पुरुषै रुषितानि नित्यं, स्थानानि तानि जगतामिह पावनानि।।26।।
इत्यर्हता शमवतां च महामुनीनां, प्रोक्तामयात्र परिनिर्वृति भूमि देशाः।
ते मे जिना जितमया मुनयश्च शांताः दिश्यासुराशु सुगतिं निरवद्य सौख्याम्।।27।।

क्षेपक श्लोक

शांति कुन्थ्वर कौरव्या यादवौ नेमिसुव्रतौ।
उग्रनाथौ पार्श्ववीरौ शेषा इक्ष्वाकुवंशजाः।।

अंचलिका

इच्छामि भंते! परिणिव्वाण भत्ति काउस्सग्गो कओ तस्सलोचेउं इमम्मि चउत्थ समयस्स मज्झिमे भाए सद लक्ख कोडी एग सड्ढं पल्लूण तेत्तीसा तिहत्तरि णवसद सागरोवम पणसट्ठी लक्ख तिसीदि सग सद पण्णास वस्स हीणे वास चउक्कम्मि सेसकालम्मि सम्मए पव्वए सावण मासस्स सुक्क सप्तमीए पुव्वण्हे विसाखा णक्खत्ते भयवदो पासजिणो सिद्धिं गदो। तिसुवि लोएसु भवण वासिय वाणविंतर जोयसिय कप्पवासियत्ति चउव्विहादेवा सपरिवारा दिव्वेण ण्हाणेण, दिव्वेण गंधेण, दिव्वेण अक्खेण, दिव्वेण पुप्फेण दिव्वेण चुण्णेण दिव्वेण दीवेण, दिव्वेण धूवेण, दिव्वेण वासेण णिच्चकालं अंच्चंति पूजंति, वंदांते, णमंस्संति, परिणिव्वाण महाकल्लाण पुज्जं करंति। अहमवि इहसंतो तत्थ संताइयं णिच्चकालं अंचेमि, पुज्जेमि वंदामि णमस्सामि दुक्खक्खओ कम्मक्खओ बोहिलाओ सुगई गमणं समाहि मरणं जिण गुण संपत्ति होउ मज्झं।

श्री पार्श्वनाथ जिन पूजा–23

स्थापना (सखी छन्द)

उपसर्गों पर जय पाए, वह पार्श्वनाथ कहलाए।
जिनकी महिमा जग गाए, हम आह्वान को आए।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(शम्भू छन्द)

क्षीरोदधि का पय सम जल प्रभु, धारा देने लाए हैं।
पार्श्व प्रभू के श्री चरणों में, पूजा करने आये हैं।।1।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

मलयागिर चन्दन केसर घिस, चरण चढ़ाने लाए हैं।
पार्श्व प्रभू के श्री चरणों में, पूजा करने आये हैं।।2।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय भवाताप विनाशनाय चंदनं निर्व. स्वाहा।

अक्षय सुख पाने को अक्षत, पुञ्ज चढ़ाने लाए हैं।
पार्श्व प्रभू के श्री चरणों में, पूजा करने आये हैं।।3।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्व. स्वाहा।

सुरतरु के यह सुमन मनोहर, नाथ चढ़ाने लाए हैं।
पार्श्व प्रभू के श्री चरणों में, पूजा करने आये हैं।।4।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

घृत के यह नैवेद्य सरस शुभ, ताजे नाथ बनाए हैं।
पार्श्व प्रभू के श्री चरणों में, पूजा करने आये हैं।।5।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

गौघृत भर कंचन दीपक में, दीपक ज्योति जलाए हैं।
पार्श्व प्रभू के श्री चरणों में, पूजा करने आये हैं।।6।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।

कृष्णागरू की धूप बनाकर, अग्नी बीच जलाए हैं।
पार्श्व प्रभू के श्री चरणों में, पूजा करने आये हैं।।7।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

पिस्ता अरु बादाम सुपारी, थाल में श्रीफल लाए हैं।
पार्श्व प्रभू के श्री चरणों में, पूजा करने आये हैं।।8।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल चन्दन अक्षत आदिक से, हम यह अर्घ्य बनाए हैं।
पार्श्व प्रभू के श्री चरणों में, पूजा करने आये हैं।।9।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पञ्चकल्याणक के अर्घ्य

(दोहा)

वैशाख कृष्ण द्वितिया प्रभू, पाए गर्भ कल्याण।
चय हो अच्युत स्वर्ग से, भूपर किए प्रयाण।।1।।

ॐ ह्रीं वैशाख कृष्णा द्वितीयायां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पौष कृष्ण एकादशी, जन्मे पारस नाथ।
सुर नरेन्द्र देवेन्द्र सब, चरण झुकाए माथ।।2।।

ॐ ह्रीं पौषबदी ग्यारस जन्मकल्याणक प्राप्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पौष कृष्ण एकादशी, छोड़ दिया परिवार।
संयम धारण कर बने, पार्श्व प्रभू अनगार।।3।।

ॐ ह्रीं पौषबदी ग्यारस तपकल्याणक प्राप्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चैत कृष्ण वदि चौथ को, पाए केवल ज्ञान।
समवशरण रचना किए, आके देव प्रधान।।4।।

ॐ ह्रीं चैत्रवदी चतुर्थी कैवल्य ज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रावण शुक्ला सप्तमी, करके आतम ध्यान।
कर्म नाश करके प्रभू, पाए पद निर्वाण।।5।।

ॐ ह्रीं सावनसुदी सप्तमी मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री पार्श्वनाथजी की टोंक (स्वर्णभद्र कूट)

श्री सम्मेद शिखर की जय हो, मुक्त हुए जिनवर की जय हो।
उस धरती अंबर की जय हो, दुखहारी गिरवर की जय हो।।
सोरठा– कमठ किया उपसर्ग, बैर जानकर पूर्व का।
पाए जिन अपवर्ग, कर्म नाशकर ध्यान से।।
पावन तीर्थराज है भूपर, गिरि सम्मेद शिखर के ऊपर।
सबसे ऊँची टोंक रही है, महिमा जिसकी अगम कही है।।

महिमा अगम है जिन प्रभु की, तीर्थ की भी जानिए।
जो दु:खहर्ता सौख्यकर्त्ता, मोक्षदायी मानिए॥
हम शरण में आए प्रभु, यह वंदना स्वीकार हो।
है भावना अंतिम विशद मम्, आत्म का उद्धार हो॥
चलो-चलो रे-2 सभी नर नार, तीर्थ के दर्शन को।
कटते हैं कर्म अपार, चलो रे भाई वंदन को॥1॥

ॐ ह्रीं निर्वाणकल्याणकमण्डित श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्रेभ्यो नम: अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

उपसर्गों में संघर्षों में, तुमने समता को धारा है।
कर्मों का शत्रू दल आगे, हे पार्श्व! आपके हारा है॥
हम भक्त आपके गुण गाकर, यह अनुपम अर्घ्य चढ़ाते हैं।
हे नाथ! आपके चरणों में हम, सादर शीश झुकाते हैं॥2॥

दोहा– ध्यान लीन होकर प्रभु, सुतप किया दिन रैन।
समता धर पार्श्व जिन, हुए नहीं बैचेन॥

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित स्वर्णभद्र कूट से श्री पार्श्वनाथ तीर्थंकरादि ब्यासी करोड़ चौरासी लाख पैंतालीस हजार सात सौ ब्यालीस मुनि मोक्ष पधारे तिनके चरणारविन्द में अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कोटि ब्यासी लाख चुरासी, मुनिवर पैंतालिस हज्जार।
सात सौ ब्यालिस मुनी कर्म का, नाश किए पाए भव पार॥
सोलह कोटि उपवासों का, फल पाते हैं इस जग के जीव।
किए वन्दना जिन चरणों की, प्राप्त करें सब पुण्य अतीव॥3॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्रादि द्वयशीति कोडी चतुरशीति लक्ष पंचचत्वारिंशत् सप्तशतक द्विचत्वारिंशत् मुनीश्वरेभ्यो नम: अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा– ध्यान लगाया आपने, जीते सब उपसर्ग।
गुण माला गाते विशद, पाने हम अपवर्ग॥

(राधेश्याम छन्द)

इन्द्र नरेन्द्र महेन्द्र सुरेन्द्र, गणेन्द्र सुमहिमा गाते हैं।
जिनवर के पञ्च कल्याणक में, खुश हो जयकार लगाते हैं॥1॥
जब गर्भागम में प्रभु आते, तब रत्न वृष्टि करते भारी।
यह तीर्थंकर प्रकृति का फल, इस जग में गाया शुभकारी॥2॥

जब जन्म कल्याणक होता है, तब यशोगान सुर करते हैं।
तीनों लोकों के जीव सभी, उस समय भाव शुभ करते हैं॥3॥
इस जग में रहकर के स्वामी, इस जग में न्यारे रहते हैं।
सबसे रहते हैं वह विरक्त, सब उनको अपना कहते है॥4॥
गुणगान करें सब जीव सदा, यह पुण्य की ही बलिहारी है।
जो उभय लोक में जीवों को, होता शुभ मंगलकारी है॥5॥
सब कर्म नाश करके स्वामी, मुक्ती पथ पर बढ़ जाते हैं।
है शिवनगरी में सिद्धशिला, जिस पर निज धाम बनाते हैं॥6॥

दोहा– यह संसार असार है, जान सके ना नाथ।
आज ज्ञान हमको हुआ, अत: झुकाते माथ॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– भक्त कई तारे प्रभू, आई हमारी बार।
पास बुलालो शीघ्र ही, अब ना करो अवार॥

॥इत्याशीर्वाद: पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्॥

श्री महावीर निर्वाण भक्ति–24

विबुधपति-खगपति नरपति धनदोरग भूत यक्षपति महितम्।
अतुल सुख विमल निरूपम शिवमचल मनामयं हि संप्राप्तम्॥1॥
कल्याणै: संस्तोष्ये पंचभिरनघं त्रिलोक परम गुरूम्।
भव्यजनतुष्टि जननै र्दुरवापै: सन्मतिं भक्त्या॥2॥
आषाढसुसितषष्ठ्यां हस्तोत्तर मध्यमाश्रितेशशिनि।
आयात: स्वर्गसुखं भुक्त्वापुष्पोत्तराधीश:॥3॥
सिद्धार्थनृपतितनयो भारतवास्ये विदेहकुण्डपुरे।
देव्यां प्रियकारिण्यां सुस्वप्नान् संप्रदर्श्य विभु:॥4॥
चैत्रसितपक्षफाल्गुनि शशांकयोगे दिने त्रयोदश्याम्।
जज्ञे स्वोच्चस्थेषु ग्रहेषु सौम्येषु शुभलग्ने॥5॥
हस्ताश्रिते शशांके चैत्र ज्योत्सने चतुर्दशीदिवसे।
पूर्वाण्हे रत्नघटै र्विबुधेन्द्राश्चक्रुरभिषेकम्॥6॥
भुक्त्वा कुमार काले सहस्र त्रिंशद्ववर्षाण्यनंत गुणराशि:।
अमरोपनीत भोगान्सहसाभिनिबोधितोऽन्येद्यु:॥7॥

नानाविधरूपचितां विचित्र कूटोच्छ्रितां मणि विभूषाम्।
चन्द्र प्रभाख्यशिविकामारूहय पुराद्विनिः क्रान्तः॥8॥
मार्गशिर कृष्ण दशमी हस्तोत्तर मध्यमाश्रिते सोमे।
षष्ठेन त्वपराण्हे भक्तेन जिनः प्रवव्राज॥9॥
ग्रामपुर खेटकर्वटमटंब घोषाकरान्प्रविजहार।
उग्रैस्तपोविधानैः द्वादशवर्षण्यमरैः पूज्यः॥10॥
ऋजुकूलायास्तीरे शाल्मद्रुम संश्रिते शिलापट्टे।
अपराण्हे षष्ठेन स्थितस्य खलु जृंभिकाग्रामे॥11॥
वैशाखसितदशम्यां हस्तोत्तरमध्यमाश्रिते चंद्रे।
क्षपक श्रेण्यारूढस्योत्पन्नं केवलज्ञानम्॥12॥
अथ भगवान संप्रापद् दिव्यं वैभार पर्वतं रम्यम्।
चातुर्वर्ण्य सुसंघस्तत्राभूत गौतम प्रभृति॥13॥
छत्राशोकौ घोषं सिंहासन दुंदुभिः कुसुमवृष्टिम्।
वरचामर भामण्डल दिव्यान्यन्यानि चावापत्॥14॥
दस विधमनगाराणामेकादशधोत्तरं तथा धर्मम्।
देशयामनो व्यवहरं स्त्रिंशद्वर्षाण्यथ जिनेन्द्रः॥15॥
पद्मवनदीर्घिका कुल विविध द्रुमखण्ड मंडितेरम्ये।
पावानगरोद्याने व्युत्सर्गेण स्थितः स मुनिः॥16॥
कार्तिक कृष्णस्यान्ते स्वातावृक्षे निहत्यकर्मरजः।
अवशेषं संप्रापत्व्यजरामरमक्षयं सौख्यम्॥17॥
परिनिर्वृत्तं जिनेन्द्र ज्ञात्वा विबुधहयथाशु चागम्य।
देवतरू रक्त चंदन कालागरू सुरभिगोशीर्षैः॥18॥
अग्नीन्द्राज्जिन देहं मुकुटानल सुरभि धूपवरमाल्यैः।
अभ्यर्च्य गणधरानपि गतादिवं खं च वनभवने॥19॥
इत्येवं भगवति वर्धमान चंद्रे यः स्तोत्रं पठति सुसंध्ययो र्द्वयोर्हि।
सोऽनंतं परम सुखं नृ देव लोके, भुक्त्वान्ते शिवपदमक्षयं प्रयाति॥20॥
यत्रार्हतां गणभृतां श्रुतपारगाणां, निर्वाण भूमिरिह भारतर वर्ष जानाम्।
तामद्य शुद्धमनसा क्रिययावचोभिः, संस्तोतुमुद्यतमतिः परिणौमिभक्त्या॥21॥
कैलाश शैलशिखरेर परिनिर्वृतोऽसौ, शैलेशिभावमुपपद्य वृषो महात्मा।
चम्पापुरे च वसुपूज्यसुतः सुधीमान्, सिद्धिं परामुपगतो गतरागबन्धः॥22॥
यत्प्रार्थ्यते शिवमयं विबुधेश्रवराद्यैः, पाखण्डिभिश्च परमार्थगवेष शीलैः।
नष्टाष्ट कर्म समये तदरिष्टनेमिः, संप्राप्तवान् क्षितिधरे वृहदूर्जयन्ते॥23॥

पावापुरस्य बहिरून्नत भूमिदेशे, पद्मोत्पलाकुलवतां सरसां हि मध्ये।
श्री वर्द्धमान जिनदेव इति प्रतीतो, निर्वाणमाप भगवान्प्रविधूतपाप्मा॥24॥
शेषास्तु ते जिनवरा जितमोहल्ला, ज्ञानार्क भूरि किरणैरव भास्य लोकान्।
स्थानं परं निरवधारित सौख्यनिष्ठं, सम्मेद पर्वततले समवापुरीशाः॥25॥
आद्यश्चर्तुदश दिनैर्विनिवृत्त योगः, षष्ठेन निष्ठितकृतिर्जिन वर्द्धमानः।
शेषाविधूत घनकर्म निबद्धपाशाः, मासेन ते यतिवरांस्त्व भवन्वियोगाः॥26॥
माल्यानि वाक्स्तुतिमयैः कुसुमैः सुदृब्धा, न्यादाय मानसकरैरभितः किरन्तः।
पर्येम आदृतियुता भगवन्निषद्याः, संप्रार्थिता वयमिमे परमांगतिं ताः॥27॥
शत्रुञ्जये नगवरे दमितारिपक्षाः पण्डोः सुताः परमनिर्वृत्तिमभ्युपेताः।
तुंग्यां तु संगरहितो बलभद्रनामा, नद्यास्तटे जितरिपुश्च सुवर्णभद्रः॥28॥
द्रोणीमति प्रबल कुण्डल मेढ्रके च, वैभार पर्वत तले वर सिद्ध कूटे।
ऋष्याद्रिके च विपुलाद्रिबलाहके च विन्ध्ये च पोदन पुरे वृषदीपके च॥29॥
सह्याचले च हिमवत्यपि सुप्रतिष्ठे, दण्डात्मके गजपथे पृथुसार यष्टौ।
ये साधवोहतमलाः सुगतिं प्रयाताः, स्थानानि तानि जगति प्रथितान्य भूवन्॥30॥
इक्षोर्विकार रसपृक्त गुणेन लोके पिष्टोऽधिकं मधुरतामुपयाति यद्वत्।
तद्वच्च पुण्य पुरुषै रुषितानि नित्यं, स्थानानि तानि जगतामिह पावनानि॥31॥
इत्यर्हतां शमवतां च महामुनीनां, प्रोक्तामयात्र परिनिर्वृति भूमि देशाः।
ते मे जिना जितभया मुनयश्च शांताः दिश्यासुराशु सुगतिं निरवद्य सौख्याम्॥32॥

क्षेपक श्लोक

कैलाशाद्रौ मुनीन्द्रः पुरुरपदुरितो मुक्तिमाप प्रणूतः।
चंपायां वासुपूज्यस्त्रिदशपतिनुतो नेमिरप्यूर्जयंते॥1॥
पावायां वर्धमानस्त्रिभुवनगुरवो विंशतिस्तीर्थनाथाः।
सम्मेदाग्रे प्रजग्मुर्ददतु विनमतां निवृत्तिं नो जिनेन्द्राः॥2॥
गोर्गजोश्वः कपिः कोकः सरोजः स्वस्तिकः शशि।
मकरः श्रीयुतो वृक्षो गंडो महिष सूकरौ॥3॥
सेधा वज्रमृगच्छागाः पाठीनः कलशस्तथा।
कच्छपश्चोत्पलं शंखो नागराजश्च केसरी॥4॥
शांति कुन्थ्वर कौरव्या यादवौ नेमिसुव्रतौ।
उग्रनाथौ पार्श्ववीरौ शेषा इक्ष्वाकुवंशजाः॥

अंचलिका

इच्छामि भंते! परिणिव्वाण भत्ति काउस्सग्गो कओ तस्सालोचेउं इमम्मि, अवसप्पिणीए चउत्थ समयस्स पच्छिमे भाए आउट्ठमासहीणे

वासचउक्कम्मि सेसकालम्मि, पावाए णयरीए कत्तिय मासस्स किण्ह चउद्दसिए रत्तीए सादीए, णक्खत्ते, पच्चूसे, भयवदो महदि महावीरो वड्ढमाणो सिद्धिं गदो। तिसुवि लोएसु भवण वासिय वाणविंतर जोयसिय कप्पवासियत्ति चउव्विहादेवा सपरिवारा दिव्वेण ण्हाणेण, दिव्वेण गंधेण, दिव्वेण अक्खेण, दिव्वेण पुप्फेण दिव्वेण चुण्णेण दिव्वेण दीवेण, दिव्वेण धूवेण, दिव्वेण वासेण णिच्चकालं अंच्चंति पूजंति, वंदंति, णमंस्संति, परिणिव्वाण महाकल्लाण पुज्जं करंति। अहमवि इहसंतो तत्थ संताइयं णिच्चकालं अंचेमि, पुज्जेमि वंदामि णमस्सामि दुक्खक्खओ कम्मक्खओ बोहिलाहो सुगई गमणं समाहि मरणं जिण गुण संपत्ति होउ मज्झं।

श्री महावीर पूजा–24

स्थापना

हैं वीतराग धारी, श्री महावीर अनगारी।
निज उर में हम तिष्ठाते, जिन पद में शीश झुकाते।

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(लक्ष्मीधरा-छन्द)

तीर्थवारी से यह स्वच्छ झारी भरें,
तीर्थ कर्तार के पाद धारा करें।
वीर के पाद पूजा किए मन खिले,
अब हमें शीघ्र ही मोक्ष पदवी मिले।।1।।

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

स्वर्ण के सदृश यह गंध हम लाए हैं,
राग की दाह को मैटने आए हैं।
वीर के पाद पूजा किए मन खिले,
अब हमें शीघ्र ही मोक्ष पदवी मिले।।2।।

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय भवाताप विनाशनाय चंदनं निर्व. स्वाहा।

सूर्य रश्मी सदृश श्वेत अक्षत किए,
आत्म निधि प्राप्त हो पुञ्ज आए लिए
वीर के पाद पूजा किए मन खिले,
अब हमें शीघ्र ही मोक्ष पदवी मिले।।3।।

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्व. स्वाहा।

श्रेष्ठ सुरभित कुसुम थाल में भर लिए,
काम व्याधी हमारी प्रभू नाशिए।
वीर के पाद पूजा किए मन खिले,
अब हमें शीघ्र ही मोक्ष पदवी मिले।।4।।

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

सरस चरु यह बना लाए हैं थाल में,
क्षुधा व्याधी हरो नाथ पूजें तुम्हें।
वीर के पाद पूजा किए मन खिले,
अब हमें शीघ्र ही मोक्ष पदवी मिले।।5।।

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

कर रहे नाथ चरणों में हम आरती,
चित्त में अब जगे ज्ञान की भारती।
वीर के पाद पूजा किए मन खिले,
अब हमें शीघ्र ही मोक्ष पदवी मिले।।6।।

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।

धूप सुरभित प्रभू अग्नि में खेवते,
कर्म शत्रू जलें आप पद सेवते।
वीर के पाद पूजा किए मन खिले,
अब हमें शीघ्र ही मोक्ष पदवी मिले।।7।।

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल से पूजा रचाते हृदय मम खिले,
नाथ पद पूजते सर्व सिद्धी मिले।
वीर के पाद पूजा किए मन खिले,
अब हमें शीघ्र ही मोक्ष पदवी मिले।।8।।

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

नीर गंधादि से स्वर्ण थाली भरें,
शीघ्र शिवसुन्दरी नाथ हम भी वरें।
वीर के पाद पूजा किए मन खिले,
अब हमें शीघ्र ही मोक्ष पदवी मिले।।9।।

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पञ्चकल्याणक के अर्घ्य

(चाल छन्द)

षष्ठी आषाढ़ सुदि पाए, सुर रत्न की झड़ी लगाए।
चहुँ दिश में छाई लाली, मानो आ गई दिवाली।।1।।

ॐ ह्रीं आषाढ़ शुक्ल षष्ठी गर्भकल्याणक प्राप्त श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तेरस सुदि चैत की आई, जन्मोत्सव की घड़ी आई।
प्राणी जग के हर्षाए, खुश हो जयकार लगाए।।2।।

ॐ ह्रीं चैत्रसुदी तेरस जन्मकल्याणक प्राप्त श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अगहन सित दशमी गाई, प्रभु ने जिन दीक्षा पाई।
मन में वैराग्य जगाया, अन्तर का राग हटाया।।3।।

ॐ ह्रीं मगसिर सुदी दशमी तपकल्याणक प्राप्त श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वैशाख सु दशमी पाए, प्रभु केवल ज्ञान जगाए।
सुर समवशरण बनवाए, जिन दिव्य ध्वनि सुनाएँ।।4।।

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्ला दशमी केवलज्ञान प्राप्त श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मों की सांकल तोड़े, मुक्ती से नाता जोड़े।
कार्तिक की अमावस पाए, शिवपुर में धाम बनाए।।5।।

ॐ ह्रीं कार्तिक अमावस्यायां मोक्ष कल्याणक प्राप्त श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री महावीर स्वामी की टोंक

श्री पावापुर क्षेत्र की जय हो, मुक्त हुए जिनवर की जय हो।
उस धरती अंबर की जय हो, दुखहारी गिरवर की जय हो।।
सोरठा– पाए पद निर्वाण, पद्म सरोवर से प्रभु।
महावीर भगवान, काल दोष यह मानिए।।
हे वीर प्रभो! महावीर प्रभो!, हमको सद्राह दिखा जाओ।
यह भक्त खड़ा है आश लिये, प्रभु आशिष दो उर में आओ।
तुम तीन लोक में पूज्य हुए, हम पूजा करने को आए।
हम भक्ति भाव से हे भगवन्! यह भाव सुमन कर में लाए।
हे नाथ! आपके द्वारे पर, हम आये हैं विश्वास लिए।
शुभ अर्घ्य समर्पित करते हैं, यह भक्त खड़े अरदास लिए।
चलो-चलो रे-2 सभी नर नार, तीर्थ के दर्शन को।
कटते हैं कर्म अपार, चलो रे भाई वंदन को।।1।।

ॐ ह्रीं निर्वाणकल्याणकमण्डित श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

तत्त्वों का सार दिया तुमने, जग को सन्मार्ग दिखाया है।
प्रभु दर्शन करके मन मेरा, गद्गद् होकर हर्षाया है।।
हम भक्त आपके गुण गाकर, यह अनुपम अर्घ्य चढ़ाते हैं।
हे नाथ! आपके चरणों में हम, सादर शीश झुकाते हैं।।2।।
दोहा– महावीर हे वीर! जिन, सन्मति हे अतिवीर!
वर्धमान पावापुरी, से पाए भव तीर।।

ॐ ह्रीं श्री पावापुर सिद्धक्षेत्र से कार्तिक वदी अमावस को श्री वर्द्धमान तीर्थंकरादि व असंख्यात मुनि मोक्ष पधारे तिनके चरणाविन्द में अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतिनाथ का कूँट जहाँ है, कूट वीर का उसके पास।
ध्यान साधना करके पाए, कई मुनीश्वर मुक्ती वास।।
पावापुर के पदम सरोवर, से छत्तीस मुनियों के साथ।
मुक्ती पाए जिनके चरणों, झुका रहे हम अपना माथ।।3।।

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्रादि छत्तीस मुनीश्वरेभ्यो नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा– हुआ नहीं होगा नहीं, महावीर सा वीर।
जयमाला गाते यहाँ, पाने भव का तीर॥

(गीता छन्द)

सिद्धार्थ नृप के पुत्र हैं, महावीर जिन कहलाए हैं।
चयकर प्रभू जी स्वर्ग से, कुण्डलपुरी में आए हैं॥1॥
पाए प्रभू जी गर्भ अन्तिम, मात त्रिशला जानिए।
जिन मात देखे स्वप्न सोलह, नाथ वंशी मानिए॥2॥
शुभ जन्म कल्याणक समय पर, न्हवन मेरू पर किए।
शत् इन्द्र चरणों भक्ति से, नत ढोक चरणों में दिए॥3॥
वर्धमान सन्मति वीर अति, महावीर जिन कहलाए हैं।
केहरि सुलक्षण दाएँ पग में, महावीर जिनवर पाएँ हैं॥4॥
शुभ जाति स्मृति से प्रभू, वैराग्य मन प्रगटाए हैं।
जग भोग ना भाए जिन्हें, संयम 'विशद' अपनाए हैं॥5॥
प्रभु ध्यान कर निज आत्म का, केवल्य ज्ञान जगाए हैं।
कर कर्म घाती नाश जिन, अनन्त चतुष्टय पाए हैं॥6॥

दोहा– ज्ञान ध्यान तप कर प्रभू, कीन्हे कर्म विनाश।
मुक्त हुए संसार से, पाए शिवपुर वास॥

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– पूजा करने के लिए, द्रव्य लाए यह शुद्ध।
सम्यकदर्शन ज्ञान हम, पाएँ चरण विशुद्ध॥

॥इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्॥

समुच्चय जाप्य–ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर निर्वाण क्षेत्रभ्यो नमः।

समुच्चय जयमाला

दोहा– सम्मेदाचल तीर्थ अरु, तीर्थक्षेत्र निर्वाण।
जयमाला गाते विशद, जिनकी यहाँ महान॥
कण-कण पावन जिसका सारा, मंगलमय है तीर्थ हमारा।
श्री सम्मेद शिखर है प्यारा, सब मिलकर बोलो जयकारा॥टेक॥

सब मिल दर्शन करवा जी, भाव से वंदन करवा जी।
यह अनादि है तीर्थ जहाँ पर, मोक्ष गये है बीस जिनेश्वर।
संख्यातीत यहाँ से मुनिवर, मुक्ती पाए कर्म नाशकर।
जन्म मरण से हो छुटकारा, सब मिलकर बोलो जयकारा॥
जो भी वंदन करने जाते, भूत प्रेत उनसे घबड़ाते।
मन वांछित फल प्राणी पाते, उनके सब संकट कट जाते।
अशुभ गति न होय दुबारा, सब मिल...॥
भव्यों को दर्शन मिलते हैं, जीवन के उपवन खिलते हैं।
भाव सहित वंदन करते हैं, चरणों का अर्चन करते हैं॥
पाप मिटे वंदन के द्वारा, सब मिल...॥
सुर नर मुनि गणधर भी आते, अपना सद सौभाग्य जगाते।
सिद्ध क्षेत्र पर ध्यान लगाते, सर्व सिद्धियाँ वह पा जाते॥
गूँजे जैन धर्म का नारा, सब मिल....॥
सिद्ध सुखों के सुर अभिलाषी, जिनकी चिर आकांक्षा प्यासी।
बिखरी छटा जहाँ मनहारी, जीवों को हैं मंगलकारी॥
वातावरण सुखद है सारा, सब मिल...॥
संयम का सौभाग्य जगाते, मानव सकल व्रतों को पाते।
निज आतम का ध्यान लगाते, श्रावक श्रद्धा ज्ञान जगाते।
भव सागर से हो निस्तारा, सब मिल...॥
आओ मिलकर सब जन आओ, वंदन करके पुण्य कमाओ।
जिन सिद्धोंको हम सब ध्याएँ, हम भी सिद्ध स्वयं बन जाएँ॥
नहीं और है कोई चारा, सब मिल...॥
इन्द्र देव ने स्वयं उतरकर, चरण उकेरे हैं पर्वत पर।
अतिशयकारी पुण्य कमाया, जिनकी महिमा को दिखलाया॥
महिमा प्रभु की अपरंपारा, सब मिल...॥
जो यात्री वंदन को आते, त्याग हेतु प्रेरित हो जाते।
पद चिन्हों का वंदन पाते, अपने सारे दोष नशाते॥
मंगलमय जीवन हो सारा, सब मिल...॥
कल-कल बहता शीतल नाला, अतिशयकारी महिमा वाला।
चारों तरफ रहे हरियाली, वायु चलती है मतवाली॥
भक्त बोलते हैं जयकारा, सब मिल...॥

सांवलिया पारस की जय हो, सारे कर्मों का भी क्षय हो।
डोली वाले देते नारे, बोल रहे हैं जय-जयकारे।।
गूंज रहा है पर्वत सारा, सब मिल...॥
चौबिस तीर्थंकर की जय हो, जैन धर्म परिकर की जय हो।
दुखहारी गिरवर की जय हो, श्री सम्मेद शिखर की जय हो॥
मुक्ति पाना लक्ष्य हमारा, सब मिल...॥
आदिनाथ अष्टापद जानो, वासुपूज्य चम्पापुर मानो।
नेमिनाथ गिरनार सिधाएँ, वीर प्रभु पावापुर गाए।।
मोक्ष महल पाए हैं प्यारा, सब मिल...॥

छंद-घत्तानंद

है पूज्य हमारा, पर्वत सारा, सम्मेदाचल तीर्थ महा।
कण-कण है पावन अतिमन भावन, हम पूज रहे हैं नाथ अहा।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेद शिखर सिद्ध क्षेत्रेभ्योऽनर्घ पद प्राप्ताय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा– रज कण पूजें देव नर, भक्तिभाव के साथ।
भव्य भावना से 'विशद', झुका रहे हैं माथ॥

पुष्पांजलिं क्षिपेत्

निर्वाण काण्ड

दोहा– वीतराग जिनके चरण, वन्दन करके आज।
'विशद' काण्ड निर्वाण यह, गाए सकल समाज॥

(शम्भू छंद)

अष्टापद से आदिनाथजी, वासुपूज्य चम्पापुर धाम।
नेमिनाथ गिरनार गिरी से, महावीर पावापुर ग्राम।।1।।
गिरि सम्मेद शिखर से मुक्ती, पाए जिन तीर्थंकर बीस।
भूत भविष्यत के तीर्थंकर, के पद झुका रहे हम शीश।।2।।
मुनि वरदत्त इन्द्र ऋषिवर जी, सायरदत्त हुए गुणवान।
आठ कोटि मुनि नगर तारवर, से पाए हैं पद निर्वाण।।3।।
कोटि बहत्तर और सात मुनि, शम्बु प्रद्युम्न अनिरुद्ध कुमार।
श्री गिरनार गिरि पर जाकर, पाए हैं मुक्ति पद सार।।4।।

रामचन्द्र के सुत लव कुश द्वय, लाड नरेन्द्र आदि गुणवान।
पाँच कोटि मुनि मुक्ती पाए, पावागिरि मुक्ती स्थान।।5।।
द्रविड़ राज औ तीन पाण्डव, आठ कोटि मुनि और महान।
श्री शत्रुञ्जय गिरि के ऊपर, से पद पाए हैं निर्वाण।।6।।
श्री भलभद्र मुक्ति पाए हैं, आठ कोटि मुनियों के साथ।
श्री गजपंथ शिखर है पावन, तिन पद झुका रहे हम साथ।।7।।
राम हनू सुग्रीव नील अरु, गय गवाख्य महानील सुडील।
कोटि निन्यानवे तुंगीगिरि से, मुक्ती पाकर पाए शील।।8।।
नंग कुमार अनंग मुनीश्वर, साड़े पाँच कोटि मुनिराज।
ध्यान लाकर सोनागिरि के, शीश से पाए मुक्ती राज।।9।।
रेवातट से मुक्ती पाए, रावण के सुत आदि कुमार।
साढ़े पाँच कोटि मुनि पाए, कर्म नाश कर भव से पार।।10।।
चक्रवर्ति दो कामदेव दश, आठ कोटि मुनियों के साथ।
कूट सिद्धवर रेवातट को, झुका रहे हम अपना माथ।।11।।
अचलापुर ईशान दिशा में, मेढ़गिरि जानो शुभकार।
साढ़े तीन कोटि मुनिवर जी, पाए हैं भवदधि से पार।।12।।
वंशस्थल के पश्चिम दिश में, कुन्थलगिरि है तीर्थ स्थान।
कुलभूषण अरु देशभूषण जी, पाए वहाँ से पद निर्वाण।।13।।
मुनी पाँच सौ जसरथ नृप सुत, कलिंग देश में हुए महान।
कोटि शिला से कोटि मुनीश्वर, पाए अनुपम पद निर्वाण।।14।।
समवशरण में पार्श्व प्रभु के, वरदत्तादी पंच ऋशीष।
मोक्ष गये रेसिन्दी गिरि से, तिनको झुका रहे हम शीश।।15।।
जो-जो मुनि मुक्ती पाए हैं, भरत क्षेत्र के जिस स्थान।
तीन योग से वन्दन मेरा, हो जयवन्त भूमि निर्वाण।।16
बड़वानी वर नगर पास में, दक्षिण दिशा रही मनहार।
चूलगिरि से इन्द्रजीत मुनि, कुम्भकरण पाए भव पार।।17।।
पावागिरि के पास चेलना, नदी शोभती अपरम्पार।
मुनिवर चार स्वर्ण भद्रादि, शिवपद का पाए हैं सार।।18।।
फलहोड़ी के पश्चिम दिश में, द्रोणागिरि है शिखर महान।
गुरुदत्तादि अन्य मुनीश्वर, वहाँ से पाए पद निर्वाण।।19।।
बाली और महाबाली मुनि, नाग कुमार भी उनके साथ।
अष्टापद से मुक्ती पाए, उनको झुका रहे हम माथ।।20।।

पार्श्वनाथ जिनवर नागद्रह में, अभिनंदन मंगलपुर धाम।
पट्टन आशारम्य में श्री जिन, मुनिसुव्रत के चरण प्रणाम॥21॥
पोदनपुर में बाहुबलिजी, शांति कुन्थु अर गजपुर ग्राम।
पार्श्व सुपारस जन्म लिए वह, नगर बनारस पूज्य महान॥22॥
मथुरा नगर में वीर प्रभु जी, अहिक्षेत्र में प्रभु जी पारसनाथ।
जम्बू वन में जम्बू मुनि के, चरणों झुका रहे हम माथ॥23॥
पञ्च कल्याणक श्रेष्ठ भूमियाँ, मध्यलोक में रही महान।
मन-वच-तन की शुद्धीपूर्वक, नमन सहित करते गुणगान॥24॥
अर्गल देव श्रीवर नगरी, निकट कुण्डली रहे जिनेश।
शिरपुर में श्री पार्श्वनाथ जी, लोहागिरि शंख देव विशेष॥25॥
सवा पाँच सौ धनुष तुंग तन, केसर कुसुम वृष्टि कर देव।
गोमटेश के पद में वन्दन, शिव सुख पाने करें सदैव॥26॥
अतिशय क्षेत्र हैं अतिशयकारी, तथा रहे निर्वाण स्थान।
शीश झुकाकर वन्दन मेरा, सब तीर्थों को रहा महान॥27॥
तीन काल निर्वाण काण्ड यह, भाव शुद्धि से पढ़ें महान।
नर सुरेन्द्र के भोग प्राप्त कर, 'विशद' प्राप्त करते निर्वाण॥28॥

(अञ्चलिका)

भगवन् परिनिर्वाण भक्ति का, किया यहाँ पर कायोत्सर्ग।
आलोचन करने की इच्छा, करना चाह रहा उत्सर्ग॥
इस अवसर्पिणी में चतुर्थ शुभ, काल बताए अन्तिम शेष।
तीन वर्ष अरु आठ माह इक, पक्ष रहा जिसमें अवशेष॥
कार्तिक माह कृष्ण चौदश की, रात्रि का आया जब अन्त।
ऊषाकाल अमावस की शुभ, स्वाति नक्षत्र में जिन अर्हंत॥
वर्धमान जिन महति महावीर, सिद्ध सुपद पाए भगवान।
तीन लोक के भावन व्यन्तर, ज्योतिष कल्पवासी सुर आन॥
निज परिवार सहित चउ विध सुर, दिव्य नीर ले गंध महान।
अक्षय दिव्य पुष्प अरु दीपक, धूप और फल लिए प्रधान॥
अर्चा पूजा वन्दन करके, नितप्रति करते चरण नमन।
परि निर्वाण महा कल्याणक, का नित करते हैं अर्चन॥
मैं भी यही मोक्ष कल्याणक, का करता हूँ नित पूजन।
वन्दन नमस्कार कर करना, चाहूँ अपने कर्म शमन॥
दु:ख कर्म क्षय होवें मेरे, बोधि लाभ हो सुगति गमन।
जिन गुण की सम्पत्ति पाऊँ, 'विशद' समाधि सहित मरण॥

निर्वाण क्षेत्र सम्मेदशिखर की आरती

करूँ आरती तीर्थराज की, भव तारक पावन जहाज की।
तीर्थंकर जिनवर गणधर की, अगणित मुक्त हुए मुनिवर की॥
करूँ आरती.....
भव-भव के दु:ख मैटनहारी, बनते प्राणी संयमधारी।
तीर्थराज है मंगलकारी, जिसकी महिमा जग से न्यारी॥
करूँ आरती.....
अष्टापद में आदि नाथ की, गिरनारी पर नेमिनाथ की।
चम्पापुर में वासुपूज्य की, पावापुर में वीर नाथ की॥
करूँ आरती.....
ज्ञान कूट पर कुन्थुनाथ की, मित्र कूट पर नमीनाथ की।
नाट्य कूट पर अरहनाथ की, संवर कूट पर मल्लिनाथ की॥
करूँ आरती.....
संकुल कूट पर श्री श्रेयांस की, सुप्रभ कूट पर पुष्पदंत की।
मोहन कूट पर प्रद्म की, निर्जर कूट पर मुनिसुव्रत की॥
करूँ आरती.....
ललित कूट पर चन्द्र प्रभु की, विद्युत कूट पर शीतल जिन की।
कूट स्वयंभू श्री अनंत की, धवल कूट पर संभव जिन की॥
करूँ आरती.....
कूट सुदत्त पर धर्मनाथ की, आनंद कूट पर अभिनंदन की।
अविचल कूट पर सुमतिनाथ की, शांति कूट पर शांतिनाथ की॥
करूँ आरती.....
कूट प्रभास पर श्री सुपार्श्व की, अरु सुबीर पर विमलनाथ की।
सिद्ध कूट पर अजितनाथ की, स्वर्णभद्र पर पार्श्वनाथ की॥
करूँ आरती.....
चरण कमल में श्री जिनवर की, दिव्य दीप से सूर्य प्रखर की।
'विशद' भाव से श्री गिरवर की, सिद्ध क्षेत्र जो है उन हर की॥
करूँ आरती.....
अविचल कूट पे प्राणी जाते, सुमतिनाथ पद पूज रचाते।

श्री सम्मेदशिखर चालीसा

दोहा– शाश्वत तीरथराज है, शिखर सम्मेद महान्।
भक्ति भाव से कर रहे, यहाँ विशद गुणगान॥
नव कोटी से देव नव, का करते हम ध्यान।
जाकर तीरथ राज से, पाएँ हम निर्वाण॥

(चौपाई)

शाश्वत तीर्थराज शुभकारी, गिरि सम्मेद शिखर मनहारी।
कण कण पावन जिसका पाया, मुनियों ने जहाँ ध्यान लगाया॥
संत यहाँ आकर तप कीन्हें, निज चेतन में चित्त जो दीन्हें।
सौ सौ इन्द्र यहाँ पर आते, प्रभु के पद में शीश झुकाते॥
हर युग के तीर्थंकर आते, मुक्तिवधू को यहाँ से पाते।
कालदोष के कारण जानो, इस युग का अन्तर पहिचानो॥
बीस जिनेश्वर यहाँ पे आए, गिरि सम्मेद से मुक्ती पाए।
इन्द्रराज स्वर्गों से आए, रत्न कांकिणी साथ में लाए॥
चरण उकेरे जिन के भाई, जिनकी महिमा है सुखदायी।
प्रथम टोंक गणधर की जानो, चौबिस चरण बने शुभ मानो॥
द्वितीय कूट ज्ञानधर भाई, कुन्थुनाथ जिनवर की गाई।
कूट मित्रधर नमि जिन पाए, कर्म नाश कर मोक्ष सिधाए॥
नाटककूट रही मनहारी, अरहनाथ की मंगलकारी।
संबलकूट की महिमा गाते, मल्लिनाथ जहाँ पूजे जाते॥
संकुल कूट श्रेष्ठ कहलाए, श्री श्रेयांस मुक्ती पद पाए।
सुप्रभ कूट की महिमा न्यारी, पुष्पदंत जिन की मनहारी॥
मोहन कूट पद्म प्रभु पाए, जन-जन के मन को जो भाए।
पूज्य कूट निर्जर फिर आए, मुनिसुव्रत जी शिवपद पाए॥
ललितकूट चन्द्रप्रभु स्वामी, हुए यहाँ से अन्तर्यामी।
विद्युतवर है कूट निराली, शीतल जिन की महिमा शाली॥
कूट स्वयंप्रभ आगे आए, जिन अनन्त की महिमा गाए।
धवलकूट फिर आगे जानो, संभव जिन की जो पहिचानो॥
आनन्द कूट पे बन्दर आते, अभिनन्दन जिन के गुण गाते।
कूट सुदत्त श्रेष्ठ शुभ गाते, धर्मनाथ जिन पूजे जाते॥

अविचल कूट पे प्राणी जाते, सुमतिनाथ पद पूज रचाते।
कुन्दकूट पर प्राणी सारे, शान्तिनाथ पद चिह्न पखारे॥
कूट सुवीर पे जो भी जाए, विमलनाथ पद दर्शन पाए॥
सिद्धकूट पर सुर-नर आते, अजितनाथ पद शीश झुकाते।
कूट स्वर्णप्रभ मंगलकारी, पार्श्वप्रभु का है मनहारी॥
पक्षी भी तन्मय हो जाते मानो प्रभु की महिमा गाते।
मोक्ष मार्ग दर्शाने वाले, जीवन सफल बनाने वाले॥
दूर-दूर से श्रावक आते, शुद्ध भाव से महिमा गाते।
नंगे पैरों चढ़ते जाते, प्रभु के पद में ध्यान लगाते॥
भाँति-भाँति की भजनावलियाँ, वीतराग भावों की कलियाँ।
पुण्यवान ही दर्शन पावें, नरक पशु गति बंध नशावें॥
तीर्थ वन्दना करने जावें, कर्मों के बन्धन कट जावें।
देव वन्दना करने आवें, चमत्कार कई इक दिखलावें॥
भूले को भी राह दिखावें, दुखियों के सब दुःख मिटावें।
कभी स्वान बनकर आ जाते, डोली वाले बनकर आते॥
गिरवर तुमरी बलिहारी, भाव सहित गाते हैं सारी।
तुमरे गुण सारा जग गाए, सूर्य चाँद महिमा दिखलाए॥
सन्त मुनि अर्हन्त निराले, शिव पदवी को पाने वाले।
गिरि सम्मेद शिखर की महिमा, बतलाने आये हैं गरिमा॥
तुम हो सबके तारणहारे, दीन हीन सब पापी तारे।
आप स्वर्ग मुक्ती के दाता, ज्ञानी अज्ञानी के त्राता॥
तुमरी धूल लगाकर माथे, भाव सहित तव गाथा गाते।
मेरी पार लगाओ नैया, भव-सिन्धु के आप खिवैया॥
हमको मुक्ती मार्ग दिखाओ, जन्म मरण से मुक्ति दिलाओ।
सेवक बनकर के हम आए, पद में सादर शीश झुकाए॥

दोहा– 'विशद' भाव से जो पढ़े, चालीसा चालीसा।
सुख-शांती पावे अतुल, बने श्री का ईश॥
महिमा शिखर सम्मेद की, गाएँ मंगलकार।
उसी तीर्थ से ही स्वयं, पावे मुक्ती द्वार॥

जाप–ॐ ह्रीं क्लीं श्रीं अर्हं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर निर्वाण क्षेत्रेभ्यो नमः।

आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज की आरती

(तर्ज:–माई री माई मुंडरे पर तेरे बोल रहा कागा...)

जय-जय गुरुवर भक्त पुकारें, आरति मंगल गावें।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे॥
गुरुवर के चरणों में नमन्....4 मुनिवर के....
ग्राम कुपी में जन्म लिया है, धन्य है इन्दर माता।
नाथूराम जी पिता आपके, छोड़ा जग से नाता॥
सत्य अहिंसा महाव्रती की...2, महिमा कही न जाये।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे॥
गुरुवर के चरणों में नमन्....4 मुनिवर के....
सूरज सा है तेज आपका, नाम रमेश बताया।
बीता बचपन आयी जवानी, जग से मन अकुलाया॥
जग की माया को लखकर के....2, मन वैराग्य समावे।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे॥
गुरुवर के चरणों में नमन्...4 मुनिवर के....
जैन मुनि की दीक्षा लेकर, करते निज उद्धारा।
विशद सिंधु है नाम आपका, विशद मोक्ष का द्वारा॥
गुरु की भक्ति करने वाला...2, उभय लोक सुख पावे।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे॥
गुरुवर के चरणों में नमन्....4 मुनिवर के....
धन्य है जीवन, धन्य है तन-मन, गुरुवर यहाँ पधारे।
सगे स्वजन सब छोड़ दिये हैं, आतम रहे निहारे॥
आशीर्वाद हमें दो स्वामी....2, अनुगामी बन जायें।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे॥
गुरुवर के चरणों में नमन्...4 मुनिवर के...जय...जय॥

रचयिता : **श्रीमती इन्दुमती गुप्ता**, श्योपुर

आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज की आरती

(तर्ज:–इह विधि मंगल आरती कीजे....)

बाजे छम-छम-छम छमा छम बाजे घूंघरू-2
हाथों में दीपक लेकर आरती करूँ-2॥ टेक॥

कुपी ग्राम में जन्म लिया हैं, इन्दर माँ को धन्य किया हैं
तो इसलिये, इसलिये गुरुवर तेरी आरती करूँ-2। हाथों में...

(1) बाजे छम-छम-छम...

गुरुवर आप है बालब्रह्मचारी, भरी जवानी में दीक्षाधारी
तो इसलिये, इसलिये गुरुवर तेरी आरती करूँ-2। हाथों में...

(2) बाजे छम-छम-छम...

विराग सागर जी से दीक्षा पाई, भरत सागर जी के तुम अनुयायीं
तो इसलिये, इसलिये गुरुवर तेरी आरती करूँ-2। हाथों में...

(3) बाजे छम-छम-छम...

विशद सागर जी गुरुवर हमारे, छत्तीस मूलगुणों को धारे
तो इसलिये, इसलिये गुरुवर तेरी आरती करूँ-2। हाथों में...

(4) बाजे छम-छम-छम...

संघ सहित गुरु आप पधारे, हम सबके यहाँ मन हर्षायें
तो इसलिये, इसलिये गुरुवर तेरी आरती करूँ-2। हाथों में...

(5) बाजे छम-छम-छम...

प.पू. साहित्य रत्नाकर आचार्य श्री 108 विशदसागर जी महाराज द्वारा रचित पूजन महामंडल विधान साहित्य सूची

1. श्री आदिनाथ महामण्डल विधान
2. श्री अजितनाथ महामण्डल विधान
3. श्री संभवनाथ महामण्डल विधान
4. श्री अभिनन्दननाथ महामण्डल विधान
5. श्री सुमतिनाथ महामण्डल विधान
6. श्री पद्मप्रभ महामण्डल विधान
7. श्री सुपार्श्वनाथ महामण्डल विधान
8. श्री चन्द्रप्रभू महामण्डल विधान
9. श्री पुष्पदंत महामण्डल विधान
10. श्री शीतलनाथ महामण्डल विधान
11. श्री श्रेयांसनाथ महामण्डल विधान
12. श्री वासुपूज्य महामण्डल विधान
13. श्री विमलनाथ महामण्डल विधान
14. श्री अनन्तनाथ महामण्डल विधान
15. श्री धर्मनाथ जी महामण्डल विधान
16. श्री शांतिनाथ महामण्डल विधान
17. श्री कुंथुनाथ महामण्डल विधान
18. श्री अरहनाथ महामण्डल विधान
19. श्री मल्लिनाथ महामण्डल विधान
20. श्री मुनिसुव्रतनाथ महामण्डल विधान
21. श्री नमिनाथ महामण्डल विधान
22. श्री नेमिनाथ महामण्डल विधान
23. श्री पार्श्वनाथ महामण्डल विधान
24. श्री महावीर महामण्डल विधान
25. श्री पंचपरमेष्ठी विधान
26. श्री णमोकार मंत्र महामण्डल विधान
27. श्री सर्वसिद्धीप्रदायक श्री भक्तामर महामण्डल विधान
28. श्री सम्मेद शिखर विधान
29. श्री श्रुत स्कंध विधान
30. श्री यागमण्डल विधान
31. श्री जिनबिम्ब पंचकल्याणक विधान
32. श्री त्रिकालवर्ती तीर्थंकर विधान
33. श्री कल्याणकारी कल्याण मंदिर विधान
34. लघु समवशरण विधान
35. सर्वदोष प्रायश्चित विधान
36. लघु पंचमेरू विधान
37. लघु नंदीश्वर महामण्डल विधान
38. श्री चंवलेश्वर पार्श्वनाथ विधान
39. श्री जिनगुण सम्पतिविधान
40. एकीभाव स्तोत्र विधान
41. श्री ऋषि मण्डल विधान
42. श्री विषापहार स्तोत्र महामण्डल विधान
43. श्री भक्तामर महामण्डल विधान
44. वास्तु महामण्डल विधान
45. लघु नवग्रह शांति महामण्डल विधान
46. सूर्य अरिष्टनिवारक श्री पद्मप्रभ विधान
47. श्री चौंसठ ऋद्धि महामण्डल विधान
48. श्री कर्मदहन महामण्डल विधान
49. श्री चौबीस तीर्थंकर महामण्डल विधान
50. श्री नवदेवता महामण्डल विधान
51. वृहद ऋषि महामण्डल विधान
52. श्री नवग्रह शांति महामण्डल विधान
53. कर्मजयी श्री पंच बालयति विधान
54. श्री तत्वार्थसूत्र महामण्डल विधान
55. श्री सहस्त्रनाम महामण्डल विधान
56. वृहद नंदीश्वर महामण्डल विधान
57. महामृत्युंजय महामण्डल विधान
59. श्री दशलक्षण धर्म विधान
60. श्री रत्नत्रय आराधना विधान
61. श्री सिद्धचक्र महामण्डल विधान
62. अभिनव वृहद कल्पतरू विधान
63. वृहद श्री समवशरण मण्डल विधान
64. श्री चारित्र लब्धि महामण्डल विधान
65. श्री अनन्तव्रत महामण्डल विधान
66. कालसर्पयोग निवारक मण्डल विधान
67. श्री आचार्य परमेष्ठी महामण्डल विधान
68. श्री सम्मेद शिखर कूटपूजन विधान
69. त्रिविधान संग्रह–1
70. त्रि विधान संग्रह
71. पंच विधान संग्रह
72. श्री इन्द्रध्वज महामण्डल विधान
73. लघु धर्म चक्र विधान
74. अर्हत महिमा विधान
75. सरस्वती विधान
76. विशद महाअर्चना विधान
77. विधान संग्रह (प्रथम)
78. विधान संग्रह (द्वितीय)
79. कल्याण मंदिर विधान (बड़ा गांव)
80. श्री अहिच्छत्र पार्श्वनाथ विधान
81. विदेह क्षेत्र महामण्डल विधान
82. अर्हत नाम विधान
83. सम्यक् अराधना विधान
84. श्री सिद्ध परमेष्ठी विधान
85. लघु नवदेवता विधान
86. लघु मृत्युँजय विधान
87. शान्ति प्रदायक शान्तिनाथ विधान
88. मृत्युञ्जय विधान
89. लघु जम्बू द्वीप विधान
90. चारित्र शुद्धिव्रत विधान
91. क्षायिक नवलब्धि विधान
92. लघु स्वयंभू स्तोत्र विधान
93. श्री गोम्मटेश बाहुबली विधान
94. वृहद निर्वाण क्षेत्र विधान
95. एक सौ सत्तर तीर्थंकर विधान
96. तीन लोक विधान
97. कल्पद्रुम विधान
98. श्री चौबीसी निर्वाण क्षेत्र विधान
99. श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर विधान
100. श्री सहस्त्रनाम विधान (लघु)
101. श्री त्रैलोक्य मण्डल विधान (लघु)
102. श्री तत्वार्थ सूत्र विधान (लघु)
103. पुण्यास्त्रव विधान
104. सप्तऋषि विधान
105. तेरहद्वीप विधान
106. श्री शान्ति,कुन्थु, अरहनाथ मण्डल विधान
107. श्रावकव्रत दोष प्रायश्चित विधान
108. तीर्थंकर पंचकल्याणक तीर्थ विधान
109. सम्यक् दर्शन विधान
110. श्रुतज्ञान व्रत विधान
111. ज्ञान पच्चीसी व्रत विधान
112. तीर्थंकर पंचकल्याणक तिथि विधान
113. विजय श्री विधान
114. चारित्र शुद्धि विधान
115. श्री आदिनाथ पंचकल्याणक विधान
116. श्री आदिनाथ विधान (रानीला)
117. श्री शांतिनाथ विधान (सामोद)
118. दिव्यध्वनि विधान
119. षट्खण्डागम विधान
120. श्री पार्श्वनाथ पंचकल्याणक विधान
121. विशद पञ्चागम संग्रह
122. जिन गुरु भक्ती संग्रह
123. धर्म की दस लहरें
124. स्तुति स्तोत्र संग्रह
125. विराग वंदन
126. बिन खिले मुरझा गए
127. जिंदगी क्या है
128. धर्म प्रवाह
129. भक्ती के फूल
130. विशद श्रमण चर्या
131. रत्नकरण्ड श्रावकाचार चौपाई
132. इष्टोपदेश चौपाई
133. द्रव्य संग्रह चौपाई
134. लघु द्रव्य संग्रह चौपाई
135. समाधितन्त्र चौपाई
136. शुभषितरत्नावली
137. संस्कार विज्ञान
138. बाल विज्ञान भाग–3
139. नैतिक शिक्षा भाग–1, 2, 3
140. विशद स्तोत्र संग्रह
141. भगवती आराधना
142. चिंतवन सरोवर भाग–1
143. चिंतवन सरोवर भाग–2
144. जीवन की मन:स्थितियाँ
145. आराध्य अर्चना
146. आराधना के सुमन
147. मूक उपदेश भाग–1
148. मूक उपदेश भाग–2
149. विशद प्रवचन पर्व
150. विशद ज्ञान ज्योति
151. जरा सोचो तो
152. विशद भक्ती पीयूष
153. विजोलिया तीर्थपूजन आरती चालीसा संग्रह
154. विराटनगर तीर्थपूजन आरती चालीसा संग्रह

नोट : उपरोक्त 120 विधानों में से अधिकाधिक विधान कर अथाह पुण्याभव करें। –मुनि विशालसागर